

जैनाचार्यरचित शुभाशुभ वर्ष जानने का अपूर्व ग्रंथ.

मेघमहोदय-वर्षप्रबोध.

कक्षा—

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद समेत)

यदि आपको वर्षों का और कीमती बरसेगी. मुकाल होगा या दुष्काल ये जानना हो तथा समस्त प्रकार के धान्य, मोता चाटी आदि धान्य, रुई कपडा आदि वस्तु ये मईगा होगा या सस्ता इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की उत्कंठा हो तो इसको अवश्य मगवा कर पढ़िये ।

पृष्ठ ४२५ पकी जीन्द की कीमत ४) रूपिया पोस्ट चार्ज अलग ।

मिलने का पता—

पं० भगवानदास जैन.

मेटिया जैन प्रिंटिंग प्रेस.

सीकानेर. (राजपूताना)

इस किताब छपवाने के लिए, जिन२
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

- १५१ किताब फलोंदी-निधामों सुगनमहृजी गोलेश्वर
की धर्मपत्नी राधाबाई की तरफ से भेंट ।
- १६१ किताब पोखनेर-निधामों मेंमकरगाजी भाषण
सुता की तरफ से भेंट ।
- ५१ किताब कोटा के श्रीमंथ तरफ से भेंट ।
- ५१ किताब लोहाबट निधामों लृंगाश आशारामजी
समोदानजी की तरफ से भेंट ।
- ४२१ किताब पोखनेर के आषक आविषयों की
तरफ से भेंट ।

इस पुस्तक के लेखक श्री रतनलालजी मिसरूप

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप

कोयरी की गवाह

पोखनेर (राजपूताना)

जनायापंगिन शुभाशुभ धरि जाननेका अपूर्व ग्रन्थ.

मेघमहोदय-चर्पप्रबोध.

कथा -

श्रीमन्महासहोपाध्याय श्रीमेघविजयगणि.

(हिन्दी अनुवाद समेत)

यदि आपको कथा और कौतूहली बान्धवी. मकाल
होगा या दुष्काल में जानना हो तथा समस्त प्रकार के धान्य,
मोना चादी आदि धान, लूटे कपड़ा आदि वस्तु में महंगा
होगा या सन्ना इत्यादि बहुत उपयोगी विषयों को जानने की
उत्कण्ठा हो तो इसको अवश्य मगवा कर पढ़िये ।

पृष्ठ ४२५ पकी जील्ड भी कीजल ४) रूपिका पोस्ट
मार्च बलग ।

मिलने का पता—

पं० भगवानदास जैन.

मेरिया जैन प्रिंटिंग प्रेस.

शोकानेर. (गजपूताना)

इस किताब छपवाने के लिए, जिन
महाशयोंने सहायता दी है
उनकी शुभनामावली.

१५. किताब फलोंदी-निधामा सुगनमहर्जा गोलेश्या
की धर्मपत्नी राधाबाई की तरफ से भेंट ।
१६. किताब पोक्कानेर-निधामा मंगमकरगर्जा साधन-
सुखा की तरफ से भेंट ।
१७. किताब कोटा के श्रीमंथ तरफ से भेंट ।
१८. किताब लोहाबट निधामा लुंगीया आशारामजी
सर्मादानजी की तरफ से भेंट ।
१९. किताब पोक्कानेर के आवक श्राविकाओं की
तरफ से भेंट ।

इस पुस्तक मिलने का ठिकाना—

श्रीयुत रतनलालजी मिसरूप

काचगे की गवाड़

पोक्कानेर (राजपूताना)

प्रस्तावना .

त्रिपयर जैन ग्रन्थुओं!

यह " पूर्णक्षेमवद्भक्तिलाम " नामक छोटासा ग्रन्थ प्रकाशित कर भेंट रूपमें आपकी सेवा में उपस्थित किया जाता है, पूर्ण आशा है कि इसका अयलोकन तथा नैतिक क्रिया आदि विषय में सदुपयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करेंगे ।

चिरकाल पूर्व इस ग्रंथ का संग्रह कर श्रीमान् मान्यवर, गुरुवर्य प्रातःस्मरणीय श्री १०० श्री क्षेममागरजी महाराज ने परम कृपा कर मुझे इसे इसलिये माँपा था कि मैं इसका प्रकाशन कर जैन समाज की सेवामें उपस्थित करूँ। मैं भी अपने ऊपर स्थित भार से उक्तण होनेके लिए चिर समय तक इच्छा और चेष्टा करता रहा, परन्तु दैवयोग से अब तक अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सका ।

क्षेत्रस्पर्शना के अनुसार संवत् १९८२ का मेरा चातुर्मास्य श्री धोकानेर नगरमें हुआ और यहाँ के फनि-

पप सुयोग्य भर्मशील श्रावक वर्ग को यह पान किसी प्रकार बिदिन हो गई कि हम सब लोगों के लिए अत्युपयोगी तथा जैन समाज के लिये परम लाभदायक ग्रन्थ प्रकाशनार्थ प्रभुन है, फिर तो क्या था, अधिकांश श्रावक मण्डल हम के प्रकाशन के लिये अनुरोध करने लगा. ऐसा होने पर मैंने भी यह निश्चय कर लिया कि अब इसकी शोध हो प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये, हम निश्चय के कर लेने पर भी मैं अपना संकोचशील प्रकृति के कारण एतदर्थ सहायता प्राप्ति के विषय में कुछ करने सुनने में सद्बोध ही करता रहा. अन्तः फिर भी कुछ दिनों तक असमंजसमें ही पड़ा रहा तथा श्रावक वर्ग से एतदर्थ ही ही कर रहा रहा, अन्ततः कनिष्प भर्मशील श्रावक जनों ने स्वयमेव हम कार्य को अपने हाथ में ले कर इस के लिये उद्यम करना प्रारंभ किया, यम ऐसा होते ही कार्य का आरंभ हो गया और केवल गरीबों से नहीं किन्तु पाठर में भी सहायता प्राप्त होने लगी, प्रति फल यह हुआ कि लगभग पांच मास में ही ग्रन्थ मुद्रित हो कर नैपथ्य हो गया और मैं इसे आपकी सेवा में उपस्थित कर अपने कर्त्तव्य का पालन करने में समर्थ हो सका।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में जिन २ महानुभाव सज्जनों तथा बाइयों ने आर्थिक सहायता प्रदान कर अपनी धर्मशीलता का परिचय दिया है उनको इस धर्म कार्य में योग देने के हेतु धन्यवाद है, उनकी नामावली भी ज्ञानार्थ पहले प्रकाशित की गई है ।

इस ग्रन्थ में—देवबंदन, गुरुबंदन, सामायिक विधि, रायसी देवसी प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, गुरुधर कृत स्तवन, अष्टरु, धुइयां, वासक्षेप पूजा, नवपद् ओली विधि, प्रत्याख्यान पारणविधि, चौबीस महाराज के १५० कल्पाणक तथा बीस विहरमाणजी के नाम, इत्यादि अनेक उपयोगी विषयों का संग्रह है, जिनकी उपयोगिता का निश्चय पाठक जन अवलोकनके द्वारा स्वयमेव कर सकेंगे ।

मेरा विचार यह भा था कि—ग्रन्थ के अन्त में आचार्योंके निमित्त नोति और वैराग्य के उपदेशदायक कतिपय उत्तमोत्तम श्लोकों का भी अर्थसहित संग्रह कर संयोजन किया जाता कि जिससे गृहस्थ भ्रातृकों को नैतिक क्रिया के ग्रन्थ के द्वारा ही उक्त विषय के उत्तमोत्तम श्लोकोंका भी अभ्यास होकर लाभ पहुँचता; परन्तु पुस्तकप्रकाशन की शीघ्रता आदि कारणों से ऐसा नहीं हो सका, अस्तु- आशा है कि

किसी अन्य उपयोगी पुस्तक के साथ में एसा करनेका शुभायसर शीघ्र ही प्राप्त होगा ।

अन्त में इस कार्य में योगदाता सज्जनों का तथा पालीताना निधामी पं० भगवानद्राम जैन ने इसका मूफ. देखने में परिश्रम लिया है इसलिये उस को भी धन्यवाद प्रदान कर पाठकवर्ग से मेरा निवेदन है कि ग्रन्थ में लेखन, शोधन और मुद्रण आदि के द्वारा जो २ शुटियाँ रही हो उनका संगोधन कर तथा ग्रन्थ का अयत्नांकन और मनुष्य-पयोग कर आप मेरे परिश्रम को सफल करें । निम्न-धिक विज्ञेपु.

निवेदक—

वीर संवत् २४२२ }
द्वितीय वैश शुक्ल १५ }

मुनि बल्लभसागर,
बीकानेर.

विषयानुक्रमणिका.

| संघर. | विषय. | पृष्ठ. |
|-------|-----------------------------------|--------|
| १ | देववंदन विधि | १ |
| २ | गुरुवंदनविधि | ११ |
| ३ | सामायिक लेने की विधि | १२ |
| ४ | सामायिक पारने की विधि | १८ |
| ५ | राईप्रतिश्रमणविधि | १६ |
| ६ | संध्यासामायिकविधि | २७ |
| ७ | देवसिपप्रतिश्रमणविधि | ३२ |
| ८ | जिनकुशलसूरिजी महाराजका स्तवन | १०३ |
| ९ | पञ्चखाणविधि | २०४ |
| १० | श्रीसद्गुरुगुणाष्टक | १११ |
| ११ | श्रीकुशलसूर्यष्टकम् | ११३ |
| १२ | श्रीगीतमदेव स्तवन | ११५ |
| १३ | श्रीगुरुगुण स्तवन | ११६ |
| १४ | जन्ममहोत्सव स्तवन | ११७ |
| १५ | श्रीपार्श्वप्रभु स्तवन | ११७ |
| १६ | श्रीनेमिनाथस्वामी स्तवन | ११८ |
| १७ | अजितनाथस्वामी स्तवन | १२० |
| १८ | श्रीपार्श्वजिन स्तवन | १२१ |

| | | |
|----|--|-----|
| १६ | लघुशांति स्तवन | १२१ |
| २० | श्री गौरीपार्श्वजिनघृद्धस्तवन (यार्गी ब्राम्हाद्यादिनी) | १२३ |
| २१ | श्रीगौरीमत्स्यार्मी का छंद | १३० |
| २२ | देसायगामिकपद्यख्यानलेनेकीविधि | १३१ |
| २३ | देसायगामिकपद्यख्यानवारने की- विधि | १३४ |
| २४ | यामशेष पूजा | १३७ |
| २५ | नवपद के नव वैराग्यसंदन, नव स्तवन मथा नव भुई | १४१ |
| २६ | नवपदघृद्ध स्तवन | १४४ |
| २७ | नवपद स्तुति | १४७ |
| २८ | नवपद वैराग्यसंदन | १५० |
| २९ | नवपद स्तुति | १५६ |
| ३० | छादश आर्यगुण | १६० |
| ३१ | सिद्ध अष्टगुण | १६१ |
| ३२ | आचार्यका छर्मासगुण | १६२ |
| ३३ | उपाध्याय पक्षासगुण | १६४ |
| ३४ | स्वामी के सत्पार्यासगुण | १६७ |
| ३५ | सम्पत्तय के सत्सुख भेद | १६९ |
| ३६ | ज्ञानपद के सत्सुख भेद | १७० |

| | | | |
|----|--|--------|-----|
| १७ | चारिन्द्रपद के ७० भेद | ... | १७२ |
| ३८ | तपपद के पचास भेद | ... | १७६ |
| ३९ | चोबीस जिन के १५० कल्याणक (पंचकल्याणक टीप) | ... | १७८ |
| ४० | दीपमाला को गुणनो | ... | १८६ |
| ४१ | बीसविहरनाम के नाम | | १८६ |
| ४२ | चारसाश्वता जिनवर के नाम | | १८६ |
| ४३ | मेरी भावना | | १८७ |
| ४४ | घारह भावना | | १८८ |
| ४५ | आठ घुई से देवचंदन विधि | ... | १९१ |
| ४६ | चौदह नियमकी विधि | | २०१ |
| ४७ | आषकोके प्रत्याख्यान के ४९ भांगा | ... | २०७ |
| ४८ | आराधना का स्तवन | | २११ |
| ४९ | पंचमी का छोटा स्तवन | | २२२ |
| ५० | ग्यारस का स्तवन | | २२२ |
| ५१ | श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन | ... | २२४ |
| ५२ | श्री सीमंथरस्वामी का स्तवन | ... | २२५ |
| ५३ | पर्युषण की स्तुति | | २२८ |
| ५४ | भगवंत के अंगपूजन का दृष्टा | ... | २२८ |
| ५५ | पद्मायनी आराधना | | २२९ |
| ५६ | आषक का तीन मनोरथ | | २३३ |

| | | |
|----|--|-----|
| ५७ | सूक्तक विचार | २३४ |
| ५८ | ऋतुबन्धो ग्रीसंबंधी सूक्तक विचार | २३७ |
| ५९ | इषीस जातक धोषण पार्णी ... | २३९ |
| ६० | षाधीस अभक्ष के नाम ... | २३९ |
| ६१ | तपागच्छीय राहप्रतिक्रमणविधि ... | २४० |
| ६२ | जगन्निन्तामणि धित्पर्वद्वन ... | २४१ |
| ६३ | भरहेसर की सज्जाय ... | २४२ |
| ६४ | तीर्थव्यंजना ... | २४२ |
| ६५ | तपागच्छीय देवमिष प्रमिश्रमण विधि | २४८ |
| ६६ | दीपमाला की स्तुति | २५१ |
| ६७ | देवपन्द्रजी मृत स्नात्रपूजा .. | २५६ |
| ६८ | अष्टप्रकारीपूजा अर्घ्य समीप ... | २६३ |



द्वितीय वि भा १०००

। अथ कर्त्तव्य ।

१००० अथ कर्त्तव्य १०००

पुण्यसद कर्मिणः । विद्वान्मन्त्रिणः । अथर्ववेद

सामान्य वि भा १०००



धीपञ्चरत्नमेष्टिभ्यो नमः ।

धीजिनदल-कुङ्कुल-गुरुभ्यो नमः ।

श्रीदेव-गुरु-धर्म-वन्दनविधिः ।

प्रथम पाठः ।

किसी स्थान में श्रीदेव-गुरु-धर्म भक्त दो धारक रहते थे, दोनों समे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचन्द्र और छोटे भाई का नाम विनयचन्द्र था, दोनों भाई सार्धक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई भक्त्यन्त ही विवेकचन्द्र था, तथा छोटा भाई परम विनयमयन था, बड़ा भाई विवेकचन्द्र प्रतिदिन श्री श्रीदेव गुरु-धर्म वन्दनत्रिपा को विशुद्ध भाव से किया करता था, किन्तु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होनेके कारण उक्त त्रिपा से अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त त्रिपा के गौरव और लाभको नहीं समझता था अतएव बड़े भाई विवेकचन्द्र को यह ईजा थी कि मेरे गजान मेरा छोटा भाई भी उक्त त्रिपा के महारा और लाभको समझे, तथा प्रतिदिन उमें अत्यावश्यक जान कर पूजा करे, अतएव एक दिन प्रातः काल विवेकचन्द्र ने त्रिपा प्रकार प्रतिप्रेष देकर अपने छोटे भाई को इस त्रिपा का महारा वाला का हम में प्रवृत्त त्रिपा बहदा प्रसार है—

विश्वेश्वर— भाई विनयचन्द्र! उठो प्रातःकाल होने को चारा है भर तक सोते रहना उचित नहीं है, क्यों की मृत्यु को प्रातःकाल शीघ्र ही उठकर शीघ्र चादि ध्यानश्चक्रक्रिया से निवृत्त होकर शीघ्र शीघ्र चादि की यन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये ।

विनयचन्द्र— (उक्त बात को सुनने ही शीघ्र उठ बैठा और बोला) हाँ भाई साहब! मैं उठ बैठा आज्ञा दीजिये ।

विश्वेश्वर— अच्छा चलो पहिले अपने परमेश्वर जीतगण परमात्मा के दर्शन करें पीछे अन्य काम को करेंगे, क्योंकि शान्त और आर्त्तिक शोभावाले देव के मुखामुख का दर्शन करेंगे तो अपने को विद्या और सद्बुद्धि प्राप्त होगी और उस के प्रभाव में अपना सब दिन का व्यवहार सुगमगमि होगा, नीतिशास्त्र में कहा है की—
 द्रव्यं कश्चि मन्त्राणां महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का समाप्त दिन अच्छे प्रकार चला है, उसको उत्तम मानना है, तथा बुद्धि निरन्तर बढ़ती है ना मन्त्राणां मन्त्रों के मुखामुख का दर्शन करने से ऐसा ही एवं नही होगा ।

विनयचन्द्र— हाँ भाई साहब! आपका बयान कथाने है, मैं इसी बात को अनुसरण कर अपनी आँखें मलमल करूँगा, तथा सर्व सुख प्राप्त करूँगा का दर्शन कर अपने को प्रवृत्त करूँगा, (यह कहकर चला गया, विश्वेश्वर के निकलने पर हुआ) ।

विश्वेश्वर— अतिशय ने कहा है की देव सुख प्राप्त करूँगा का दर्शन कर अपने को प्रवृत्त करूँगा का दर्शन करूँगा, यह

“गितद्वस्तेन मो पेयाद् राजानं देवता गुह्यम् ।” इमं विद् देवदर्शन
के लिए चसते समय अपने को स्वामी हाथ नहीं चम्बना चाहिये कुछ
चावलको ले लेना चाहिये ।

विनयचन्द्र— जी साहब! सज्जाहूँ (चावल में कर दोनों
भाई चले और मन्दिरमें पहुँच कर नीचे निगे अनुमाग वन्दन किया
की, इसी प्रकार सब को करना चाहिये ।

द्वितीयपाठ : ।

‘निर्माही निर्साही निर्साही’ १ यह पाठ मन्दिर में पेशना
करना । (देवमन्दिर में जाकर विनय के साथ यह वाक्य बोले) —

त्रैलोक्य आर्त्ति हर नाथ! तुझे नमूँ मैं ,

हे भूमि के विमल रत्न ! तुझे नमूँ मैं ।

हे ईश! सर्वजगत के तुझे नमूँ मैं,

मेरे भवोदधि नाशक ! तुझे नमूँ मैं ॥ १ ॥

प्रमुमुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तरु
को जमाकर सिर तीन प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथमप्रदक्षिणां
ददामि ।

दूसरी प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीयप्रदक्षिणां
ददामि ।

तीसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो! चारिध्रगुणप्राप्त्यर्थं तृतीयप्रदग्निर्गा
दामि ।

इस के पश्चात् सायिया करे और यह बोले —

हे प्रभो! चतुर्गतिनिर्माहार्थं स्थम्भिकं रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं सायिया बनाना हूँ ।

इस के पीछे तीन पुंज (दिगल्लो) करे और यह बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारिध्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुञ्ज
रचयामि ।

अर्थ— हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारिध्र को प्राप्ति के लिए मैं तीन दिगल्लियों को बनाता हूँ ।

और एक दिगल्लो पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थमर्द्धचन्द्राकारं
करोमि। पुञ्जमेकं च सिद्धवस्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ— हे कृपासिन्धो! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्रके समान आकार करता हूँ और एक त्रिगुणा सिद्धस्थान स्थिति के लिये करता हूँ ।

इसके पीछे भगवान् की दाहिनी मुजा की तरफ खड़ा होकर तथा खी हो तो भगवान् की बाईं मुजा की तरफ खड़ा होकर हाथ जोड़कर तथा दोनों गोंडा को भोग मस्तक को नमस्कर यह बोले—

रक्षामि त्रयमममगो ! पदिउं जावणिआण् निमोदि-
मन्थणण वंदामि ।

म वाच्य को उठ कर क साथ में तीन वत कपना पाहि-
क पाहे इदिवाता कना चदिदे ।

इरियावहियाण् ।

रक्षाकारेण संदिमत् भगवन् ! इरियावहियं पट्टि-
व ? इच्छं । इच्छामि पट्टिमिडे, इरियावहियाण्,
णाण् गमणागमणे पाण्डुमणे वीण्डुमणे इरिय-
आमा उभिग पणुग द्ग मदी मफुटासंताणा
णे, जे मे जावा विगहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, सेइं-
नउरिंदिया, पंनिंदिया, अभिहिया, वलिया, लेमिया,
या, मंघहिया, परियायिया, किलामिया, उइयिया,
मो टाणं मंकायिया, जायियाओ धवरोयिया तस्स
मि दुण्णं ।

नम्म उत्तमं ।

नम्म उत्तमं कम्मोणं, पायन्दिन्नकरणेणं, विमोही-
णं, विमहोकरणेणं, पावाणं कम्मणं निग्घायणद्धाण्,
हाउस्समं ।

असन्ध उम्मिण्ण ।

असन्ध उम्मिण्णं, नोसमिण्णं, स्वामिण्णं,
, जंभाइण्णं, उड्डुण्णं, वायनिसग्गेणं, भम-

लिए , वित्तमुच्छ्राण , सुहुमेहि अंगसंचालेहि , सुहुमे-
हि खेलसंचालेहि , सुहुमेहि दिट्टिसंचालेहि , एवमाह-
एहि आगारेहि अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-
स्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं , नमुक्कारेणं न
पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं आणेणं अप्पाणं थो-
सिरामि ॥

फिर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पाके एक लोग-
स्स प्रगट कहे ।

लोगस्स उज्जोअगारे , धम्मतित्थयरे जिणे । अ-
रिहंते कित्तइस्सं , चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभम-
जिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्प-
हं सुपासं , जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च
पुप्फइंतं, सीअलसिज्जंसवासुपुज्जं च । विमलमणंभं
च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं,
वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्टनेमिं, पासं तह
घट्टमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहुपरयमला
पहोणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा
मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्थिय वंदियमहिषा, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आरुग्गपोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
दित्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइघेसु अहियं पयासयरा ।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिमंतु ॥ ७ ॥

शिर नीचे बैठे थे. 'भगवंत! वैश्वानन्दन कर्त' जीमया गोडा नीचा कर्के. दाया गोडा उचा कर्के. भंजलि बाध के नीचे प्रमाये वैश्वानन्दन को -

अनन्तगुणी श्रीशान्तिना नर नारी गुण गावे,
द्रव्य भाव शुचि प्रेमसु अजर अमर पद पावे । सुख
संपत्ति कारक. तुम प्रभु पूर्ण प्रीति विमराम, क्षेम कुश-
ल नित चाहिये कर्त वन्दन शिर नाम ॥ १ ॥

जे किंचि नामतित्थं, समो पायाले माणुमे लोए।
जाटं जिणपियाटं, ताटं सव्याटं भंदामि ॥ १ ॥

नमोत्पुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं
तित्थपराणं मयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
सोहाणं, पुरिसवरपुंढरीअणं, पुरिसवरगंभहत्थीणं ॥
३ ॥ लोमुत्तमाणं लोणनाणं, लोमहिआणं, लोमपईआणं,
लोमपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अमयदयाणं, नयखुदयाणं,
मग्गदयाणं मरगदयाणं पोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
धम्मदेशिअणं धम्मनायगाणं धम्ममारहीणं धम्मवर-
चाउरंतचइवहीणं ॥ ६ ॥ अण्णट्टिहयवरनाणंदसणपरा-
णं विअट्टउत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिग्गाणं जावयाणं तिष्ठाणं तार-
याणं पुट्ठाणं पोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वसुणं
सव्वदरिसीणं मिवमयलमरुअमणंतमरुखयमव्यापाह-
मपुणरावित्थियं सिद्धिगइनामणेपं ठाणं संपत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे
अ भवस्संनिष्णागण काले।संपइ अ घट्टमाणा, सब्बे
तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावन्ति चेइयाइं उट्टे अ अहे अ निरियलोए य ।
सब्बाइं ताइं वंदे इह संतो तन्थ संताइं ॥ १ ॥

इच्छामि खमाममणो वंदितं जायणिज्जाणं निर्मी-
हिआए मन्थएण वंदामि ।

भगवन्!— जावन्त केवि साह भरहेरवगमहावि-
देहे अ। सब्बेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदडविर-
याणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥ २ ॥

चोवीस भगवान् का स्तवन ।

प्रह उटी में सदा नमुं वारि हाथ जोड के साम ।
चोवीस जिनराज को में नित्य करुं परणाम ॥ १ ॥
(देक) १ ऋषभ २ अजित ३ संभर ४ अभिनदन अरु
५ सुमति महाराज । ६ पद्म ७ अनुपारम ८ चंदाप्रभुजी से लग
न लगा हे आज ॥२॥ प्र० ॥ ९ सुविधि १० शोतल
११ श्रेयांस सवाई दीज मुक्ति नाथ । १२ वामुपूज्य जिन
पारमा वारि १३ विमल १४ अनन्त क नाथ ॥ ३ ॥ प्र० ॥
१५ धर्म १६ ज्ञान्ति अरु १७ कुन्धु जिनेश्वर १८ अरु
१९ मल्लि महाराज । २० सुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी

२३ पार्श्व २४ वीर जिनराज ॥४॥ प्र०॥ कहे पाठक क
की, निधान पुरो जाम। कर जोही गुण गावना , प
बंद गोपालदास ॥ ५ ॥ प्र० ॥

उपसगाहरस्तोत्र ।

उपसगाहरं पासं . पासं बंदामि कम्मघणमुपकं
विसहरविसनिघासं, मंगलकल्लाण आयामं ॥ १ ॥

विसहर- फुल्लिगामंनं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस गारोगमारी, इइजरा जंति उपसामं ॥ २ ॥

चिट्टउ दूरं मंनो, तुज्ज पणामोवि पट्टफलो होई ।
नरतिरिणसु वि जोया, पायंति न दुपएदोहमां ॥ ३ ॥

तुह सम्मत्ते लडे, चिंतामणिकल्पपापयन्महिण ।
पायंति अविग्गेणं, जोया अपरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

इअ संभुओ महापस, भतिभरनिन्भरेण हियणण ।
ता देव दिज्ज पांतिं, भवे भवे पास जिणणन्द ॥ ५ ॥

पीछे दोनो हाथ जोइ सम्मत्त लगा के पि। यह बोलना—

उप वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पमायणो भयथे ।
भयनिव्येओ मग्गाणुमारिया इहफलसिद्धी ॥ १ ॥

सोगविरुद्धपाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरुजोगो तज्ययणसेवणा आभवमणंश ॥ २ ॥

पीछे गदा ले के हाथ जोइ करके यह बोलना—

अरिहंत जोइआणं करेमि

आए पुष्पणवतिष्णाए सकारवनिष्णाए सम्पाणवतिष्णाए
 आए पोहिटावतिष्णाए निम्बसम्पावतिष्णाए ॥ १ ॥
 सदाणं मेहाणं धिइए धारणाए अणुप्पेहाणं यदुमाणी
 ठामि काउस्सगं ॥ २ ॥

अप्रत्य ऊससिएणं नीसमिएणं खासिएणं छीएणं
 जंभाइएणं उदुएण वापनिसग्गेणं भमलीए पित्तमुच्छा
 ए ॥ १ ॥ सुट्टमेहिं अंगसंचालेहिं, सुष्टमेहिं खेजसंचा
 लेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगा
 रेहिं, अभग्गो अविराहिथो हुअ मे काउस्सगो ॥ ३ ॥
 जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥
 ताव कायं ठाणेणं मोखेणं भ्राणेणं अप्पाणं वांसिरामि ॥५॥

इस के पीछे काउस्सग में दोनों हाथों को नीचे की ओर
 लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा हाट और जीभ को बन्द
 हिलाये यह चिन्तवन करना । काउस्सग चार के (पीछे दोनों हाथों
 को जोड़ कर यह बोले—

नमोऽर्हत्सिद्धाधारोपाध्यायसुर्वसाधुभ्यः ॥ १ ॥

श्रीशान्तिनाथजी, साताकारक देव ।

मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥

मुझ रोम हुलसिया, वन्हेँ प्रणमूँ नाथ ।

शुद्ध समकित मँगँ, मैं जोड़ प्रभु के हाथ ॥ २ ॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पठवकलाए कर के “भावस्मही”

कां. तीन बार कद का मन्दित्र से बाहर जाने ।

मृतीय पाठः ।

पूर्वोक्त गीति में देववन्दनविधि को पूर्ण करने के पीछे गु-
विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरुमन्त्रागत के सामने खड़े
नीचे लिखे वाक्य से दो बार स्वनाममन्त्र देना चाहिये ।

**इच्छामि स्वमासमगो वंदितुं जायगिज्जाय नि-
दिध्याय मत्थण्ण वंदामि ॥ १ ॥**

इस प्रकार स्वनाममन्त्र देकर नीचे लिखे पाठ का बोलकर
मन्त्रागत से सुगमगात् पुछनी चाहिये -

**इच्छाकार भगवन्! सुह राह्य, सुह देयनिय सुख
शरीर निरापाथ सुख संयमयात्रा निर्देशं छां जी स्वार्थ
सात्ता छे जी ॥ २ ॥**

पूर्वोक्त पाठ को पढ़ कर धीगुरुजी को नमस्कार करें, पीछे नीचे
बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रखकर बाएँ हाथ को सुगमली वरसुग-
म लगाकर । नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

**इच्छाकारंण वंदिमह भगवन्! अम्भुद्विधोऽग्निः
अग्निभर राह्यं त्यामेउं इच्छं त्यामेमि देयनियं, जं कि-
यि अपनिअ परपत्तिअं भत्ते पाणे विणाण वेष्ठावणे**

द्विज को बाहर बजे तक कद पाठ रहना चाहिये, किन्तु पाठ
बतने के पीछे "राह्यं" की जगह "देयनियं" जगहों को रक्त
चाहिये ।

करेमि भंते! सामाष्टयं, सावर्जं जोगं पञ्चक्यामि
जायनियमं पञ्जुवामामि । दुविहं तिबिहेगं, मणेगं धाय
ए काणुणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमा
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पधत्त खमासमण् ठेक नीचे निखे हूण् मूत्रो वों कर
वाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडि
क्कामामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिया
विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियध
मणे ओसा-उत्तिग-पणाग-दग-मट्ठा-मफ्फडा-संताणासं
मणे, जे मे जीवा विराहिया एग्गिदिया वेडंदिपा तेइंदि
चउरिंदिया पं चिंदिया, अमिहया धत्तिया लेसिया संघा
या संघदिया परियाविया किलामिया उदधिया ठाणाओ
णं संकामिया जौवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छानि
शुफ्फडे ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, धिसो
हीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावागं कम्माणं निग्घायण
ट्टाए ठामि काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिण्णं नीससिण्णं, खासिण्णं, लीण्णं
जंभाइण्णं, उड्डण्णं, बापनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु
च्छाण्णं, सुहुमेहि अंगमंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं

सुहुमेहिं दिष्टिसंचालेहिं एवमाहृगहिं आगारेहिं अभगंगा
 अयिराहिओ हृञ्ज मे काउत्सगो जाव अरिहंताणं भगवं-
 ताणं, नमुकारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोयेणं
 ज्ञाणेणं अप्पाणं थोस्तिरामि

यदा पर चाा ' नयकाा' अथवा एक "सोगम्म" का काउत्सग
 काके " दमो अरिहंताणं" कदकर काउत्सग को पारना चाहिये
 पीछे प्रकटमय में नीचे लिखे हुए 'सोगम्म' इत्यादि पाठ को बहना
 चाहिये—

सोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथपरं जिणो। अरिहंते
 कित्तइस्सं, अउवीसं पि वेयली ॥१॥ उत्तममजिअं अ वंदे
 संभवमभिणंदणं अ सुमहं अ । पउमप्पहं सुपासं,
 जिणं अ वंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं अ पुप्फदंतं, सीअल
 सिउजंस यासुपुअं अ । विमलमणं अ जिणं, धम्मं संति
 अ वंदामि ॥३॥ कुंयुं अरं अ महिं, वंदे मुणिसुअवयं नमि-
 जिणं अ । वदामि रिद्धनेमि, पासं तह वट्टमाणं अ ॥४॥
 एवं मए अभिपुआ, विहुपरपमला पहोणजरमरणा ।
 अउवीसं पि जिणयरा, तिथयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय
 वंदिय महिया, जे ए सोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरजा-को-
 हिलाभं समाहिवरमुत्तमं दित्तु ॥६॥ वंदेसु निम्मलपरा
 आइअंसु अदियं पपासपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा

करेमि भंते! सामाहयं, सावज्जं-जोगं पच्चक्खामि,
जावनियमं पज्जुयासामि । दुविट्ठं तिविहेणं, मणेणं वाया-
णं काणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कामामि
निन्दामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ।

इस के पद्यत् खमासमख् देकर नीचे निम्ने हुए सूत्रों का कहना
चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! हरियावहियं पडि-
क्कामामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमित्तं, हरियावहियाणं
विराहणाणं गमणागमणे पाणक्कमणे योयक्कमणे हरियक्क-
मणे ओसा-उत्तिग-पणाग-दग-मट्ठी-मक्कडा-संताणासंक्क-
मणे, जे मे जीवा विराहिया एण्दििया वेइंदििया तेइंदििया
चउरिंदििया वंचिंदििया, अमिहिया वत्तिया लेसिया संघाइ-
या संघट्टिया परिवाविया किलामिया उहविया ठाणाओठा-
णं संकामिया जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि
वृक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसो-
हीकरणेणं, विसह्ठीकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्घायण-
ट्ठाणं ठामि काउसगं ।

अन्नत्थ ऊससिण्णं नीससिण्णं, खासिण्णं, छीण्णं,
जंभाइण्णं, उडूण्णं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमु-
च्छाणं, सुहृमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहृमेहिं खेलसंचालेहिं

दुमेहिं दिदिम्भालेहिं एवमाहृहिं आगारेहिं अभगो
 रियराहिओ हृज्ज मे वउत्तम्मगो जाय अरिहंताणं भगवं-
 णं, नमुत्तारेणं न पारेमि ताय वउत्तं ठाणेणं मोयेणं
 णेणं अप्पाणं धोमिरामि

यद्वा पा चात् नरकात् अथवा एव "लोगस्स" वा वाउत्तम्म
 के "सो अरिहंतं" कदक वाउत्तम्म को पारना चाक्षिपे
 दि प्रकृत्य मे न. ले लिसे हृत् "लोगस्स" इत्यादि वाट को कहना
 दिदे—

लोगस्स उज्जाअगरं, धम्मतिथयरं जिणे। अरिहंते
 वेत्तइस्सं, चउधीसं पि येयली ॥१॥ उत्तम्मजिच्चं च वंदे
 मयमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं,
 जेयां च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुधिहिं च पुष्पदंतं, सीअल
 मेउजंस थासुपुअं च । विमलमणं च जिणं, धम्मं संति
 य वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मद्धिं, वंदे मुणिसुख्यं नमि-
 जेणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वट्टमाणं च ॥४॥
 एवं मए अभिपुआ, विहुपरयमला पहीणअरमरणा ।
 वउधीसं पि जिणयरा, तिथयरा मे पसीपंतु ॥५॥ कित्तिप
 र्दिप महिपा, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरगा-धो-
 हिलाभं समाहियरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा
 आहंसेसु अहियं पपासपरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा

करेमि भंते! सामाट्टपं, सायज्जं जोगं पच्चक्खामि,
 तावनियमं पज्जुवासांमि । दु विहं निविहेणं, मणेणं वापा-
 ए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
 नेन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इम के पद्यत् खमासमग्गं टंकर नीचे निम्ने हुए मंत्रों को कदना
 चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! हरियावहिषं पडि-
 हामामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमित्तं, हरियावहियाए
 येराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे पीयक्कमणे हरियक्क-
 मणे ओसा उत्तिम-पगग-दग-मटी-मक्कडा-संताणासंक्क-
 मणे, जे मे जीवा विराहिया एगिदिया वेउंदिया तेइंदिया
 वउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वनिया लेसिया संघाइ-
 ता संघट्टिया परिवाधिया किलामिया उदविया ठाणाओठा-
 णं संकामिया जोवियाओं धवगेविया, तस्स मिच्छामि
 पक्कं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, विमो-
 षकरणेणं, विसर्द्धीकरणेणं, पायाणं कस्माणं निग्घायण-
 णं ठामिक्काउसर्गं ।

अन्नत्थ ऊससिणं नीससिणं, खासिणं, खीणं,
 तंभाइणं, उड्डणं, वापनिसग्गेणं, पित्तमु-
 द्धाणं, सुहृमेहिं अंगसंचालेहिं, ५७

६,

करेमि भंते! सामाटपं, सावज्जं जोगं पद्यकखामि,
 वनियसं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेगं, मणेणं धाया-
 ताएणं, न करेमिन कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि
 न्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इस के पश्चात् खमासमण् डेकर नीचे लिखे हुए मंत्रों को कहना
 हेये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहिषं पडि-
 णामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमित्तं, इरियावहियाण
 णहणाण गमणागमणे पाणक्कमणे यीयक्कमणे हरियक्क-
 ण ओसा-उत्तिग-पणग-दग-मटी-मक्कडा-संताणासंक्र-
 ण, जे मे जीवा विराहिया एगिदिया वेइंदिया तेइंदिया
 रिंदिया पंचिंदिया, अभिहया घत्तिया लेसिया संघाइ-
 संघट्टिया परियाविया किलामिया उदयिया ठाणाओठा-
 संकामिया जीवियाओ घवरंबिया, तस्स मिच्छामि
 इहं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पापच्छिन्नकरणेणं, विसो-
 रणेणं, विसर्ह्णाकरणेणं, पायाणं कम्माणं निग्घायण-
 णं टामि काउसमणं ।

असं . . . नीमसिणं, खासिणं, टीणं,
 . . . गं, धापनिमग्गेणं, भमलिणं पित्तमु-
 . . . सुहृमेहिं खेलमंशालेहिं

1)

सुहृमेहिं दिष्टिभंचालेहिं एवमाहृएहिं आगारेहिं अभगगो
 अविशहिओ हृद्ध मे काउस्सगो जाय अरिहंताणं भगवं-
 ताणं, नमुप्पारेणं न पारेमि ताय कापं ठाणेणं मोणेणं
 आणेणं अप्पाणं थोस्सिरामि

एदा एव चागं नरकागं" अथवा एक "सोगम्म" का काउस्सग
 वरके " एवो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग को पानना चाहिये
 पीछे प्रकट रूप में नीचे लिखे हुए "सोगम्म" इत्यादि पाठ को कहना
 चाहिये—

सोगस्स उज्जाअगरे, धम्मतिथपरं जिये । अरिहंते
 कित्तइस्सं, चउपीसं पि वेंथली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे
 संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासे,
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल
 सिज्जंस यासुपुअं च । यिमलमणंतं च जिणं, धम्मं संति
 च वंदामि ॥३॥ कुंतुं अरं च महिं, वंदे मुणिसुखपं नमि-
 जिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वटमाणं च ॥४॥
 एवं मए अभिपुआ, विहृयरयमला पहीणजरमरणा ।
 चउपीसं पि जिणयरा, तिथपरा मे पसीयंतु ॥५॥ किलिय
 वंदिय महिया, जे ए सोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरग-वो-
 हिलाभं समाहियरमुत्तमं दित्तु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मस्यरा
 आरंवेसु अदियं पयासपरा । सागरवरंभीरा, सिद्धा

सिद्धिं मय दिमन्तु ॥ ७ ॥

इस के पश्चात् एक एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वेमणे संदिसा-
उं? इच्छं ।

२- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! वेमणे टाउं?
इच्छं ।

३- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्जाय संदि-
साउं? इच्छं ।

४- इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्जाय करूं ।

फिर पाँचवें खमासमण देकर अठवा नवका मन्त्र को बोले।

॥ इति प्रभान सामायिकविधि मपूर्ण ॥

सामायिक ४२ मिनट की होती है जिसमें ज्ञान ध्यान करना।

इसके पश्चात् सामायिक को पढ़ना चाहिये उसकी विधि यह है—

कि खमासमण देकर मुहपत्ती की पडिलेहया कानी चाहिये, फिर

दूसरा खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोले —

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारूं, यथाशक्ति ।

इस के पीछे फिर खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को
बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक पारंमि,
तहत्ति ।

इस के पीछे पाँचों तीनों धोड़ासा झुनकर तीन बार नयकार
 संत का गुण पीछे गौड़ाली भागनेसे नीचे बैठकर मन्त्रको नमाकर-
 नीचे स्थित पाठ का बोधे

भयं दमराणाभरो, सुदंमगो धूलभह यडरो य । सहलीक-
 पगिह्यापा, साह एवंधिता हृन्ति ॥१॥ साहृण्य वंदणेणं,
 नामह पायं अमंकिता भाया । फासुअदाणे निअर, अ-
 भिगहो नागमाईणं ॥२॥ छउमन्थो मृदमणो, कित्ति-
 यमित्तेपि संभरइ जाणो । जं न न संभरामि अहं, मिच्छा
 मिदुषहं तस्म ॥३॥ अं जं मणेण नित्तिप- मसुहं थापाइ
 भामियं किंवि । असुहं काण्णकयं, मिच्छा मिदुषहं
 तस्म ॥४॥ मामाइय पोसहसंठियस्म जायस्स जाइ जां का-
 लो । सो सफलो योद्धव्यो, तेसो संसार फलहेऊ ॥५॥ सा-
 मायिक विधं लीयुं, विधं कीयुं, विधि करतां, जे कोई अविधि
 जाशातना लर्गा होय, दम मनये, दम वचनये, पारह काया
 ये, वसीस दूपग माहिं जो कोई दूपण लगा होय सो
 मरु, मनकर वचनकर कापायें करी मिच्छा मिदुषहं ।

- - - - -

। राई प्रतिक्रमणविधि ।

पाँचवां पाठ

उक्त प्रमाण से सामायिक गृह्य करने के पीछे एक राम.समय

देकर नीचे लिंगे पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! ध्यानयन्दन करुं,
इच्छं।

इम के पश्चन् नीचे लिंगे हुए गुरुओं को क्रमशः बोले—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सेनुंजि उज्जं-
नि पहु नेमिजिण जयउ धीर रुघउरि-मंडण ॥ १ ॥
भरुअच्छय मुणिसुब्बय, मुहरि पास दुह-दुरिय-खंडण।
अवरविदेहिं जे तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जंकेषि।
तीयाऽणागय-संपइ य वंदूं जिण रुच्येवि ॥२॥

कम्मभूमोहिं कम्मभूमोहिं पद्म-संघयणि, उक्कोसय
सत्तरिसय जिणधराण विहरंत लब्भइ । नव-कोडीहिं
केयलीण, कोडी- सहस्स नव साहु-संपइ । संपइ जिणवर
धीसमुणि, यिहुं कोडीहिं वरनाण । समणह कोडीसहस्स
दुअ, धुणिज्जइ निचविहाण ॥ १ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा,
लक्खा इप्पघ अट्ठ कोडीओ। चउसयझायासीया, तिंहुंके
चेइए वंदे ॥२॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडी लक्ख
तेवन्ना । अट्ठावीस महस्सा, चउसय अट्ठासिया प-
डिमा ॥३॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणपिणाइं, ताइं सच्याइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोऽप्यु णे अरिहेताणं भगवंताणं आहगराणं तित्थ-
 पराणं सयंसंयुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरि-
 रिमथरपुंढरीअणं पुरिमथरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोम-
 नाहाणं लोमहिअणं लोमपईयाणं लोमपज्जोअगराणं
 अभयदयाणं अयखुदयाणं मग्गदयाणं सरकादयाणं सो-
 हिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्म-
 सारहीणं धम्मथरयाउरंतणययदीणं अण्णहिअयवर-ना-
 णदंमण-थराणं विअदुअ उमाणं जिणाणं जायपाणं तिअाणं
 तारयाणं पुद्धाणं सोहयाणं सुत्ताणं मोअगाणं सअ्यन्नुणं
 मअयदरिमाणं निवमपलमरुअमणं तमअखयमअयाआहम-
 पुणरायित्तिमिद्धिगहनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणा-
 णं जिपअयाणं ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्सं-
 ति णागए काले । संपह अ बहमाणा, सअये तिविहेण
 वन्दामि ॥ १ ॥

(जायंति चेहअाहं)

जायंति चेहअाहं, उट्टे अ अहे अ तिरिपलोए अ ।
 सअ्याहं ताहं थंदे, इह सतां मत्थ हंताहं ॥१॥

(जायंत केवि साह)

जायंत केवि साह, अरहेरवयमहाविदेहे अ । स-
 ध्वेमि तेसि पणआं, तिविहेण तिदंअयिरयाणं ॥१॥

(परमेष्ठि नमस्कार)

मम संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंयुं अरं च महि, वंदे मुनि-
 सुव्वयं नमिजिणां च । वंदामि रिद्वनेमि, पासंतह वदू-
 माणं च ॥ ४ ॥ एयं मए अभियुआ, विहूपरयमला
 पहीणजरंमरणा । चउवोसंपि जिगावरा, तित्थयरा मे प-
 सीपंतु ॥ ५ ॥ कित्थिय-वंदिय-महिया, जे ए लोमस्स उत्त-
 मा सिद्धा । आरुग्गयोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु
 ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलयरा, आइघेसु अहिपं पयासय-
 रा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे पडिक्कमण के ठावणे की विधि को कर्नी चाहि-
 ये, उस की विधि यह है कि—

१- प्रथम खमासमण देकर “श्री आचार्यजी मित्र” कहकर वन्दन
 करना चाहिये ।

२- दूसरा खमासमण देकर “श्रीउपाध्यायजी मित्र” कहकर व-
 न्दन करना चाहिये ।

३- तीसरा खमासमण देकर “जङ्गमयुगप्रधान वर्त्तमान भट्टारक
 श्रीज्यजी” का नाम लेकर वन्दन करना चाहिये ।

४- चौथा खमासमण देकर सर्वसाधुओं को वन्दन करना चाहिये ।

इस प्रकार चार खमासमण देकर पडिक्कमणा को ठाकर गोदो-
 हन- भासन से बैठकर मस्तक को नमाकर दोनों हाथों से मुंद्पत्ती को-
 मुखपर देकर नीचे लिखे हुए “सध्वस्तवि” इत्यादि वाक्य को बो-
 लना चाहिये—

सुख्यस्सधि राइय-दुखित्तिद-दुग्गमास्सिय-दुखिट्ठिये,
इच्छं तस्स मिच्छामि दुष्पटं ॥ १ ॥

इस के पीछे पूर्व लिखा हुआ "नमोत्थुणं" पाठ बोलना चाहिये। तदनन्तर राइ होकर नीचे लिखा हुआ "केमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सायज्जं जोगं पचक्खामि
जाय नियमं पज्जुवास्सामि दुविहं निविहेयं मणेगं घाया-
ए कएयं न करेमि न कारयेमि तस्स भन्ते! परिक्कमामि
निंदामि गरिहामि अप्पाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि टामि" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि टामि कउस्सगं जो मे राइओ अइष्मारो
कओ पाइओ घाइओ माणसिओ उरसुत्तो उम्मगो
अक्कपो अकरणित्तो दुग्गमाओ दुक्खिचित्थिओ अणापा-
रो अणिच्छियव्यो असावगपाउगो नाणे तह दंसेणे च-
रित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कस्ता-
पाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सि-
फलाययाणं पारसुविहस्स सावगभन्तस्स जं खंदिपं जं
विंराहियं तस्स मिच्छा मि दुष्पटं ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ 'अस्स उच्चो' का पाठ बोलना चाहिये—

तस्य उत्तरीकरणेणं पायच्छिन्नकरणेणं विमोहीकर-
णेणं विसृष्टीकरणेणं पायाणं कर्माणां निग्यायणद्वार
ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्र्य ऊत्तित्त्वं” का पूरा
पाठ बोलना चाहिये ।

इसके पीछे चरित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकारमन्त्र अथवा
पूर्व लिखे हुए एक “लोगस्त” का काउत्सग करके उनको नार कर
फिर देशशुद्धि के लिये पकटरूपसे पूर्व लिखे हुए “लोगस्त” इत्या-
दि पाठ को बोलना चाहिये ।

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठ भी बोलना चाहिये—

सञ्चयेण अरिहंतचेऽभ्याणं करेमि काउत्सग ॥१॥
षंडणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्मा-
णवत्तिआए षांहिल्लभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए
सद्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्डुमाणी-
ए ठामि काउत्सग ॥१॥

इसके पीछे पूर्व लिखा हुआ “मन्त्र्य ऊत्तित्त्वं” इत्यादि
पाठ बोलना चाहिये ।

तदनन्तर चार नवकारमन्त्र का अथवा पूर्व लिखा हुआ एक
“लोगस्त” इत्यादि पाठ का काउत्सग करके, पाठके पीछे ज्ञानाधार
के निमित्त नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये—

यसद्वस्त यद्वमायस्त । संसारसागराश्चो, तारेद् नरं
 नारि या ॥३॥ उज्जिनसेलसिद्धरे, दिक्त्वा नायं निसी
 हिष्वा जस्म । सं धम्मवक्कवट्टि, अरिद्धनेमि नमंसाभि।
 ४ ॥ चत्तारि अद्द दस दो गयंदिपा जिणयरा चउवरोसं
 परमद्वनिद्धिअद्दा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥

हि/ तीसरे चत्वारिककी मुद्राती पडिलेइया कानी पाडिये
 बाये हाड में मुद्राती को लेकर उग में ब.वेदान से दाहिने कान तक
 मऊट को पूंठकर मुद्राती को चमे रखनेना पाडिये और उस के
 मध्यभाग में गुरुवाग की कल्पना करनेनी नादिये ॥

मुमुक्षुवन्दना का पाठ यह है—

इच्छामि त्वमात्ममगं ! यंदितं जायगिज्जाणं निमी-
 डिजाणं अणुजाणं मे मिउगात् । निमीहि । अहोकापं
 कापमंकापं त्वमगिज्जा । मे किरातां अणुमिउंताणं
 पट्टमुभेण मे राटं पडवंता, जता मे जायगिज्ज च मे,
 त्वासेमि त्वमात्ममगं राइण वड्डमं, आशसिणाण,
 वड्डिक्कमाभि त्वमात्ममगाग राइआण अ.म.पणाणं नि-
 र्नामन्नपराणं जं किंवि भिरुत्ताणं मणहुण.हाणं व डुकुहाणं
 चयदुद्धरणं सोहाणं माणाणं माणाणं लो.माणं मड्डकालिणा-
 णं मड्डमिउंताणं वगाणाणं मड्डक.उज्ज.डुकुमणाणं आणाणणा-
 णं जो मे अइआगे व.तां ताम् त्वमात्ममगं । वड्डिक्कमा-
 वि विद्धामि वड्डिहामि अणागं वंतिरावि ॥ १ ॥

इन के पीछे अठारह पाप स्थानक की बालोचना नीचे लिखे हुए पृष्ठ में करनी चाहिये—

प्राणानिघान् मृषायाद् अदत्तादानमैधुन परिग्रह
क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कल्हद् अभ्याह्वानपै-
शुन्य रति अरति परपरिथाद् मायामृषायाद् मिथ्यान्व
जात्य, ये अठारह पापस्थानक सेव्या होय, सेवराज्या होय
सेवनां प्रगये भला जाव्या होय, ते सन्धे हूँ मन पयन का-
पायं की। तस्म मिच्छा मि दृष्टं ।

ज्ञान दंगन चास्त्रि पाटी पांथी टयणी कयसी नय-
कार्याली देव गुरु भर्म की आजानना की होय, पनरे
कर्मादानां की आसेवना करी होय, राजकथा, देशकथा,
मंत्राकथा, भक्तकथा की होय, और जो कोई पाप परनि-
न्दादि की होय, करार्थ्यु होय, करनी अनुमोर्णु होय मो-
क्षये मने यनने काय, ये करके चास्त्रि अलिपार आलोप-
ण करके परिष्कृता में आलोउं तस्म मिच्छा मि दृष्टं ॥

इस अष्टोत्तरसूक्त के अठारह पापों की बालोचना तस्मिन्
इति पृष्ठ में करनी चाहिये ।

इसके पृष्ठ में दशमोक्त के अठारह पापों की बालोचना तस्मिन्
इति पृष्ठ में करनी चाहिये ।
— इति अष्टोत्तरसूक्तं अठारह पापों की बालोचना तस्मिन्
इति पृष्ठ में करनी चाहिये ।

इत्यादि पाठ को यह कर “ इच्छामि पट्टिमिडे जो मे रादमो”
 इत्यादि “ इच्छामि ठामि” इत्यादि मन्त्रपूर्ण पाठ को बोल कर नीचे
 लिखा हुआ मन्त्रितु सुत्र को बोलना चाहिये, तथा इम सुत्र को ४२
 वीं गाथा तक बैठ कर ही कहना चाहिये, तथा शेष पाठ गाथानों
 को खड़े हो कर कहना चाहिये—

यदिन्तु सञ्चसिद्धे, धम्मापरिण अ सञ्चसाहू अ ।
 इच्छामि पट्टिमिडे, सायगधम्माइआरस्स ॥१॥
 जो मे यथाइआरो, नाणे तह दंसणे परिणे अ । सुहृ-
 मो अ पापरो या, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २॥ बुधि-
 हे परिगाहंमि, सायजे यहुविहे अ आरंभे । कारायणे
 अ करणे, पट्टिमिडे राइयं सञ्चं ॥३॥ जं पट्टिमिदिणहिं,
 पउहिं कसाएहिं अणसत्थेहिं । रागेण य दोसेण य, तं
 निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमणे, ठाणे
 यंकमणे अणाभागे । अभिआगे अ निआगे, पट्टिमिडे
 राइयं सञ्चं ॥ ५ ॥ संककंखविमिच्छा, पसं स तह
 संथयो कुलिगीसु । सम्मत्तरसइआरे, पट्टिमिडे राइयं
 सञ्चं ॥ ६ ॥ इच्छापसमारंभे, पयणे अ पणायणे अजे
 दोसा । अत्तहा य परहा, उभपहा चेष तं निदे ॥ ७ ॥
 पंचपहमणुअप्रायं, इणप्यपाणं च तिरहमइआरे ।
 हियणायणं च यउणहं, पट्टिमिडे राइयं सञ्चं ॥ ८ ॥ परमे
 अणुव्वयंमि, धूलगपायाइपायविरइंओ । आपरिअम-

प्यसत्ये, इत्थं पमाप्यसंगेणं ॥ ९ ॥ बह्व्यंश्छविच्छेपं,
 अङ्गभारे भक्तपाणवुच्छेप । पदमवयवसङ्कारे, पट्टिकमे
 राङ्ग्यं सञ्चं ॥ १० ॥ घीए अणुव्ययंमि, परिधूलग
 अलिअवयणविरईओ । आपरियमप्यसत्ये, इत्थं पमा-
 प्यसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्रारहसदारै, मोसुवएसे अ
 कूडलेहे अ । घीयवयवसङ्कारे, पट्टिकमे राङ्ग्यं सञ्चं ॥
 १२ ॥ तङ्गए अणुव्ययंमि, धूजगपरदव्यहरणविरईओ ।
 आपरियमप्यसत्ये, इत्थं पमाप्यसंगेणं ॥ १३ ॥ तेना-
 हृदप्यओगे, तप्यदिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुल कूड-
 माणे, पट्टिकमे राङ्ग्यं सञ्चं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्य-
 यंमि, निचं परदारगमणविरईओ । आपरियमप्यसत्ये,
 इत्थं पमाप्यसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिगगहिआ इत्तर,
 अणंग विवाह निव्य अणुरागे । चउत्थवयवसङ्कारे,
 पट्टिकमे राङ्ग्यं सञ्चं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्यये पंचमंमि
 आपरियमप्यसत्यंमि । परिमाणपरिच्छेप, इत्थं पमाप-
 प्यसंगेणं ॥ १७ ॥ भण-वन्न-स्वित्त-दत्व-रूप-सुवन्नं अ
 कुयिअपरिमाणे । दूपए चउत्थयंमि य, पट्टिकमे राङ्ग्यं
 सञ्चं ॥ १८ ॥ गमणरमय परिमाणं, दिमासु उड्डं अहं
 य निरियं य । युट्टिमइ अंतरद्धा, पदमंमि अणुव्ययं
 निदे ॥ १९ ॥ मत्रमि य संसंमि अ, पुणे, अ फले अ
 गंधमद्वे अ । उवमांगपरिमाणं, पायंमि गुणव्यए निदे

॥ २० ॥ सधिते पट्टिपट्टे, अप्पोलिङ्गुप्पोलिपं च आहा-
 रे । तुच्छोसहिभक्खणया, पट्टिपमे राइयं सुव्यं ॥
 २१ ॥ इंगली-यणसाठी-भाठी-फोठी सुदञ्जण कम्मं ।
 पाणिज्जं चैव दंत-लक्ख-रस-वेम-विस-विसयं ॥ २२ ॥
 एवं खु जंतपिड्डण-कम्मं निदंष्टणं च दधदाणं ।
 सरदहत्तलापमोमं, अमइपोमं च पञ्चिञ्जा ॥ २३ ॥
 सत्थगिमुमलजंनग-तणकट्टे मंममृत्तभेसञ्जे । दिपे दया-
 विण्णं वा, पट्टिपमे राइयं सुव्यं ॥ २४ ॥ यहापुप्पट्टण-रत्तण-
 पिलेवणं सुहृत्तरमणो । दत्थात्तण आभरणे, पट्टिपमे
 राइयं सुव्यं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुट्टुइण, मोहरिअहिगण
 भागअइरिसं । दंइमि अणट्टाण, मइयंमि गुणप्पण नि-
 दे ॥ २६ ॥ निविहे दुप्पणिहाणे, अण्णट्टाणो तथा इइ
 दिहणे । कामाइयवित्तहण, पामे त्तिक्खावण निदे ॥
 २७ ॥ आणवणे पैत्तयो, मदे रुवे अ दुग्गल्लवत्तेवे ।
 देसादमात्तिदमि, दीण त्तिक्खावण निदे ॥ २८ ॥
 संथारुत्तारविही-एमाय तह चैव भोयमाभोण । पोसह-
 विट्ठिविरीण, इइ त्तिक्खावण निदे ॥ २९ ॥ रुविले
 निवित्ठवणे, विट्ठे दणमरुत्तइरे वेव । कल्लारुत्तमहा-
 णे, चइहे त्तिक्खावण निदे ॥ ३० ॥ सुहिण्णु अ इट्ठिण
 सु अ, जा मे अंत्तण्णु अलुत्तंत्ता । रागेण च दोसेण-
 प, तं निदे मं च मरिहामि ॥ ३१ ॥ हाण्णु संविभागो,

न कश्चो तवचरणकरणाजुतेसु । संते फासुअदाने,
 निदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए, जी
 मरणे षा आसंसपरआंगे । पंचविहो अइआरो, मा म
 हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ फाएण काइअस्स, पट्टिकमेव
 घस्स थापाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स यथाइ
 रस्स ॥ ३४ ॥ थंदणवयसिक्कलागा-रवेसु रुद्धकस्तापदं
 । गुणीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अत निदे ॥ ३५
 सम्मरिही जीयो, जइ विहृ पायं ममापरइ किं चि । अप
 ईइ थंशे, जेग न निदंथसं कुणइ ॥ ३६
 तं विहृ सपट्टिकमंगं, रुप्परिआयं रुउत्तरगुयां
 विण्णं उयसामेइ, याहिय्य सुसिखित्तओ विज्जो ॥ ३७
 जइ विमं कुट्टगंगं, मंतमूलविसारया । विज्जाह
 मंतेइ, तो मं ह्यइ निच्चिमं ॥ ३८ ॥ एयं अट्टविहं थ
 र गहंसममच्चिअं । आलोअंतो अ निदंशो, विण्णं
 णइ सुमायशो ॥ ३९ ॥ क.यव.थोविहणुमसो, आलो
 निदिप गुरु-मणसो । होइ अइरेमणइओ, ओद
 अहःइ भावयशो ॥ ४० ॥ आयाअणुणएणुण मा
 जइथि पट्टर सो होइ । दूपत्थाअमंमकिरिअं, पाही अ
 रेण कल्लेण ॥ ४१ ॥ आलोअणुण इहुरिहा, नय
 सिहा इहुरिहणवसे । नुणएण उतरसो, त निदे
 च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्य धम्मस्य वेपथिपस्य

अन्मुष्टिञ्चोम्नि अराहणाण विरञ्चोम्नि विराहणाण ।
 तिविहेण पटिकलो, पंदामि जिणे चउञ्चीसं ॥ ४३ ॥
 जायनि चेइआइं, उहे अ अहे अ तिरियलोए अ ।
 सञ्चाइं ताइं वदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावन्त
 केविसह, भरहेरयपमहाविहेहे य । सञ्चेसिं तेसिपण-
 जो, तिविहेण तिदेहविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपाव-
 पणासणीए, भवसयसहस्समहणीए । चउवीसजिणविणि-
 गगय-कहाह पोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरि-
 हंता, सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्महिदी देवा-
 दिंतु समाहि च योहि च ॥ ४७ ॥ पटिसिद्धायां करणे,
 किघाणमकरणे पटिकमणं । असहहणे अ तथा,
 विवरीयपरुवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सञ्चजीवे,
 सञ्चे जीया खमंतु मे । मित्ती मे सञ्चभूएसु, येरं मउका
 न केणउ ॥ ४९ ॥ एयमहं आलोइअ, तिदिअ गरहिअ
 दुगंदिअं सम्मं । तिविहेण पटिकलो, पंदामि जिणे चउ-
 ष्चीसं ॥ ५० ॥

इन के पीछे दो बार नीचे लिखा हुआ " सुमुरयन्दा"
 का पाठ धोखना चाहिये—

इच्छामि खमासमगो! यदिउं जायणिआण निरो-
 हिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निमीहि । अहो कायं
 कायतंफासं खमदिओ भे कित्तामो अण्णकिटंताणं एहं-

सुमेग भे राई यइकंता, जता भे जवण्डिजं च भेखा-
 मेमि खमासमगो राइयं यडकमं, आवस्त्रियाए पडिक्-
 मामि खमासमगगो राइ आए आनायणाए नितीसुजय-
 राए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए ययदुक्कडाए कय-
 दुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्यसालियाए
 सव्यमिच्छोवयाराए मव्यधम्माइक्कनणाए आसादणाए
 जो मे अइआरो कओ तस्स स्वमासमगो! पडिक्कनामि
 निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोस्तिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे अग्रप्रश्न में ही गृहते हुए नीचे लिखे हुए पाठ को
 बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्टिमोहि
 अविभतराइयं खामेउं, इच्छं, खामेमिराइयं। जं विवि
 अशत्तियं परपत्तियं भते पाणे विणए वेवावच्चे आलावे
 संलावे उचासगे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए
 जं किंचि मज्झ विगयवरिहीगं सुहुमं वा यापरं वा तुग्गे
 जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस पाठ को बोलकर संडासा का प्रवर्जन कर गोशेह-अस्तन
 से बैठकर दोनों हाथों का पडिलेदण कर मुइपत्ती को बायें हाथसे
 मुख पर देकर और दाहिने हाथ को गुरु के सामने गवकर तथा नीचे
 को नमकर “जं किंचि अपत्तियं” इत्यादि “अब्भुट्टिमोडमिह” वा
 सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिये, फिर दोसर “सुगुरुवादगा” देकर भूमि

का प्रवर्जन करने हुए पीछे पगमे अग्रह के बाहर माना चाहिये, तथा नीचे लिखे हुए पाठ को धोखना चाहिये—

आपरियडवज्जाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे थ ।
जे मे वेइ कसाया, सव्ये तिबिहैण खामेमि ॥ १ ॥ रुध्यस्स
समणमंघस्स भगवञ्चो अंजलिं परिअ सीसे । रुध्यं
खमायइत्ता, खमामि रुध्यस्स अहयंपि ॥ २ ॥ रुध्यस्स
जीयरासिस्स, भायथां धम्मनिहिय नियचित्तो । रुध्यं
खमायइत्ता, खमामि रुध्यस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुआ “करेमि भंते” का पाठ धोखना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं नायज्जं जोग पचक्खामि जाय
नियमं पज्जुगामामि दृचिदं तिबिहैणं मणेणं थापाए काए-
णं न करेमि न कारयेमि तस्स भंते पडिक्कामामि निंदामि
गरिहामि अप्पाणं धोमिरामि ॥ १ ॥

इस के पश्चात् नीचे लिखे हुए “इच्छामि ट.मि” इत्यादि पाठ को धोखना चाहिये—

इच्छामि ट.मि कइस्सुगं, जे मे राइओ अइपारो
कओ, काइओ वाइओ माणमिओ उरुत्तो उरुत्तो
अकप्पो अकरणिओ इउक्काओ दृचिदंतिओ अणापा-
रो अणित्थिअप्यो असादगपाइणो माणे तद् दंरुणे
परिसापरिते सुए सामाइए । तिपदं सुत्तोणं, पउण्हं

कसंयाजं, पंचणहमगुच्यंयाणं, तिणहं गुणञ्चयाणं, चउणहं
सिक्खावयाणं, धारसविहसस सावगधम्मसस जं खंडियं
जं विराहियं तस्स मिच्छा मिदुक्खंडं ॥ १ ॥

इनके पीछे नीचे लिखे हुए “ तस्स उन्नी” इत्यादि पाठ को
घोड़ना चाहिये —

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकर-
णेणं विसह्यीकरणेणं पावाणं कम्मणं निग्वायणट्ठाए ठामि
काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे यह घोड़ना चाहिये कि—

श्रीमहावीरस्वामि- छन्मासीतप- चिन्तन- निमित्तं
करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इन के पीछे नीचे लिखे हुए “ मरु” इत्यादि पाठ को
घोड़ना चाहिये—

अन्नं च ऊनमिणं नाममिणं खासिणं छाणं
जंमाइणं उइइणं वायनिस्सामेण भमलिए पित्तमुच्छाए
सुष्टुमेहि अंगमंचालेहि सुष्टुमेहि तोलमंचालेहि सुष्टुमेहि
दिट्ठिमंचालेहि पयमाइणं आगारेहि अम्मगं अवि-
रादिओ ष्टु मे काउस्सगं जाय अरिहनागं भम
यंमाणं नमुवारेणं न करेमि ताथ कायं टाणेणं माणेण
माणेणं अप्पाणं वीस्तिरामि ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बदल कर काठस्कन्ध करना चाहिये तथा उन में धीमहावीर स्वामीके विषये हुए छान्दोग्य तथा काठस्कन्ध करना चाहिये, अथवा धीवीर नन्दकार वा छ “ लोमस्त” का काठस्कन्ध करना चाहिये, तथा काठस्कन्ध को बदल नीचे लिखे हुए “ लोमस्त” इत्यादि पाठ को धोतना चाहिये—

लोमस्त उज्जोगरे, धम्मतिव्यपरे जिणे । अरिहं-
 ते कित्तरस्से, चउवीमं पि वेदली ॥ १ ॥ उमभमजिञ्च
 च वेदे, संभवमभिगंदणे च सुमडं च । पउमपहं सुपासे,
 जिणे च वेदपहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्पदंते,
 मीजलसिञ्चस घासुपुञ्जं च । विमलमणंते च जिणे,
 धम्मं संगिं च वेदाभि ॥ ३ ॥ कुंरुं अरं च महिं, वेदे
 सुणिसुप्पये नमिजिणे च । वेदाभि रिद्धेनेमि, पासं तह
 पद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभिधुष्सा, विहपरपमला
 पहीणजरमणा । चउवीमं पि जिणपरा, नित्थपरा मे
 पहीपंतु ॥ ५ ॥ विस्सिय वेदिय महिया, जे एलोमस्त
 इत्तमा रिद्धा । आग्गदोरिस्साभं, क्कमारिस्सत्तमं
 दित्तु ॥ ६ ॥ वेदेषु निम्मलपरा, आग्गेषु अरिपेत्तदा-
 रुपरा । सागरदरगंभीरा, मि ट्ठा सिद्धिं मत्तदिहं सुः ॥

उक्त पाठ को बदल कर सुवर्ण की पवित्रता पर के संश्लेष
 लिखे हुए “सुवर्णरत्न” पाठ को छे छे कर धोतना चाहिये—

इच्छामि खमासमगो ! वंदितं जावन्ति
 द्विजाण्यगुजागाह मे मित्रगर्ह । निर्भीति
 कापसंकासं खमणिज्ज्ञो भे किल्यामो अ
 पहसुभेण भे राई वडयंता, जता भे जव
 खामेमि खमासमगो राडयं वडकमे, अ
 पडिफामामि खमासमगाणं राइआए आस
 तोसन्नपराए जं किंचि मिच्छाए मणइकडाए
 कापडुकडाए कोहाए भाणाए मायाए लोभाए स
 ए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइकमणाए
 ए जो भे अइआरो कओ तस्स खमासम
 मि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिर

इस प्रकार दो वाक्य गुरुवन्दन देकर -- सकल लो
 नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये --

सद्गत्या देवलोके रविशशिभवने उपन्त
 ये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारका
 पाताले पद्मगेन्द्रे स्फुटमणिकरणे ध्यत्त
 श्रीमत्तीर्धङ्गराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्य
 पैतालये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले ह
 फखारे कूटनन्दीश्वरकनगगिरी नैपथे नील
 शैले विचित्रे पद्मकगिरिवरे चक्रशाले हिम
 धङ्गराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि

शैले विन्ध्यशृङ्गे विमलगिरिवरे लवुदे पाचके वा,
 वेते नारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ।
 शार्ङ्गशोन्नयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीम-
 थङ्गराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ३ ॥
 घाटे मेदपाटे क्षिनिनटमुकूटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे
 च घाटे विटपिघनतटे हेमकूटे विराटे । कर्णाटे हेम-
 विकटतरकटे चित्रकूटे च भोटे, श्रीमतीर्थङ्गराणां
 दिवसमहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे
 मलयिनि निषये मेग्वले पिच्छले वा, नेपाले नाहले
 कुचलयनिलके मिहले केरले वा । डाहले कोशले वा
 लितमलिले जङ्गले वाटमाले, श्रीमतीर्थङ्गराणां
 दिवसमहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ५ ॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे
 तजनपदे मन्त्रयागे तिलङ्गे, गौडे चोडे मुरण्डे वरसर-
 ङे उट्टियाणे च पाण्डे । जाट्टे माट्टे पुलिन्डे त्रिविड-
 लये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमतीर्थङ्गराणां प्रतिदि-
 वसमहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ६ ॥ चम्पार्यां चन्द्रमुण्यां
 पुरमथुरापत्तने शोन्नयिण्यां, कौशाम्यां कौशलायां
 कपुरवरे देवगिर्यां च फाश्याम् । नामिक्ये राजगोहे
 पुरनगरे भद्रिले ताम्रलिप्स्याम्, श्रीमतीर्थङ्गराणां
 दिवसमहं तत्र चैव्यानि वन्दे ॥ ७ ॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्त-
 रे, गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीर्गारमीरे, शैलाग्रं नागलोके

जलनिधिपुलिने मूरुहाणां निकुञ्जे । ग्रामेऽरण्ये षणे ।
 स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमतीर्थद्वारा
 प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि षन्दे ॥ ८ ॥ श्रीमन्ने
 कुलाद्री रुचकनगरं शाल्मली जम्बूद्वे, शोडश
 चैत्यनन्दी रतिकररुचके कुण्डले मानुपाङ्के । इक्षु
 जिनाद्री च दधिमुखगिरी व्यन्तरं स्वर्गलोके, ज्योतिर्ल
 भवन्ति त्रिसुवनबलये यानि चैत्यालयानि ॥ ९ ॥ इ
 श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोच्य
 स्याणाहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजत्रिसन्ध्यम्
 तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवान
 कार्पाणां सिद्धिरुच्चैः प्रसुदितमनसां चित्तमानन्दकारि

श्रीऋषभनाथ, श्रीअजितनाथ, श्रीसन्भव
 श्रीअभिनन्दननाथ, श्रीसुमतिनाथ, श्रीपद्मम
 श्रीसुपार्श्वनाथ, श्रीचन्द्रप्रभनाथ, श्रीसुविधिनाथ, (
 पुष्पदन्तनाथ), श्रीशीतलनाथ, श्रीश्रेयांसनाथ, श्रीव
 पूज्यनाथ, श्रीविमलनाथ, श्रीअनन्तनाथ, श्रीधर्म
 श्रीशान्तिनाथ श्रीकुन्धुनाथ, श्रीअरनाथ, श्री
 ह्दिनाथ, श्रीमुनिसुव्रतनाथ, श्रीनमिनाथ, श्रीअ
 नेमिनाथ, श्रीपार्श्वनाथ, तथा श्रीवर्द्धमाननाथ ।

अमुकसंवत्सर अमुकमास अमुकपक्ष अमुक
 तथा अमुकवार सम्पन्धिनी मेरी यात्रा सकल

उक्त वाक्य को भक्तिपूर्वक बोलना चाहिये ।

इस के पीछे गुरमुख से पञ्चखाण्ड का के “इच्छामो च
सहि” इस वाक्य को बोलना चाहिये ।

इस के पीछे “नवकारसी” से लेकर जो कोई पञ्चखाण्ड का
ना हो उसे बोलना चाहिये, पञ्चखाण्ड की विधि यह है कि—

नवकारसहितं मुद्रिसहितं पञ्चखाण्डं चतुर्विधं
आहारं अन्नं पाणं न्याहं साहं अन्नत्पणाभोगे
साहसागारेणं महत्तरागारेणं सर्वसमाहित्यनिजागा
षोसिरामि ॥ १ ॥

पीछे “शुभो गन्तव्यमगायं, नमोऽर्हतिस्त्रिधाधायोपाध्यायमर्थ
धुम्न.” इस पाठ को बोल कर नीचे लिखे हुए “परसमपतिमितरगि
अथवा “संसारदाया” इत्यादि दोनों पाठों में से किसी एक पाठ
प्रारम्भ की तीन गायामों को बोलना चाहिये—

परसमपतिमितरगि, अथसागरधारितरणव
णिम् । रागपरागसमीरं, यन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥
निरुद्धसंसारविहारकारिदुरन्तभायारिगणा विक्राम
निरन्तरं केषलिससमा वो, भयावहं मोहभरं ह
॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनपागमरुद्रगुह-सम्मोक्षपङ्कहर
मलयारिपूरम्, संसारसागरसमुत्तरणोक्तभावं, धीरा
परमसिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

इस के बाद नमोऽर्हति बोलना ।

दिन नमन कन्गाण ॥ १ ॥

जं किंमि नामनिन्धे, ममो पापात्ते माणुमे लोण ।
जाहे जिणविषाहे, नाहे मन्वाहे वंदामि ॥ १ ॥

नमोन्धुणं जरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आहगराणं
निम्भगराणं मयंमंनुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिस-
साहाणं पुरिसवरपुंउरंआणं पुरिसवरमंमहत्थाणं ॥३॥
लोमुत्तमाणं लंगनाहाणं लंगहिआणं लंगपटंणाणं,
लंगवज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अमगदगाणं नवमनुदगाणं,
मगदगाणं मग्गदगाणं वोहिदगाण ॥ ५ ॥ भम्मदगाणं
भम्मदेसिआणं भम्मनायगाणं भम्ममारहाणं भम्मवरना-
उरंतमववदंणाणं ॥ ६ ॥ अप्पट्टिहववरनाणंमणभराणं
विअट्टउत्तमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं निराणं नार-
याणं बुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्व-
न्नुणं सव्वदरिसाणं सिवमयलमरुअम्वंनमरुह्वयमव्वा-
षाहमपुणराविल्लि मिट्ठिमइनामथेपं ठाणं मपचाणं नमो
जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइया निद्धा जे
अ भवासेनिउणाएण काले । मंपई अ वट्टमाणा, सव्वे-
तिविहेण वंदामि ॥

जावंनि चेहपाहे उहे अ जहे अ निरियलोण प ।
सव्वाहे ताहे वंदे इह संनो तत्थ संनाहे ॥ १ ॥

इच्छामि स्वमासनां वंदितं जायगिञ्जात् निमी-
हिष्मात् मत्पण्यं वंदामि ।

जावन्त वेद्ये साहृ भरद्देरप्यमहाविदेहे ष्य । सव्यं-
मि तेसि पण्यो ति विहेण तिदंष्टविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हन्मिद्धाचार्योवाप्यापस्यसाधुभ्यः ।

॥ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

सिद्धाचल गिरि भेट्यां रे धन्य आन्य हमारं ॥
विमलाचल गिरि ० ॥ एह गिरिपरनो महिमा महोद्यो-
कहेतां न आये वारा । रायणस्त्रय समोमर्या स्वामी,
पूर्व नवाणुं वारा रे ॥ ५ ० ॥ १ ॥ मूलनादक श्री आदि
जिनेश्वर, श्रीसुरप्रनिमा वारा । षष्ट इष्टसंपूजो भावे,
ममक्ति मूल आभारा रे ॥ ५ ० ॥ २ ॥ दूर देशभी हं
इहां आयो, अयण सुगं। गुण नहारा । पतितउद्धारण
विदुत् तुमारं, एह नीरभ जग मागरे ॥ ५ ० ॥ ३ ॥
आय भक्तिमे प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुभारा ।
जाया करि भविजन शुभभावे, नरक निर्घेच गनि वारा
रे ॥ ५ ० ॥ ४ ॥ मंयन अहार प्रपार्सा माम आपादे,
वदि आठम भोमवारा । प्रभुके वरण परतापरे संपसे,
क्षमारतन प्रभु प्यारारे ॥ ५ ० ॥ ५ ॥

जय वीरगय जगगुरु, होउ ममं तुह पभायओ भग-
वं । भवनिष्येओ सभाणुसारिण इष्टकलसिटी ॥ १ ॥

लोगविरुद्धचाओं, गुरुजगणू आपरत्थकरणं च । सुहृगुरु-
जोगो तद्व्ययणसेवणा आभवमग्वंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआगं करेमि काउस्सगं, वंदणवत्ति-
आण पूअणवत्तिआण सुकारवत्तिआण सम्माणवत्ति-
आण बोहिलाभवत्तिआण निरुवसग्गवत्तिआण ॥१॥
सद्धाण मेहाण धिईण धारणाण अणुप्पेहाण वट्टमाणीण
ठामि काउस्सगं ॥ २ ॥

अन्नन्ध ऊसमिण्णं नीसमिण्णं खामिण्णं छीण्णं
जंभाइण्णं उट्टण्णं वायनिसग्गेणं भमलिण्णं पित्तमुच्छा-
ण्णं सुहृमेहि अंगमंचालेहि, सुहृमेहि खेलमंचालेहि, सु-
हृमेहि दिट्ठिमंचालेहि, एवमाइएहि आगारेहि अभग्गे
अविराहिओ एत्थ मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं
अगवनाणं नमुक्खारेणं न पारेमि ताव स्सग्गं टाणेणं मो-
णेणं डाणेणं अत्थाणं वंमिरामि ॥१॥

॥ १ ॥ नमोऽस्तु ते काउस्सग्गं वरुके अतोऽदंदिमहाचार्याणां पण
मोमाभुव्य , सोल्लहा नीचे मुत्तव मिद्धावत्त ॥ ही मग्गि मेवे

अरुंजयगिरि नमिंयं, ऋषभदेव पुंडरीक । शुभन
पनो महिमा, सुणि गुरु मृग्य निरर्षाक ॥ शुद्ध मन उ
पयागे, विभिंतु चैत्य संदर्भाक । करिंयं जिन आगळ,
टार्ली वचन अर्लाक ॥१॥

अथ सन्ध्यासामायिक-विधिः ।

घड़पे प्राय धर्मशाला में जाकर बहा उसका प्रामार्जन कर कर खादि की पडिलेहया कानी चाहिए । यदि देर हो गई हो तो केवल इति प्रतिभोगना करलेनी चाहिए, इम के पीछे यदि गुरुजी शिदमान हो तो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने) का कर भूमि का प्रामार्जन का आमन को बायें पास में गगकर गगाममग देना चाहिए । यदि स्थापनाचार्यके सामने सामायिक लेनी पडे तो सोन वार नवकार मन्त्रको करकर स्थापनाचार्यके प्रतिभोगन के संग शोलो का चिन्तन करते हुए स्थापनाचार्यकी स्थापना करलेनी चाहिए, इम के पीछे गगाममग देकर नीचे लिखे हुए पाठको बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपनी पडिलेहुं ? इच्छं ।

इम के पीछे फिर गगाममग दे कर मुहपती का पडिलेहन करे, फिर एक गगाममग को देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाडं ? इच्छं । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक टाडं ? इच्छं ।

इम के पीछे फिर एक गगाममग दे कर अदांबनत हो कर सोन वार नवकार मन्त्र का गुणना कर के नीचे लिखे हुए पाठ को बोलें—

इच्छितं जं न होइ मा तुह आंदायगु, ररुणं तद विप
 कित्तिणोप जुमइ अयदीरणु ॥२६॥ एहं महारिय जन-
 देय इहु न्दवगमहसउ, जं अणन्धियगुणगहण तुन
 मुणियजगअगिमिदुउ । इम महं पमिहसुपामनाह
 थंभणपपुरद्विअ, इय मुणियक मिरिअभयदेव विण-
 षह अणिदिअ ॥३०॥

इसके पीछे "जयमहायम" को बोलना चाहिये—

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय
 चित्तिपसुहफलप, जय समन्थपरमन्थ जाणय जय जय
 गुरुगरिम गुरु । जय दुहित्त-मत्ताण ताणय थंभणपद्विय
 पास जिण, भवियह भीमभवन्थु भयअयं गांताणं
 गुण तुज्झ तिमंझ नमोत्थु ॥१॥

इसके पीछे नमोत्थुण को बोलना चाहिये—

नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आश्रयाणं
 तित्थपराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
 सीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंभहत्थीणं ॥ ३ ॥
 लोशुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईआणं,
 लोगपञ्चोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्रवुदयाणं,
 मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं
 धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरपा-

वरंतचक्रयदीर्णं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयंवरनाणदंसणधराणं
 विअदुद्धउमाणं ॥ ७ ॥ जिण्णाणं जायपायं तिस्राणं तार-
 पायं मुद्धायं पोहपायं मुत्तायं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्व-
 न्णुणं सव्वदरिसीणं सिवमपलमरुअमयांतमरुखयमव्वा-
 पाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामपेयं ठाणं संपत्ताणं नमो-
 जिण्णाणं जिअमपाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईया सिद्धा, जे
 अ भवत्संतिउणागए काले । संपइ अ वट्टमाया, सव्वे
 तिविहेण धंदामि ॥

इसके पीछे “सअलोए” को धोटना चाहिये—

सअलोए अरिहंतचेइआयां करेमि काउत्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे “वंदणवत्तिआए” धोटना चाहिये—

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिए सुक्कारवत्तिआए स-
 म्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुयसगावत्ति-
 आए सट्ठाए मेहाए धिईए धारयाए अणुप्पेहाए बट्टु-
 मांणीए टामि काउत्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे “अत्तथ” को धोटना चाहिये—

अत्तथ ऊससिएणं नीससिएणं ख्यासिएणं छीएणं
 जंभाइएणं उड्डुएणं थायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छा-
 ए सुहमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहमेहिं तेलसंचालेहिं, सु-
 हमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभागो
 अघिराहिअो ह्रुअ मे काउत्सग्गो जाय अरिहेताणं

भगवन्तार्गं नमुद्गारेणं न पारेमि ताव कायं टाणेंगेमो-
: णेणं झाणेंगे अण्णाणं योमिगामि ॥ १ ॥

इसके पीछे एक नक्शा का काउन्सिल नाम का चिह्न, एक
मनुष्य काउन्सिल को पार कर १० अंगुल-निर्माणको नक्शा
साधुभ्यः” इस वाक्य को एक का नीचे निराली स्तुति को ब्रह्म-

श्रीशान्तिनाथजी, माना फारक देव । मनमोहन
स्वामी, अनुपम मूरति मेव ॥ मुज रोम शूलसिया, व-
न्तै प्रणभू नाथ । शुद्ध समस्तिन मूर्ति, जोड़ प्रनु के
हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुति को मूलके पीछे अन्य लोग काउन्सिल को को।
इसके पीछे “लोगस्म” को दोचना चाहिये—

लोगस्स उज्जाअगरे, धम्मतिन्थयरे जिणे । जरि-
हंते कित्तइस्सं, चउयीसंपि केवली ॥ १ ॥ उमभमज्जिं
च वेदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । एउमप्पहं सु-
पासं, जिणं च चंद्रप्पहं वेदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पदंतं,
सीअल सिअंस वासुपुअं च । विमलमणंतं च जिणं,
धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंधुं अरं च महिं, वेदे
मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमि, पासं तह
वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिधुआ, विह्वयरयमला
पहीण-जर-भरणा । चउयीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे
पसीपंतु ॥ ५ ॥ कित्तिव वंदियमहिया, जे एहांगस्स

उत्तमा विद्वा । आग्नापोहितार्भं, समाह्वियमुत्तमं
 दितु ॥६॥ वंदेसु निम्मलपरा, आइषेसु अहियं पपा-
 सपरा । सागरचरगंभीरा, विद्वा सिद्धि मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

मम वंदे "म-परा" सागरचरगंभीरा वंदे वि काउस्साम्"
 वास्तव. इत्यर्थनिष्ठा वाक्या वादये

वंदमावतिआण पूजमावतिआण सुकारवतिआण
 मम्माणवतिआण पोहितार्भवतिआण निम्बमगाय-
 तिआण सद्गाण मेहाण विडेण धारणाण अणुपेहाण
 पट्टमाणोण ठामि काउस्समं ॥ १ ॥

एव वे. पा" "अत्थ" दो संख्या चारिण

अत्थ उत्तमिणं नीममिणं एमिणं ह्रीणं
 जंभाइणं उट्टुणं पायनिममोणं भमदिणं पित्तमुच्छ्रा-
 णं सुहमेहि अंगमंचालेहि, सुहमेहि रोजमंचालेहि
 सुहमेहि दिट्टिमंचालेहि, तथमाइणं आगारेहि अमम
 अविगहिअं हृद्य मे काउस्समो । जाव अरिहंत
 भगयंणाणं नमुपारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो
 भाणेणं पाप्पाणं वीमिरामि ॥ १ ॥

इम वे. पीठे एक नरकाय वा काउस्समाय वाके
 गणन ए.ग. मनुष्य पद्विने काउस्समाय दो पाव वा नीचे लि

दुगी स्तुति को बंधे की ओर गेन गगुन जो मुन, ए...
काउम्गाग को पों—

भायमादिक जिनपर अनन्तगुणी महागज । संम
रसमुद्रे तरण तारण जहाज ॥ सुखमन्वतिभार
इहपरलोक दिगान्द । कर जोड़ी प्रगमु अहांनि
सकल जिगंद ॥ २ ॥

इस के पीछे “ पुष्पगवदीपदे ” को बोधना चाहिए—

पुष्पखरपरदीपदे, भायडमंहे अ जंनुदीवे अ
भरहेरषयविदेदे, धम्माङ्गरे नमंमामि ॥ १ ॥ तम
मिरपटलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्म । सोम
घरस्स धंदे, पप्फाडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरा
रणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुष्पखलविसालसुहाव
स्स । को देवदाणचनरिंदगणचिजस्स, धम्मस्स सार
बलज्ज करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जि
णमण नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणास्
ग्गुज-भावधिण । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं ते
सुक्कमचासुरं, धम्मो वड्डुड सासओ दिजयओ धम्मुत्त
वड्डुड ॥ ४ ॥ सुअस्म भगवओ करेमि काउस्सगं ।

इस के पीछे नीचे लिखे हुए “ वंदखवतिभार ” को
चाहिए—

णवि देवो, जं देवा पंजरी नमंसि । तं देवदेवमहिं,
 सिरसा धंदे मलाचरं ॥ २ ॥ इतोधि नमुद्गां, जिगवा-
 वसह्स्म वद्वमागभन, संमाग्मागरा भो, तारेड नरे व
 नारि वा ॥ ३ ॥ उज्जिन-मेल-मिहरे, दिग्गा नागं नि-
 सीहिआ जम्स । तं घम्मगग्गरहिं, अग्निदेमि नमंसामि
 ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ट दम दो, य वंदिया जिगवा चउ-
 व्वीसं । परमट्टनिट्टिअट्टा, मिट्टा मिट्टि मम दिसेतु ॥५॥

इस के पीछे " वेआयचगाराणं " को जानना चाहिये--

वेआयचगाराणं संतिगराणं मम्महिट्टिसमाहिगराणं
 करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नत्थ ऊमसिण्णं " को जानना चाहिये,

अन्नत्थ ऊमसिण्णं नीमसिण्णं त्तामिण्णं ह्रीण्णं
 जंभाङ्गणं उड्डुण्णं वायनिसग्गेणं भमत्तिण्णं पित्तउ-
 च्छाणं । सुहुमेहिं अंगमंचालेहिं सुहुमेहिं मेलमंचा-
 लेहिं सुहुमेहिं दिठिमंचालेहिं । एवमाङ्गहिं आगारं
 अभग्गो अचिराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अ-
 रिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, नाव का-
 टाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरांमि ॥ १ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे एक प्राणी काउस्स
 को पारकर " नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वनाधुभ्य " इस वा

को वर वा नथ निगम हृद योषी शुक्ति वहे और होय मनुष्य
शुक्ति वा मन वर धर काइभाय को धर—

श्री जिन शासनदेशी मराल मनोरथ पूर, कर म-
हल माला मय महुट को पूर । सुख पूरणा स्वामी
परममराल सुखदान , इन मय को वन्दे क्षेमसागर
शुभप्पान ॥ ४ ॥

एत व वीरि जेउ कर "नमोऽन्युज" भावना चाइये—

नमोऽन्युजं अरिहंतागं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं
निन्धपरागं सपंसंजुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमागं, पुरिस-
माहाणं पुरिसथरपुंटीश्याणं, पुरिसथरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥
लोगुत्तमागं लोगनाहाणं, लोगहिश्याणं, लोगपईयाणं,
लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अन्नपदपाणं, अन्नसुदपाणं,
मग्गदपाणं मरणदपाणं वीहिदपाणं ॥ ५ ॥ धम्मदपाणं
धम्मदेमिअणं धम्मनायगाणं धम्ममारहीणं धम्मथरघा-
उरंनरुत्तरहीणं ॥ ६ ॥ अप्पट्टिह्मथरनाणदंमणधरा-
णं विपट्टट्टमाणं ॥ ७ ॥ जिगाणं जावपाणं तिशाणं
सारयाणं जुद्धाणं वीहपाणं मुत्ताणं सोअगाणं ॥ ८ ॥
मव्वशूणं मव्वदरिसाणं मियमणलमरुअमणंतमरुणय-
मव्यापाहमपुणरावित्ति सिट्ठिगइनामधेयं ठाणं संप-
त्ताणं नमो जिगाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अइ-

या सिद्धा, जे अ भवस्संतिऽणागए काले। संइ मइ
माणा , सव्ये ति विहेण वंदामि ॥ १० ॥

इस के पीछे एक एक खमाममण दे कर “ श्रीभाषार्थ”
“श्रीउपाध्यायजी मित्र” “वर्तमान गुरुनहाराज को वंदू” और “हंसे
धुजी को वन्दू” कहकर उन्हें वन्दन करना चाहिये , इस के दे
गोडाली आसन से बैठ कर मस्तक को ननकर नीचे लिये
“सव्यस्सवि देवसिय ” बोलना चाडिए—

सव्यस्सवि देवसिय दुच्चित्तिय दुब्भासिय दुच्चित्तिय
तस्स मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

इस के पीछे खड़े हो कर नीचे लिये हुए “ करेमि मी
को बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि
जाय नियमं पञ्चुवासामि, दुविहं निविहेणं मणेरणं व
याए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडि
मामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे “ इच्छामि ठामि ” को बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि काउस्सग्गे जो मे देवसिओ अ
अर्रो कओ काइओ वाइओ भाणसिओ उस्सुतो
म्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुडक्काओ दुच्चिवित्ति
अणापारो अणिच्छिअव्यो असावगपाउग्गो नाणे त
दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्त

वउणं कामायाणं पंचणहमणुज्ययाणं तिराहं गुणव्ययाणं
 वउणं सिक्खाययाणं पारसविहस्स सायगभम्मस्स जं
 थंदिपं जं विराहिअं नस्स मिच्छामि दुफाहं ॥ १ ॥

इस के पीछे "हम्म उत्तरी को" बोलना चाहिये

हम्म उत्तरीकरणेण पापच्छित्तकरणेण विसोही-
 करणेण विमह्दीकरणेण पायाणं कम्माणं निग्घापणद्वार
 टामि काउस्समं ॥१॥

इस के पीछे "असत्थ उजसिणम" वा बोलना चाहिये—

असत्थ उजसिणमं नीससिणं खासिणं छी-
 णं जंभाइणं उट्टुणं पापनिसरेणं भमलिए पि-
 त्तमुच्छाए । सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि सेलसं-
 चालेहि सुहुमेहि दिट्ठिसंचालेहि । एवमाइएहि आगा-
 रेहि अभग्गो अविराहिअो हउम मे काउस्समो । जाव
 अरिहंतणं भगवताणं नमुपारेणं न वारेमि, ताव कार्य
 टाणेणं भोगेणं भ्राणेणं अप्पाणं थोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे आठ नरवार का काउस्सम पठना चाहिये ।

पीछे " नमो अरिहंतारं " कह कर काउस्सम को पाठ कर प्रकट
 रीति में " लोगस्स " को बोलना चाहिये

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिन्यपरे जिणे । अरिहं-
 ते कित्तइस्सं, चउथीसं वि वेचही ॥ १ ॥ उमभमजिणं

च, वंदे, संभवमभिगंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासं,
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं,
 मीअलसिच्चंस वासुपुच्चं च । विमलमणंतं च जिणं,
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, वंदे
 सुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्टनेमिं, पासं तह
 वद्धमाणां च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुआ, विहपरपमला
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थवरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ किन्चिय वंदिय महिया, जे ण लोगस्स
 उत्तमा सिद्धा । आरुग्गयोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलवरा, आट्ठेसु अहियं पया-
 मयरा । मागवरागंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

. इस क पीछे मंडाया का प्रन जैन का पैट का नीचे भावरप-
 क-को मुद्रपती का गदिलेहन करना च हिये, इस के पधान नीचे
 लिखे हुए पाठ मे 'सुगुरु वन्दना' कवन चाटिये

वृच्छामि ग्यमागमगो! वंदिते जायगिज्जा, निर्सा-
 हियाण अणुजागह मे मिउगहं । निर्माहि । अहोकायं
 कायमंकासं ग्यमगिज्जां मे किलामां अण्णखिलमागं
 वट्टसुभेग मे, दियसां वट्टदंलां, जत्ता मे जयगिज्जं च मे,
 ग्यामेमि ग्यमागमगो देशमियं वट्टदंसें आयसियाण .
 वट्टिज्जामि ग्यमागमगो देपनिआण आमावणाण नि
 र्नामअयराण जे किन्चि मिच्छाण मगदुक्कहाण वपदुक्कहाण

कापदुकडाण कोहाण माणाण मायाण लोभाण सव्य-
 कालिणाण, मव्यमिच्छोवपाराण मव्यधम्माइफणणाण
 आसापणाण जो मे अइआरो कओ नस्म खमासमणो!
 पट्टिफ्फामि निंदामि गिरिहामि अप्पाणं योसिरामि ॥१॥

एक पाठ दो बार बोलना । इस में दूसरी बार 'आपम्मिणाण' का नश्वर बोलना चाहिये ।

इस के पीछे अवकाश में ही गड़े का एक भीषे बिले हुए पाठ को बोलना चाहिये

इच्छाकाग्ग संदिमह भगघन ! देवसिओं ध्यालोउं?
 इच्छं । आलोणमि ॥ १ ॥

इस के पीछे " जो मे देवसिओ " को बोलना चाहिये—

जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ
 माणमिओ उस्सुत्तो उम्मगो अकणो अवरणिओ दु-
 ज्जाओ वृत्तिवचिनिओ अणापारो अणिच्छिपव्यो अ-
 सावगपाडगो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुण मा-
 माइण । निगह गुनीणं चउण्हं कमायाणं पंचण्हमणु-
 व्ययाणं निण्हं गुणव्ययाणं चउण्हं मिक्खाययाणं पार-
 सविहस्म मायगधम्मस्म जं खंडियं जं विराट्ठियं नस्म
 मिच्छामि दुफ्फं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे बिले बिले हुए " आहुणो पाणमह " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अजुणा चार प्रहर दिन में मैंने जां गिराण्याहोय
 मान लाख पृथिवीकाय, मान लाख अप्काय, मान
 लाख नेउकाय, मान लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्ये-
 क घनस्पतिकाय, चौदह लाख माथारण घनस्पतिकाय,
 दोय लाख वेडन्द्रिय, दोय लाख नेडन्द्रिय, दोय लाख
 चौरिन्द्रिय, चार लाख देवना, चार लाख नारकी, चार लाख
 तिर्यञ्चपत्रेन्द्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति
 के चौरसी लाख जावायोनि में मेरे जाय ने जे कोई
 जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणनां प्रत्ये भलो जा-
 प्यो होय ते सब्ये हूँ मने बचने काया घं करी तस्म
 मिच्छामि दुष्कण्डं ॥१॥

इम के पीछे नीचे लिखे पाठ का बोलना चाहिये -

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परि-
 ग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्या-
 ख्यान वैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद
 मिध्यात्वशल्य, ये अठारें पापस्थानक सेव्या होय, सेव-
 राव्या होय सेवनां प्रत्ये भला जाण्यो होय ते सब्ये हूँ
 मन बचन काया घं करी तस्म मिच्छामि दुष्कण्डं ॥ १ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये-

ज्ञान दर्शन चारित्र्य पाटी पोथी टबणी कबली नव-
 कारवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पररें

इसके पीछे " इच्छामि पटिकमिडं जो मे देवभिन्नो " के बोलना चाहिये—

इच्छामि पटिकमिडं जो मे देवसिद्धो अङ्गारो
कञ्जो काङ्गो वाङ्गो माणसिद्धो उस्तुतो उम्मणो
अकण्ठो अकरणिज्जो दुब्भाओ दुब्बिचिनिओ अण-
यारो अणिच्छियव्वो अमावगपाउग्गो नाणे तह दंस-
णे चरित्ता चरित्ते सुणं मामाङ्गं तिण्हं गुत्तीणं च-
गहं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं च-
उण्हं सिक्खावयाणं चारसविहस्स मावगधम्मस्स उं
खंडिअं जं विराहिंयं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इसके पीछे नीचे निम्ने दृष्ट 'वदिनुम्व' पाठको बोलना चाहिये—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायणिं अ सव्वसाहं अ ।
इच्छामि पटिकमिडं, मावगधम्माङ्गारस्स ॥ १ ॥ जो
मे वंपाङ्गारो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमां
अ पापरो वा, तं निदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुक्किं
परिग्गहंमि, मावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ
करणे, पटिकमे देवसिंयं सव्वं ॥ ३ ॥ जं वद्धमिदिण्हि,
चउहिं कसाण्हिं अप्पसन्वोहिं । रागेण व दोसेण व, तं
निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निगमसे, उणे
संक्रमणे अग्गाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पटि-
कमे देवसिंयं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंयविगिच्छा, पसंस

आलोअंनो अ निंदंनो, गिपं हगड सुमावओ ॥४३॥
 कयपावोधि मगुम्भो, आलोअ निदिग गुम्भगामे
 होइ अइंगलहृओ, ओहगिअमह्य भासयो ॥४४॥
 आवस्सणण पणण मावओ जड वि वटुरओ होइ ।
 फखागभंनरिअं, काहो अचिंण फालेण ॥४५॥
 आलोअणा वहुविहा, नय संभगिआ पडिअणगा
 । मूलगुण उत्तरगुणे, ने निदे ने च गरिअमि ॥४६॥

इन के प्रधान खंडे हो कर " वटिण " मूल का न

लिखा हुआ अश्लेष पाठ बोलना चाहिये —

तस्स धम्मस्स केवलपन्नस्स । अच्चुट्टिअंभिआरा
 णण, विरअंभि विराहणाण । निविहेण पडिअंनो, अं
 जिणे चउव्यासं ॥ ४३ ॥ जावेनि चेइआइं, उट्टे
 अहे अ तिरियलाण अ । मव्वाइं ताइं वंइ, इह सं
 तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंन के वि साह, भगहंरव
 महाविदेहे अ । मव्वेसि तेसि पणओ, निवि
 तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणामणीए
 भव-सय-सहस्समहणीए । चउव्यासजिणविगिण्णप
 हाई थोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम संगलमनि
 ता, सिद्धा साह सुअं च धम्मो अ । सम्महिटी दे
 दितु समाहिं च थोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं क
 किघाणमकरणे पडिअमणं । अरुद्धणे अ तथा, वि

रीषपस्त्वणाए अ ॥४८॥ गामेमिसृज्वजीवे, सृज्वे जीवा
खमंतु मे । मित्ती मे सृज्वभृणसु, वेरं भज्ज न केणई
॥४९॥ एयमहं आलोइअ , निदिअ गरहिअ दुगे-
छिअं सम्मं । निविहेण पटिकंत्तो , पंदामि जिणे चउ-
ष्वीसं ॥ ५० ॥

यहाँ दो वाक्य " सुगुरवाइया " देनी चाहिये और दूसरी
वाक्य वाइया में ' आरस्सियाए ' पद नहीं कहना चाहिये—

इच्छामि खमासमणो ! वेदिउ जावगिअण्ण नि-
सीहिआण्ण अणुजाण्णद मे मिउग्गहं । निसीहि । अहो-
काणं कायमंतामं खमणिअो मे किलामो अप्पकिण्ठ-
ताणं पहुसुभेण भे, दिवमो चइयांगो, जत्ता भे जवणिअं
च भे, गामेमि खमासमणो देवमियं चइअमं आव-
सियाए, पटिकमामि खमासमणाणं देवगिआए आ-
मायणाए निसीमत्रपराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्क-
हाए पयदुक्कटाए पायदुक्कटाए कोहाए माणाए मायाए
लोभाए सृज्वकालियाण, सृज्वमिच्छोवपाराए सृज्वभ-
म्माइवमणाए आमायणाण जो मे जइआरो कजो मस्स
खमासमणो ! पटिकमामि निंदामि गिरिहामि अप्प्याणं
योस्सिरामि ॥ १ ॥

अब अत्रोद में ही गइए वर नीचे लिखे हुए पाठ की
बोझना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिमह भगवान् ! अञ्जुद्विजोद्वि;
अचिंनर देवसिअं ग्यामेउं? इच्छं ग्यामेमिदेवसिपो॥१॥

उक्त पाठ को संक्षेप कर गौडान्यां चागन मे वेत्, क वरं
हाथ मे मुदवती को गुण क म्म क म्म क म्म क म्म क म्म को दुः
के सम्मुख म्म क " अञ्जुद्विपो " गौडान्यां चादिये—

जं किंचि अवसिअं परपसिअं भमे पागे विणए
वेआयधे आजावे संलावे उघामणे ममामणे अंतरनी-
साए उवरिभामाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहोणं
सुहुमं वा थापणं वा तुद्वे जाणह अहं न जाणामि
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

इस के पीछे दो बार 'सुगुणारणा' देनी चादिये—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसो-
हिआए अणुजाह मे मिउमहं निसीहि अहोकार्यं कण-
संकासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसु-
भेण मे दिवसो वड्ढंनो। जत्ता मे जवणिज्जं च मे ता-
मेमि खमासमणो। देवसिअं वड्ढंमं। आवरिसआए पडि-
क्कमामि खमासमणां देवसिआए आसायणाए नित्ति-
सन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वददुक्कडाए
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्ब-
कालिण सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आ-
सायणाए जो मे अइआरो कयो तस्स खमासमणो।

पट्टिमामि निन्दामि गरिहामि अप्पारणं वीमि-
रामि ॥ १ ॥

इस के पीछे " आश्रियउउम्माण " को बोलना चाहिये
आश्रियउउम्माण, सीने माहम्मिण कुलगणे अ ।
जे मे पेइ कमाया, मन्वे निविहेण ग्यामेमि ॥ १ ॥
सव्यम्म समगमंयम्म भगवओ अंजलि करिअ सीने ।
सव्यं समावइत्ता, ग्यमामि मव्यम्म अहयंपि ॥ २ ॥
सव्यम्म जीयरात्तिम्म भावओ भम्मनिहिअनिअवि-
त्तो । मव्यं ग्यमावइत्ता, ग्यमामि मव्यम्म अहयंपि ॥ ३ ॥

इस के पीछे " करेमि भंते " को बोलना चाहिये—

करेमि भंते! सामाहणं सायत्तं जोगं पयस्यवामि,
जाय निषमं पञ्चुवामामि, दूयितं निविहेणं मणेणं वा-
याण वाणं, न करेमि न वारयेमि तस्म भंते! पट्टि-
मामि निन्दामि गरिहामि अप्पारणं वीमिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे " इच्छामि ठामि " को बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि वाउससग्गे जो मे देशस्सिओ अह-
आरो कओ पाइयो पाइयो मात्तस्सिओ उस्तुत्तो उ-
म्मग्गे अक्कणो अकरणिज्जे दुअभाओ दूयिअिअिओ
अग्गावारो अणिअिअिअिओ अत्तापगपाउग्गे माणे त्थ
इसणे परिक्कापरिजे सुणं सामाहणं । निणं सुभाणे
अउणं वत्तावाग्गे वण्हमणुअ्यवाणे निणं सुअुअ्यवाणे

चउण्हं सिक्खावयाणं पारमविहसन सावगम्मस्स जे
ग्घडियं जं विराडियं तस्स मिच्छामि दुक्कटं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बोल कर “ चारिगुणिनित्तं कोमि काउ-
स्तगं ” कहै इसके पीछे “ तम्म उरुगी ” बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोदी-
करणेणं विमद्दोकरणेणं पायाणं कम्माणं निग्घापण्डा-
ठामि काउस्तगं ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं द्दीण्णं
जंभाण्णं उड्डुण्णं वायनिसग्गेणं भमत्तिण्णं पित्तमु-
च्छाण्णं । सुहुमेहि अंगसंचालेहि सुहुमेहि खेलसंचा-
लेहि सुहुमेहि दिउमंचालेहि । एवमाहण्हि आगारेहि
अभग्गे अविराहिओ हुज्ज मे काउस्तगो । जाव अ-
रिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोमिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे दो “ लोगस्स ” का अर्था आठ नक्का
का काउस्तग करना चाहिये । इस के पीछे दर्शनशुद्धि क निमित्त
प्रकटरीति स “ लोगस्स ” बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मत्तित्थघरे जिणे । अरि-
हंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं
च पंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमण्हं सु-

पामं, जिणं च बंदप्पहं बंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्कदंतं,
 मोअल्ल मित्रंस पासुपुत्रं च । विमलमणुंतं च जिणं,
 घम्मं संनिं च बंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरे च मह्दि, बंदे
 सुणिसुच्छयं नमिजिणं च । बंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह
 वट्टमाणं च ॥ ४ ॥ एयं मए अभिधुआ, विहपरयमहा
 पहीण-जर-मग्णा । चउदीमेपि जिणायरा, तित्थयरा मे
 पसीयंतु ॥ ५ ॥ किन्निपबंदियमहिपा, जे ए लोगस्स
 उत्तमा मिद्धा । आग्गपोहिल्लभं, समाहिवरमुत्तमं
 दिंतु ॥ ६ ॥ बंदेसु निम्मलपरा, आइधेसु अहियं पया-
 सपरा । मागरयरगंभीरा, सिद्धा मिद्धि मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

मव्वलोए अरिहंतचेऽआणं करेमि काउरसगं ॥ १ ॥

बंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सज्जारवत्तिआए
 सम्माणवत्तिआए पोहिल्लभवत्तिआए निरुवसगव-
 त्तिआए सद्धाए मेहाए बिईए धारणाए अणुप्पेहाए
 वट्टमाणोए टामि काउरसगं ॥ १ ॥

अन्नथ उरुसिणं नीसमिणं खासिणं ह्रीणं
 जंभाइणं उट्टुणं पापनिसगोणं भमलिए पित्तमु-
 च्छाए सुहृमेहिं अंगसेचालेहिं, सुहृमेहिं सेजसंचालेहिं,
 सुहृमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
 पापिराहियो हज्ज मे काउरसग्गो । जाव अरिहंताणं

भगवन्तार्ण नमुफारंणं न पारंमि ताव कायं ठाणेणं मीरे
 भाणेणं अप्पाणं घोसिरामि ॥ १ ॥

यहा एक "लोगम्म " का कथना चार नरका का क
 स्थापना चाक्षिणे, मित्र ज्ञानशुद्धि के निमित्त "पुस्तककरीब
 बोलना चाक्षिणे—

पुक्खरवारदीवट्टे, धाण्डसंडे अ जंबूदीवे अं
 भरहेरवपविंदेहे, धम्माङ्गरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमन्ति
 मिरपडलविट्ठं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स । सीम
 धरस्स वंदे, पप्फांडियमोहजालस्म ॥ २ ॥ जाईजरान
 रणसोगपणासणस्स, कल्ल्याणपुक्खलविहालसुहाव
 स्स । को देवदाणवनरिंदगणविअस्स, धम्मस्स सारु
 बलव्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो नि
 णमए नंदी सया संजमे, देवनागसुवन्नकिन्नरगणास
 व्भुअ-भावधिण । लोगो जत्थ पइद्धिओ जगमिगं ते
 सुक्कमचासुरं, धम्मो वड्डुअ सासओ दिजयओ धम्मुत्तरं
 वड्डुअ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सगं ॥

इन के पीछे " वंर्यवत्तिआए " बोलना चाक्षिणे—

वंदणवत्तिआए पज्जणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए
 सम्भाणवत्तिआए घोहिलाभवत्तिआए निहवसगव
 त्तिआए मद्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए
 वड्डुमाणीए ठामि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अमृत्य " घोलना चाहिये—

अमृत्य जससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं टीण्णं
 जेभाइण्णं उड्डुण्णं चापनिसग्गेणं भमसिण्णं पित्तमुष्ण-
 णं सुहमेहि अंगसंचालेहि सुहमेहि गेहसंचालेहि,
 सुहमेहि दिट्ठिसंचालेहि, एयमाइएहि आगारेहि अमग्गो
 अपिराहिओ ह्ये मे काउस्सग्गो । जाय अरिहंताणं
 भग्गयंताणं नमुष्कारेणं न पारेमि तापं कायं ठायेणं घोणेणं
 छाणेणं अप्पाणं घोसिरंमि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक " सोमम्भ " का चयवा पार नवकार का
 काउस्सग्ग करना चाहिये । काउस्सग्ग पाकरके " मिट्ठाये बुद्धाय "
 को घोलना चाहिए - -

सिद्धायं बुद्धायं, पारगघायं परंपरगघायं । लोअ-
 म्भमुष्णायं, नमो स्या मन्वसिद्धायं ॥१॥ जो देवा-
 णवि देवो, जं देवा पंजली नममेति । तं देवदेवमहिचं
 मिरसा घं दे महाक्षरं ॥ २ ॥ इयोपि नमुष्कारो, जिणवर-
 यसाहस्यं यद्धमागहा, संसारसागराघो, तारेइ नरं च
 नारिं धा ॥ ३ ॥ उज्जिन-सिल-मिहरे, दिक्खा माणं नि-
 सीहिआ जसस । सं पम्मण्ण, र्हि, अरिठ्ठिनेमि नमंस्तामि .
 ॥ ४ ॥ अत्तारि अहं हस दो, य वंदिता जिणवरा पउ-
 प्पीसं । परंमठनिट्ठिअहा, मिट्ठा सिट्ठि मम दिसेणु ॥५॥

सुयदेवयाए करेमि काउस्सगं ।

अन्तथ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं ह्रीं
जंभांइएणं उड्डुएणं चायनिसग्गेणं भमलिए पित्त
अए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचाले
सुहुमेहिं दिट्टिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अम
अविराहिअो ह्रुअ मे काउस्सगो । जाव अरिहत
भंगश्रेणाणं नमुक्खारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मो
भायेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे एक नवकार का काउस्सग करना चाहिए
यदि गुरुजी नहीं तो एक श्रावक यहां काउस्सग को पार कर “
मोउहेत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसधुन्यः ” इस वाक्य को कह
नीचे लिखी हुई स्तुति को बोले-

सुयर्गशालिनी देवात् , यादशार्द्धी जिनोद्भव
श्रुतदेवी सदा मह्य-मशोपश्रुतरुम्पदम् ॥१॥

इस स्तुति को सुनने के बाद सब लोग काउस्सग पार,
के पीछे “ खित्तदेवयाए करेमि काउस्सगं ” इस वाक्य को
कर पूर्व लिखे हुए “ अन्तथ ” को बोलना चाहिये , तदन
पूर्व के समान एक नवकार का काउस्सग पार कर नीचे लिखी
स्तुति को बोलना चाहिये-

पामां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः आयकादयः ।

जिनाशां साधयन्तस्ताः, रक्षन्तु क्षोभश्रेयताः ॥ १ ॥

इस के पीछे सड़े हो गइ कर एक नयकार को बहनों चाहि
ये . तथा संडासा का प्रमार्जन करते हुए बैठ कर उड़े भांवर्यक
की मुद्रपती का पहिलेइन करना चाहिये , मुद्रपती को रोडकर
बगानो रख कर दो बार बंदना नीचे प्रमये देना चाहिये—

इच्छामि स्वमासमणोः यदिउ जायगिज्ञाए निसी-
हिष्णाए अणुजायाह मे मिउगहं । निमीटि । अहोकायं
कपसंकासं स्वमगिज्ञो मे किलोमो अण्पकिलेमाणं
पहुसुभेण मे, दिवसो वडकलां, जप्ता मे जवणिअं ए मे,
स्वामेमि स्वमासमणो देवमियं वडकलं आसस्सिपाए
पट्टिकमामि स्वमासमणार्ण देवसिष्णाए आसायणाए ति-
त्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणहुफडाए वणहुफडाए
कपहुफडाए कोहाए भाणाए भायाए लोभाए सव्व-
काटिपाए, सव्वमिच्छोवपाराए सव्वधम्माइकमणाए
आसायणाए जो मे अइआरो कअो तस्स स्वमामंमणोः
पट्टिकमामि निदामि मिरिहामि अण्पार्ण वोस्सिरामि ॥१॥

(यदि पक्षमकण पहिले न किया हो तो यहां पर लसे ले
लेना चाहिये) इस के पछानू “ इच्छामि अणुमदि ” इस को
बोल कर नीचे बैठ जाना चाहिये, यहां पर गुरुजी विद्वान
हो तो नीचे लिखी हुई “ नमोऽस्तु ” एक गाथा को
बोलें— नही हो तो आंकक नीचे

नमोऽर्हमिद्राचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

नमोऽस्तु घट्टमानाय, स्पट्टमानाय कर्मणा ।

तत्रपाचासमोदाय, परांजाय कुनीर्थिनाम् ॥ १ ॥

येषां विक्रचारविन्दराज्या ज्यायःक्रमकमला

दधत्या । सदशैरति सङ्गत् प्रशस्यं, कथितं सन्तु

षाय ते जिनेन्द्राः ॥ २ ॥ कषायनापादितजन्तुनिर्दि

करोति यो जैनसुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्ग

ष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टि मयि विस्तरो गिराम् ॥

तथा प्राविकाओं को "संमाग्दावा" की तीन गत

बोलना चाहिये—

संसारंदावानलदाहनीरं, सम्मोहबूलीहरणं स

रम् । मायारसादारणसारसारं, नमामि वीरं गिरि

रधीरम् ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलावि

लकमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमी

तानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥

धागार्धं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसा

रछलहरीसङ्गमागाहदेहम् । चूलावेले गुल्गाममणी

कुलं दूरपारं, मारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु

॥ ३ ॥

इस के पीछे "नमोऽस्तु" बोलना चाहिये एक प्र
नीचे लिखे हुए को बोले—

नमोऽस्त्यु णं अरिहंसाणं भगवन्नाणं ॥ २ ॥ (जाहगराणं
 नित्यपराणं सर्वसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-
 सीहाणं पुरिसवरपुंडरी आणं, पुरिसवरगंधहन्धीणं ॥ ३ ॥
 लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगदिआणं, लोगपईवाणं,
 लोगपञ्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अअपदयाणं, अअखुदयाणं,
 अअगदयाणं अअरणदयाणं अअदिदयाणं ॥ ५ ॥ अअमदयाणं
 अअमदेसिआणं अअमनायगाणं अअममारहीणं अअमवरचा-
 डरंतचयवहीणं ॥ ६ ॥ अअपट्टिहगवरनाणदेसणापरा-
 णं अअपट्टठमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जापयाणं तिघाणं
 तारयाणं बुद्धाणं पोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥
 सअवघूणं सअवदरिमीणं निवमपलमऊअमणात्तमअखय-
 मअयायाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामपेपं ठाणं संप-
 ज्ञाणं नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अह-
 या सिद्धा, जे अ अवरसंनिष्ठागाणं काले। संपट्ट अ अह-
 याणा , सअयं निघिहेणं अंदासि ॥ १० ॥

इच्छाकारेण संदिग्ध भगवन ! वृद्ध रतवन
 मरु ? ।

इस के पीछे आमत पर देह का " नमोऽरिहंसावापोषा-
 ध्यदसर्वसाधुभ्यः " इस को धोल कर कमसे कम ११ गायत्र्याले
 स्तवन को कहना चाहिये किन्तु यदि ग्याह गाथा वाले स्तवन से

छोटा कोई स्तवन बोला जावे तो उस स्तवन को बोलने के पीछे
 “ वनकनक ” बोलना चाहिये—

ॐ वरकण्यसंखविद्रुम-मरगयध न सप्रिहं विग
 मोहं । सत्तरि सयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वा
 ॥ १ ॥

यस स्तवन लिखा जाता है जिसे बोलना चाहिये—

श्री चिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवनम् ।

भविका श्री जिन विं व सुहारो, ध्यानमपरम आधा
 रे ॥ भ० ॥ श्री० ॥ जिनप्रतिमा जिस सारखी जाणो,
 करो शंका कोई । आगमवाणो ने अनुमारें, रा
 प्रीति सवाई रे ॥ भ० श्री० ॥ १ ॥ जे जिन विं व ह
 न जाणे, ते कहिये किम जाणे । भूला तेह अज्ञा
 भरिया, नहिं तिहां सत्य पिछाने रे ॥ भ० श्री० ॥ २ ॥
 अम्यह आषक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक
 विविध परें जिन भगति करंता, पाप्मा धर्म विवेक
 ॥ भ० श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगनें जोतां, जो
 निधय उपगार । परमारथ गुण प्रकटे पूरण, जो
 आर्द्रकृमार रे ॥ भ० श्री० ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा आधा
 जलधर, छे बहु जलधि मज्जार । ते देखी महला म
 स्यादिक, पाप्मा विरति प्रकारे ॥ भ० श्री० ॥ ५ ॥ वाप

अंगे जिन प्रतिमा मां, प्रकट पणे अधिकार । मूर्याम-
 तुरे जिनपर पूज्या, राघवसेणी मन्हार रे ॥ भ० ॥ श्री०
 ॥ ६ ॥ दशमे अंगे अहिंसा शाली, जिन पूजा जिन-
 ताज । एहवा आगम अरथ मरोड़ी, करिये येम अ-
 काज रे ॥ भ० श्री० ॥ ७ ॥ समकित धारी मनी द्रौपदी,
 जिन पूजा मन रंगे । जो जो एहो अरथ विचारी,
 उहे जाला अंगे रे ॥ भ० श्री० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिन
 जिनपर पूज्या, कीर्था दित धिर शाली । द्रुप्य भाष
 विहूँ भेदें कीर्ती, जीयाभिगम छे शाली रे ॥ भ० श्री०
 ॥ ९ ॥ इत्यादिक यह आगम साखें, कोई शक्य मन कर
 जो । जिन प्रतिमा देखी जिन नपलां, येम घणो पित
 घरजो रे ॥ भ० श्री० ॥ १० ॥ विन्तामणि मधु पात्र परा-
 यं, सरथा हो जो मपाई । श्री जिनलाम सुगुरु उप-
 देशे, श्री जिनचन्द्र मपाई रे ॥ भ० श्री० ॥ ११ ॥

इस के पंजे एक एक नाममात्र ही आचार्य उपाध्याय और
 सर्व साधुओं को वन्दन का विरा धौआ म्प्रासक्त देवा नीचे लि-
 खे हुए पाठ को संमना आदिदे—

इच्छाकारेण कीदमिह भगवन् ! देवस्त्रियसापत्ति-
 त्तविदुष्टिनिमित्तं काटरसम्भो बहो ! इष्टं, देवस्त्रियसा-
 पत्तित्त विदुष्टिनिमित्तं करेमि काटरसम्भो ॥ १ ॥

इस के पीछे “ अन्नत्थ ” बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिणं नीससिणं खासिणं छी-
 णं जंभाइणं उड्डुणं वायनिसग्गेणं भमलिए पि-
 त्तमुच्छाणं । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेदसं-
 चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं । एवमाइएहिं आगा-
 रेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
 अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव व-
 टाणेणं मोणेणं माणेणं अप्पाणं थोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे चार “ लोगस्स ” का या सोलह नवकारं
 काउस्सग्ग करना चाहिये, काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोग
 बोलना चाहिये—

लोगस्स उल्लोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरि-
 ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजि
 च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपा-
 जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्फहं
 मीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिण-
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंधुं अरं च महिं, वं
 सुणिसुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं त-
 वदमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मणं अभियुआ, विट्ठपरयमल-
 वहीणजरंमणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थंपरा ।

पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिपवंदिय महिपा, जे ए लोगस्स
उत्तमा सिद्धा । आद्यगणोहिलामं, समाहियरमुत्तमं
दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आद्येसु अहियं पया-
मपरा । सागरघरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छाकारेण मंदिरुह भगवन ! खुदांघरघ डडा-
वगत्यं करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे " अन्नथ " बोलना चाहिये—

अन्नथ अससिणं नामसिणं खामिणं ह्रीणं
जंभाइणं उहूणं घायनिसग्गेणं अन्नल्लिए पित्तमु-
च्छाण । सुहूमेहि अंगमंघालेहि रुहूमेहि गेलसंघा-
लेहि सुहूमेहि दिट्ठिसंघालेहि । एवमाइएहि आगारेहि
अभगो अघिराहिओ हृद्ध मे काउस्सगो । जाय अ-
रिहंताणं भगवंताणं नमुफारेणं न पारेणि । भाय वज्रं
ठाणेणं मोणेणं ज्ञाणेणं अप्पागं घामिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे यह " लोगस्स " का अथवा मोहाह नह-
काए का काउस्सग करना चाहिये । इस के बाद लोगस्स बोलना
चाहिये—

लोगस्स उज्जाअगरं, धम्मनिग्घवरं जिणे । अरि-
हंते कित्तइस्सं, घउधीमंवि वेयली ॥ १ ॥ उमममजिअं
य वंदे, संभयमभिणंदणं य सुमटं य । पडमप्पई सु-
पासं, जिणं य चंद्रप्पहं वंदे ॥ २ ॥ इतिहि य पुक्कदंनं,

सौम्यल सिद्धं स वासुपुञ्जं च । विमलमण्डलं च जिह्मं
घर्मं संति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभुं अरं च महिं, वी
मुणिसुव्ययं नमिजिणं च । वंदामि रिट्टनेमिं, पासं त
यद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभियुजा, विहपरपम
पदीण-जर-मरणा । चडवीसंपि जिण्वरा, तित्यपरा मे
पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदियमहिपा, जे ए सोणत्त
उत्तमा सिद्धा । आग्गमरोहिलाभं, सनाहिवामुत्तं
दित्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलपरा, आइघेसु अहियं प
सपरा । सागरवरगंभारा, सिद्धा सिद्धिं मम दित्तु
॥ ७ ॥

इस के पीछे एक तमामग का दे कर वांगना बहिदे-

इच्छाकारेण संदिमह भगवन्! चैत्यवन्दन कर्त्तुं।

श्री यंभणापार्श्वनाथजी का चैत्यवन्दन ।

श्रीसेशनदिनातटे पुनवरे श्रीमत्तम्भने स्वगिरां,

श्रीरूपामपदेवगुरिविबुधाधीशः समारोपितः ।

संमिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवकलैः स्फूर्जत्प्रणापहृषः,

पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथपनां निर्यं मनो पाण्डितम् ॥१॥

आधिर्यापिठरो देवो, जीरायर्हो दिरोमणिः ।

पार्श्वनाथो जगन्नाथो, निर्यनाथो नृणां श्रिये ॥२॥

इस के पश्चात् पूरे शिवे हुए "ज्योतिष" कर्त्तुं २६ के

बोलना चाहिये, तदनन्तर पूव लिखे हुए " जायति चेद्महं " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तदनन्तर इति लिखे हुए " जा-
 येन केचि नः " इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये, तत्पश्चात् " न-
 शोऽईरित्तडाचार्योपाश्रयमर्थमभुञ्ज " इस वाक्यको बोल कर पीछे
 लिखे हुए " उपमगोहस्तुतः " का वाक्य लिखे, इन के पीछे
 पूर्व लिखे हुए " अथ बीजम् " इत्यादि पाठ का बोलना चाहिये,
 इन के पश्चात् गणनामस्य का देकर तथा एतत्तः को मना कर नीचे
 लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

मिरिधंभगुयद्विगुपासस्तामिणो न्नेसतित्थसामीगं ।
 नित्थसमुत्तङ्ग कारगं, सुरासुराणं च सध्वेसि ॥ १ ॥
 एम अहं सरणत्थं पाउस्सगं करेमि नत्ताण ।
 भर्त्ताण गुणासुद्विगुसं पस्स ममुत्त निमित्तं ॥२॥
 श्रीधंभणापार्भनाधजा पाराधया निमित्तं करेमि
 पाउस्सगं ॥ १ ॥

वेदणवत्तिआण पूअणवत्तिण मत्तारवत्तिआण
 सम्माणवत्तिआण पोहित्ताभरत्तिआण निरयमग्गव-
 त्तिआण सट्ठाण भेहाण धिरेण धारणाण अणुप्पेहाण
 वट्टमार्णाण टामि पाउस्सग ॥ १ ॥

असत्थ उअवनिणणं नीसमिणणं ग्यामिणणं ह्राणणे
 जंभाइणं उट्टणं दापनिमग्गेणं भमत्तिणं पित्तसु-
 प्पहाणं सुहमेति अममं चारेहि, सुहमेति वेलमंचालेहि,

सुष्टमेहिं दिद्विसंचालेहिं, एवमाहृणहिं आगारंहिं अमतां
 ध्विराहिंश्रो हृच्च मे काउस्मगो । जाव अरिहंतयं
 भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेयां मोणं
 कायेयां श्रप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इस के पीछे चर “ लोगस्ते ” का या सोलह नवकार का
 काउस्साग करना चाहिये, काउस्साग पाठ करके प्रगट लोका
 बोलना चाहिये—

लोगस्ते उज्जाअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिं
 ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिणं
 च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्यहं सुपामे
 जिणं च चंदप्यहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुष्पदंते
 मीअलसिज्जंस वासुपुञ्जं च । विमलमणंतं च जिणं
 धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च महिं, कं
 मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिद्विनेमि, पासं ता
 वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिधुआ, विहपरवमला
 पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिण्वरा, तिन्धपरा मे
 वसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिपयंदियमहिणा, जे ए लोगस्ते
 उत्तमा सिद्धा । आग्गयोहिलाभं, समाहिवरमुत्तं
 दित्तु ॥ ६ ॥ वंदेसु निम्मलयरा, आड्वंसु अहियं पया
 मपरा । सागरयरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु
 ॥ ७ ॥

इन के पीछे नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

श्रीचारासीगच्छशृङ्गारहार जह्मयुगमधान भद्रा-
रफ दादाजी श्रीजिनदत्तमूरिजी चारिघ्नचूडामणि जी
आराधवानिमित्तं करेमि काउस्सगं ॥ १ ॥

इस के पीछे " सलस्य " बोलना चाहिये—

अग्रन्थ जन्मनिष्णं नीससिष्णं खासिष्णं ली-
ष्णं जंभाहृष्णं उहृहृष्णं वायनिसर्गीष्णं भमलिए पि-
त्तमुच्छ्राए । सुहृमेहि अंगसंचालेहि सुहृमेहि खेलसं-
चालेहि सुहृमेहि दिद्विसंचालेहि । एवमाहृएहि आगा-
रेहि अभगो अविराहिजो हुञ्ज मे काउस्सगो । जाय
अरिहंताणं भगवंताणं नमुद्धारेणं न पारंमि, ताव कायं
ठाणेणं मोयेणं मत्तणेणं जप्पाणं धोसिरामि ॥१॥

इस के पीछे एक " लोगस्म " का अर्थवा चार नवकार का
काउस्सग करना चाहिये । काउस्सग पाठकके पीछे प्रकृत
" लोगस्म " को बोलना चाहिये

लोगस्स उज्जोअगरं, धम्मनित्यपरं जिणे । अरि-
हंते पित्तहरसं, चउथांसं वि वेयली ॥१॥ उमभमजिअं
च वंदे, संभयमभिणंदणं च सुमहं च । पउमप्पहं सुपासं,
जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुधिदि च पुप्फहंते,
मोअलमिअंस वासुपुअं च । विमलमणंते च जिणं,
धम्मं संनि च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंगुं अरं च मद्धि, वंदे

मुणिसुख्यं नमिजिणं च । वंदामि रिदनेमि, पामं
 वदुमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभियुआ, विहयस्य
 पहीणजरमणा । चउदीसं पि जिगुवरा, तित्यया
 पसीपंतु ॥ ५ ॥ कित्तिप वंदिय महिया, जे ए लोणल
 उत्तमा मिद्धा । आरुणयोहिलाभं, समाहिवसुतम
 दितु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आचिसु अहियं प
 मपरा । सागरवरगंभीरा. मिद्धा मिद्धि मम दिमं
 ॥ ७ ॥

श्रीशैलसंगच्छशृङ्गारहार जङ्गमयुगप्रधान भद्र
 रकटादाजी श्रीजिनकुशलमृगिजी चारित्रचुडामणिजी
 आराधना निमित्तं करेमि काउस्मरं ॥ १ ॥

३५ का कास्मरा की विधि उक्त मुक्त जानने ।

इन्द्राकारेण मंदिसह भगवन ! चैन्यवन्दन करुजी !

चउकसायपडिमदुद्धणु, दुज्जयमयणयाणमुमु
 रणु । मरुपिपंगुवसु गयगामिट. जयउ पास भुयण
 नयगामिट ॥ १ ॥ जमु नरुसंनिकडणमिणिदु
 मोहह कणमणिशिरणालिदुद । नं नचजलहर मदि
 ह्यलंछिट, मां जिगु पासु पयच्छड वंछिट ॥ २ ॥
 अहेन्तां भगवन् इन्द्रमहिमाः मिद्धाश्च मिद्धिभिनाः.
 शाचायां जिनजासनांनिकराः पुज्या उणध्यायराः।
 श्रीमिद्धान्नगुवाटक्य मुनियग रक्षत्रयागधकाः.

पथेने परमेश्विनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु यो महत्तम् ॥१॥

इस के पीछे पूर्व निम्न हुए - नमोऽभ्युपे " इत्यादि पाठ से
का " उप दीप्यते " इत्यादि पाठ तक सप्तम पाठ खोलना चा
हिये । उस के पीछे यदि शीतक का अथवा चिन्ती का प्रकाश
रा हो या " इत्यादिदिना " जम्ना चाहिये -

इत्यथ इति वा पाठ, तस्य उग्री वा पाठ, अथवा वा पाठ सोम
तम् " इत्यादि " वा अथवा वा नवरत्न वा काकुत्स्थम्
जम्ना चाहिये, वा " इत्यादि वा वा क. " इत्यादि " प्रत्ये गीतिसे
अथवा भाविते, मि सामाधिक को पानना चाहिये, यह प्रमाण में
सामाधिक पानने की विधि प्रमाणों से लेना चाहिये । तथा उग्री
की नीचे लिखा हुआ भावन की खोज चाहिये

श्रीजिनकुशलसूरिजी महाराज का स्तवन ॥

दर्शन पाया पाया दर्शन पाया ने, कुशलसूरिधर
सुन्दर ॥ ६० ॥ श्लोक ॥

मन्त्रा जिह्वापर विद्या सुन्दर जेनमिरी है माना
। तद्गत गणा गोत्र में त्वाया त्वाजेह जाया रे ॥ ६०
॥ १ ॥ ज्ञान दानादि गुण में अष्टहृत् और्य सुषेता
दिपाया ने । अनेक उपायें मुझ को उपायें गीर्वाण
आया ने ॥ ६० ॥ २ ॥ स्थान स्थान में परदा सुन्दर
अहृ मन आया ने । निरति निरर्था शुभ करत सुन्दर

हृषे न माया रे ॥ ६० ॥ ३ ॥ चरण शरणा गुरुराज तु-
 म्हारे भविजन को सुख दाया रे । ऐसे चरणों में शीस
 नमा के आनन्द पाया रे ॥ ६० ॥ ४ ॥ चरण की सेवा
 कर्म खपेवा गुरुवर घ्याया रे । घ्यायो रु मंगल गावो पा-
 ओ धांझित माया रे ॥ ६० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ने अर्ज
 में करता सङ्ग सकल सुख दाया रे । जिन शासन उ-
 जवालो स्वामी जय जयकार वर्त्ताया रे ॥ ६० ॥ ६ ॥
 माशिष्यकारी विप्रनिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुख
 सागर ने झील झील के क्षेमार्णव गुण गाया रे ॥ ६० ॥ ७ ॥
 ॥ इति देवनिषपटिकमणविधि संपूर्ण ॥

दश्याँ पाठ ।

पञ्चस्वाण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याख्यान ।

जो मनुष्य धीरे धीरे अपने को सँभालता हो उस सोने के सिक्के
 अनुमा प्रत्याख्यान को जाना चाहिये तथा यदि वह पौष्टी यदि
 हा प्रत्याख्यान कान से हो तो उस "नशकारसिद्धि" के स्थान में
 "दोर्मिष" के दिग्भेद को बोलना चाहिये ।

नशकारसी का पञ्चस्वाण ।

उगाय गुरुं नमुकारसिद्धिं मुद्रिसिद्धिं पपवसात्,
 बडविष्वेनि ध्याहारं—अहमं पापं एतद्दमं एतद्दमं अप्यन्धना-

भोगेणं सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्विति-
 यागारेणं विगई ओपचक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं लेशलेवेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं
 महुच्चमस्सिखणं पारिट्ठायणिपागारेणं महत्तरागारेणं,
 देसायगासिपं भोगपरिभोगं पचक्खाइ अण्णत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्विति-
 पागारेणं घोसिरामि ॥ १ ॥

जो चौदह निम्मों का धारण न करता हो उसे न्यकारसी
 आदि का प्रयत्न करने चाहिये, जो कि निम्नलिखित है—

देसावगासिकका पञ्चक्खाण ।

देसावगासिपं भोगं परिभोगं चा पचक्खाइ एक
 कारण एक योग तीसरे भागो अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वितिपागारेणं घो-
 सिरामि ।

उग्गए सुरे नमुक्खारसहियं पचक्खाइ, चउच्चिहंपि
 आहारं अत्तणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं घोमिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाढपोरसी का पञ्चक्खाण ।

पोरिसिपं मुट्टिसहियं पचक्खामि उग्गए सुरे चउच्चिहंपि
 आहारं अत्तणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

हृष्ये न माया रे ॥ ६० ॥ ३ ॥ चरण शरण गुरुराज तु-
म्हारे भविजन को सुख दाया रे । ऐसे चरणों में शोस
नमा के आनन्द पाया रे ॥ ६० ॥ ४ ॥ चरण की सेवा
कर्म खपेया गुरुवर ध्याया रे । ध्यायो नु मंगल गावो पा-
ओ वाञ्छित माया रे ॥ ६० ॥ ५ ॥ कर जोड़ी ने अर्ज
में करता महु सकल सुख दाया रे । जिन आसन उ-
ज्ज्वला स्वामी जय जयकार घर्त्ताया रे ॥ ६० ॥ ६ ॥
माक्षिष्यकारी विघ्ननिवारी पूर्ण गुरु को पाया रे । सुख
सागर ने झील झील के शोभागीय गुण गाया रे ॥ ६० ॥ ७ ॥

॥ इति देवभियर्पाटिकमण्यधिधि संपूर्ण ॥

दशमो पाठ ।

पञ्चस्राण-वर्णन ।

दिन के प्रत्याग्यान ।

आ सन्त्य भीष्ट निपत्तों को सेवाभक्त हो उम नीने निमं
सन्त्य प्रत्याग्यान को काना भावि । उम पदि बहु लोणी भादि
हा प्रत्याग्यान काना पद ला उम 'नाहरमद्विषे' के स्वान से
'संभ्रम' भादि उम का वेगना भादि ।

नवकार्मों का पञ्चस्राण ।

उमाग मूँ नमुहारमद्विषं मुद्विमद्विषं पञ्चस्राणं,
पट्टिविद्विषाहारं—उममं पार्थ एतद्मं एतद्मं जप्यन्थना-

भोगेणं महत्तरागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयति-
 पागारेणं विगईं पञ्चखाइ अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं ऐशलेवेणं गित्थसंमिद्धेणं उवित्तविदेगेणं
 पट्टपमवित्तणं पारिट्ठाणियागारेणं महत्तरागारेणं,
 देसावगासिणं भोगपरिभोगं पञ्चखाइ अण्णत्थणा-
 भोगेणं महत्सागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयति-
 पागारेणं योमिरामि ॥ १ ॥

अं पौष्ट निरमो का धाम्य न कर्ता हो उसे नयकारसी
 चादि का द्रव्य स्थान करना चाहिये, जो कि निम्नलिखित है—

देसावगासिकका पञ्चखाण ।

देसावगासिणं भोगं परिभोगं वा पञ्चखाइ एक
 करण एक पांग तीसरे भांगे अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाह्वयतिपागारेणं यो-
 मिरामि ।

उग्गए सुरे नमुक्कारसहियं पञ्चखाइ, चउट्ठिव्हं पि
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं योमिरामि ॥ १ ॥

पोरसीसाढपोरसी का पञ्चखाण ।

पोरिसिणं मुट्ठिमहियं पञ्चखामि उग्गए सुरे चउट्ठिव्हं पि
 आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं

सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामोहेणं साहु
 षेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं विगईओ पचक्ख
 अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेवाल्लेवेणं गिहत्थ
 सिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिण्णं, महत्तरा
 रेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वंसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोरसी के प्रत्याख्यानको जानना चाहिये

पुरिमड्ड अवड्ड का पचक्खण ।

सुरे उगए पुरिमड्डं अवड्डं वा पचक्खिण्णं पडुच्च
 हंवि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ
 भोगेणं सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामोहेणं सा
 षण्णेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वि
 गईओ पचक्खिण्णं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं ले
 वेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पडुच्चमरि
 ण्णं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वंसिरा
 मि ॥ ३ ॥

एकासण विआसणा का पचक्खण ।

वंसिरामि साठवंसिरामि वा पचक्खिण्णं उगए ए
 वडुच्चिहंवि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण
 त्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं पच्छपण्णकालेणं दिसामो
 हेणं साष्टपण्णेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं

पिध्यासुणं वा पचनत्वाद् द्रुविहं त्रिविहं वि आहारं अक्षुणं
 खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
 रिआगारेणं आइइणपसारेणं गुरुअब्भुट्टायेणं पारि-
 ट्ठादणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागा-
 रेणं विगईओ पचनत्वाद् अत्तत्थणाभोगेणं सहसागा-
 रेणं लेशालेवेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उद्विखत्तविवेगेणं पदु-
 चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
 धोस्सिरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण वा पचनत्वाण ।

धोरिसि साडधोरिसि वा पचनत्वाद् अण्णत्थुं खुरे
 पडच्चिहं वि आहारं असुणं वाणं खाइमं साइमं
 अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णफालेणं
 दिसामोहेणं साहुय्येणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
 एकासणं एगट्ठाणं पचनत्वाद् द्रुविहं त्रिविहं पडच्चिहं वि
 आहारं असुणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं सागारिआगारेणं गुरुअब्भुट्टायेणं पारिट्ठाव-
 णियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं
 विगईओ पचनत्वाद् अत्तत्थणाभोगेणं सहसागारेणं ले-
 शालेवेणं गिहत्थमंसिद्वेणं उद्विखत्तविवेगेणं पदुचमक्खि-
 एणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं धोस्सिरामि

सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं साहु
 येषां सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं विगईओ पचक्खा
 अत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं लेयालेवेणं गिहत्थ
 सिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पट्टुचमक्खिणं, महत्तरा
 रेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं वोसिरामि ॥ २ ॥

इसी प्रकार साठ पोरसी के प्रत्याख्यान को जानना चाहिए

पुरिमड्ड अवड्ड का पचक्खाण ।

सुरे उग्गाए पुरिमड्डं अवड्डं वा पचक्खाणं पड्डि
 हंवि आहारं असणं पाणं साइमं साइमं अत्थणा
 भोगेणं सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं सा
 येषेणं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं वि
 गईओ पचक्खाणं अत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं ले
 खेवेणं गिहत्थसंतिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पट्टुचमक्खि
 णं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं वोसिरामि
 ॥ ३ ॥

पकासण विआसणा का पचक्खाण ।

वोरिमि साठोरिमि वा पचक्खाणं उग्गाए प
 ड्डिअहंवि आहारं असणं पाणं साइमं साइमं अत्थ
 णाभोगेणं सहस्रागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामो
 हेणं सायुक्खेणं महत्तरागारेणं सन्वसमाहिवत्तिपागारेणं पचक्खा

विष्मासनें वा पचयत्वाद् दृविहं त्रिविहं वि आहारं असणं
 खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागा-
 रिआगारेणं आउट्ठणपसारेणं सुकअन्नुट्ठायेणं पारि-
 ठावत्थिपागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागा-
 रेणं विगईओ पचयत्वाद् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागा-
 रेणं लेशलेयेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पटु-
 चमक्खिएणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 वोसरामि ॥ ४ ॥

एकलठाण का पञ्चक्याण ।

पोरिसि साटपोरिसि वा पचयत्वाद् उग्गए सुरे
 पउच्चिहंपि आहारं असणं पार्णं खाइमं साइमं
 अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णफालेणं
 दिसामोठेणं साट्टुययणेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 एकसणं एगट्ठाणं पचयत्वाद् दृविहं त्रिविहं पउच्चिहंपि
 आहारं असणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सह-
 सागारेणं सागारिआगारेणं सुकअन्नुट्ठायेणं पारिहाव-
 णिपागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं
 विगईओ पचयत्वाद् अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं ले-
 शलेयेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पटुचमक्खि-
 एणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिपागारेणं वोसरामि
 ॥५॥

आंबिल का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि साढपोरसि वा पञ्चकखाइ उगाए सूरं चउ-
 व्हिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण-
 त्पणाभोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिसमोहेणं
 साहुवपणेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं आपंबिलं पञ्च-
 कखाइ अणत्पणाभोगेणं सहसागारेणं लेवाल्लेवेणं मिह-
 त्यसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणं
 महत्तरागारेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पञ्च-
 कखाइ तिहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण-
 त्पणाभोगेणं सहसागारेणं सागारियागारेणं आउट्ठण-
 सारेणं गुरुअब्भुट्टाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्त-
 रागारेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं घोसरइ ॥३॥

नीवी का पञ्चस्वाण ॥

पोरसि साढपोरसि वा पञ्चकखाइ उगाए सूरं चउ-
 व्हिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्प-
 णाभोगेणं सहसागारेणं पछण्णकालेणं दिसामोहेणं सा-
 हुवपणेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं निव्विगडयं पञ्च-
 कखामि अणत्पणाभोगेणं सहसागारेणं लेवाल्लेवेणं मि-
 हत्यसंसिद्धेणं उक्खित्तविवेगेणं पट्टुच्च मक्खिणं पारि-
 ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सञ्चसमाहिवत्तियागारेणं

एकाम्बुजं पञ्चदशमं त्रिचिह्नं पि आहार-असर्णं स्वाह्मं
 साह्मं अण्णत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं सागारिआगा-
 रेणं आउट्टणपम्भारेणं शुरुअम्भुदाम्भेणं पच्छसकालेणं म-
 हत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं षोसिरामि ।

चउच्चिहाहार उपवास का पञ्चकखाण ।

सुरे उग्गण अम्भत्तट्टं पचक्खामि चउच्चिह्निं पि आ-
 हारं असर्णं पाणं, स्वाह्मं साह्मं अण्णत्थणाभोगेणं
 सहस्रागारेणं महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तिपागारेणं
 षोसिरामि ॥ ८ ॥

निविहाहार उपवास का पञ्चकखाण ।

सुरे उग्गण अम्भत्तट्टं पचक्खामि त्रिचिह्निं पि आहारं
 असर्णं स्वाह्मं साह्मं अण्णत्थणाभोगेणं सहस्रा-
 गारेणं पाणहारपोरिमिं साटपोरिमिं पुरिमट्टं अचट्टं
 वा पचक्खाह्मं अण्णत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं
 पच्छसकालेणं दिसामोहेणं माह्वयपणेणं सव्यसमाहि-
 वत्तिपागारेणं षोसिरामि ॥ ९ ॥

दत्ति पञ्चकखाण

पोरिमिं साटपोरिमिं पुरिमट्टं अचट्टं वा पचक्खामि
 उग्गणं सुरे चउच्चिह्निं पि आहारं असर्णं पाणं स्वाह्मं
 साह्मं अण्णत्थणाभोगेणं सहस्रागारेणं, पच्छसकालेणं

दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्यसमाहिवत्तियागारेणं
 एगासणं एगट्ठाणं दत्तियं पचक्खामि तिविहं चउव्वि-
 हंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थ-
 णाभोगेणं सहसागारेणं सागारि आगारेणं गुरुअब्भुद्धा-
 णेणं महत्तरागारेणं विगईओ पचक्खाइ अन्नत्थणा-
 भोगेणं सहसागारेणं लेवालेव्वेणं गिहत्थसंसिद्धेणं उ-
 व्वित्तविवेगेणं पडुच्चमक्खिण्णं महत्तरागारेणं सव्य-
 समाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥१०॥

रात्री के पचक्खाण ।

चउव्विहाहार का पचक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खाइ चउव्विहंपि आहारं असणं
 पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं
 महत्तरागारेणं सव्यसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ।१।

दुविहाहार का पचक्खाण ।

दिवसचरिमं पचक्खामि दृविहंपि आहारं असणं
 खाइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं
 सव्यसमाहिवत्तियागारेणं वोसरामि ॥ २ ॥

पाणहार का पचक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पचक्खामि अन्नत्थणाभोगे-

ॐ महासागारेणं महत्तरागारेणं सच्चसमाद्विपत्तिपाग-
रेणं दोसरामि ॥ ३ ॥

॥ ग्यारहव्यां पाठ ॥

। स्तवनसंग्रहः ।

। अथ श्री सद्गुरुगुणाष्टक ।

भजामि पूज्यं च नमामि नित्यं,

दक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।

पथाभिधानं किल सद्गुणीयं,

तद्वत् स्वरूपं शुभभाषभाष्यम् ॥ १ ॥

पिता बुद्धीनय मनःसुखाख्यः,

सुशीलधर्मां जननी हि जेती ।

आद्रीश्वरेश्वरः सुखलालसञ्ज्ञो,

प्राप्तः प्रसिद्धः सरसंति नाम्ना ॥ २ ॥

प्राद्यक्षचारी जिनधर्मरागी,

सम्पत्त्यपारी विरतिप्रभावी ।

संन्यज्य संसारमसारमृद्धी,

रक्षाकराट्यस्य गुरोश्च पार्श्वीत् ॥ ३ ॥

चारिश्रमादाय रुदा विहारी,

विनाऽतिचारं यतिधर्मधारी ।

श्रीमान् जिनाक्षो गुणभूतपोत्तं,

संसारवाराध परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिमत्नी कुमतिप्रणाशी,
 खलप्रबोधी शुभमार्गदर्शी ।
 सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
 गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु धीरः ॥ ५ ॥
 रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
 जीवोपकारी सुखसागराख्यः ।
 सन्पार्थिवक्ता सुजनाभिनन्द्यः,
 साधुप्रभाषोऽज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
 अन्तारिपून् पाल्यपरिग्रहादीन्,
 त्यागी निरागी भविशर्मकारी ।
 जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
 एभिर्गुणैः सन्पथमाजगाम ॥ ७ ॥
 श्रेयोऽप्यसिन्धो हृदिनामुपेन,
 आनन्ददार्थी शुभमावभक्तिम् ।
 कुर्यन्ति लोका नवनत्यसिद्धि,
 ते बहूनां वै हृतमःशुश्रुन्ति ॥ ८ ॥

गिरिविर्णं वृत्तम्—

गृह्णन्ती केशवाम् मतिशुभगुणाधारसरणि,
 गणापीड ! श्यामिन ! गुणवद्बद्धे भवतसे ।
 कथं मोक्षस्य मे तत्र शुभगुणा मङ्गलकराः,

गुरोः पूर्णान्धेयं चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥६॥

श्री कुशलसूर्यष्टकम् ।

शिवरिणी—सुखं सर्वां रूपद्रुसति पदयोरेष्य वदने,

चिनिद्रा पागीशो दृढपकरुले संविदधिकम् ।

विरागः सर्वाङ्गेप्यपि च भगवद्भक्तिरनिर्घा,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेशस्य चरणौ ॥७॥

निदि रवापार्थिनं तनुदिनमधीनो रुमयिनं,

परं वापीलक्ष्म्यो-त्रिलयमपि तद्दाननिपुणौ ।

सदा र्वा वल्ले जयत इय पापोजयुगलं,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेशस्य चरणौ ॥८॥

क्षिपन्तो मां प्रेक्षां सरस्वितृषोर्षी मृदुलयोः,

जपादुपगभासी किरुलयजिभाशेषमहसी ।

लसद्भोग्यालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीमदनयोः,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेशस्य चरणौ ॥९॥

सुरेभ्यः स्वःश्रेभ्यः कतिपयदिनेभ्यः कलमयो,

कदाचिदस्ते द्राक् श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।

सुरर्तुं स्वपत्न्या र्वा मुधजनसुखेष्वा भुविगर्भौ,

समृद्धपर्यं वन्दे कुशलगुरुदेशस्य चरणौ ॥१०॥

सुररीस्यावन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,

१ " परमजयोः स्वःश्रेभ्यः " इति पाठो-त्तरम् ।

सदा कामं पीतामृतरसपरांशैरपि गिरः ।
 श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशन्ति स्थिरधि-
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 निधी सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
 मृदुस्निग्धौ शाणायुपचितनखौ गृहघुटिकौ
 समानौ प्रोक्तुङ्गनादपदशाखाविलसितौ,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ।
 ययोरर्चा सते धनसुखधरा धामरमणी,
 शरीरारोगत्यं विनयनपविद्यानिपुणताम्
 गुणानौदार्यादीनिपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 भयंकारागारामयसमरपारिन्द्रफणभृन्-
 महापारावारधिरदयनवैश्वानरभयम् ।
 न दारिद्र्याशुप्रमद्गदललां परस्मरणतः,
 समृद्धयर्थं यन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥
 । दार्दुलविकीरितम् ।
 इत्ये श्रीजिनवज्रपुरिरमिने दिव्याष्टकं सत्तुतोः
 गुण्ये मन्त्रमने मनोहकलादे पावीषविष्यमन्-
 मत्तया यः पठति प्रनाममये सर्वत्र तस्य
 पर्याभूतयो भवन्ति गतने लक्ष्मीधिरादापिनी ॥

श्रीगौतमदेवस्तवनम् ।

श्रीरन्द्रभूति वसुभूतिपुत्रं, पृथ्वीभयं गौतमगोप्र-
 रदाम् । स्तुवन्ति देशाः सुरमानचेन्द्राः, स गौतमो वच्छ-
 तु वाञ्छितं मे ॥ १ ॥ श्रीवर्द्धमानात् त्रिपदीमयाप्य,
 मुहूर्तमात्रेण गृहानि येन । अहानि पूर्वाणि वतुर्द-
 शापि, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ २ ॥ श्रीवीर-
 नाचेन पुरा प्रगीतं, मथं महाऽऽनन्दसुखाय परम् । एषा-
 पन्त्यमीश्वरियराः समघाः, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं
 मे ॥ ३ ॥ परपाभिधानं मुनयोऽपि मयं, गृह्णन्ति भिक्षाभ्रम-
 णस्य काले । मिष्टास्रवानाम्बरपूर्णशामाः, स गौतमो व-
 च्छतु वाञ्छितं मे ॥ ४ ॥ अष्टापदाद्वा गगने स्वदासया,
 पर्यौ जिनानां पदबन्दनाय । निशम्य तीर्थातिशयं सुरे-
 भ्यः, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ५ ॥ त्रिपद्मसं-
 हयाशततापसानां, तपःकृद्दानामपुनर्भवाय । अक्षी-
 णालब्ध्या परमाद्दामा, स गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे
 ॥ ६ ॥ रुद्रक्षिणं भोजनमेव देयं, ग्राहमिहं रुद्रसप-
 र्शयेति । वैषल्यपत्रं प्रददी मुनीनां, स गौतमो वच्छतु
 वाञ्छितं मे ॥ ७ ॥ शिवंगमे भर्त्तरि वीरनाये, युगाय-
 धानत्यमिर्हृद्य मत्या । पदाभिदेहो विदधे सुरेन्द्रैः, स
 गौतमो वच्छतु वाञ्छितं मे ॥ ८ ॥ ब्रह्मलोपपदीजं शुभहा -

नपीजं, परमात्मर्षाजं परमेष्टिर्षाजम् । गङ्गामम
 सुरेन्द्रैः, स गीतमो गच्छतु वाञ्छितं मे ॥१॥
 तमस्थाष्टरुमादरेण, प्रयोधकाले मुनिपुङ्गव यं
 ते घुरिपदं सदैवाऽऽनन्दं लभन्ते मुतरां क्रमे

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणोंमें आया
 स नमाया ॥६॥ षाछग मंत्रा पिता कहाया
 छपरे जाया ॥ श्री ॥१॥ हुम्बड़ बंज में आपस
 कल जीर हरपाया ॥ श्री० ॥२॥ गच्छ चीराम
 द्वार हारा युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥३॥
 में परचा पाया सकलसंघ सुखदाया ॥ श्री० ॥
 शरण ग्रही आज्ञ उमाया तारो मुझ को जने
 ॥ श्री० ॥५॥ हर्ष धरी दिल काय मुक्ताया न
 धर्ज मैं लाया ॥ श्री० ॥६॥ ध्यायो ध्यायो
 हर्षाया पायो वाञ्छित माया ॥ श्री० ॥७॥ उ
 दर्शन पाया आनन्द हर्ष ध्याया ॥ श्री० ॥८॥
 धीसे धर्ष पायाला चैत्र चौथ सुदि आया ॥ श्री० ॥
 कृपाभिलाषी सहृगुण दाया सुखसागर मन
 श्री० ॥१०॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमस
 गाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

। जन्म महोत्सवस्तवनम् ।

ध्यानन्द स्त्राया अद्भुत माया रूप दयाया रे (देव)
 धीर प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे ।
 हरिणगमेषी देव ने जाकर घनवन घंटा बजाया रे
 ॥ आ० ॥ १ ॥ स्व देवों ने जान लिया मही मेरु शि-
 खर पर आया रे । पञ्च रूप धरि धीर प्रभु को इन्द्र
 विनय से स्त्राया रे ॥ आ० ॥ २ ॥ जल से आश्रित
 कलश को देखे मन्देह दिल में आया रे । धीर प्रयाण
 पह जायेंगे लपु हँ इन को पाया रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अ-
 बधिज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त पत्नी माता राया
 रे । धामाद्भुते मेरु दयाया धर हर का कंसाया रे ॥ आ०
 ॥ ४ ॥ अपवि लगा बत देव लिया बल प्रभुजी को मह-
 थाया रे । अपराध क्षमाये काय भुजाये नमि नमि लागे
 पाया रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु
 निरखी हरपाया रे । विधिगुं भक्ति कर के इन्द्र जननी
 पासे स्त्राया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनाथ हरि मुख-
 कारी पूरण प्रेम बहाया रे । सकल रुच मिटि जय जय
 पोखो होमानन्द को पाया रे ॥ आ० ॥ ७ ॥

। श्री पार्श्वप्रभुस्तवन ।

श्रीशिववाम प्यारो हँ येवन



छपार हे लौद्रव० (टेक) चौतीस अतिशय शोभता हे
 प्रभु चे० पांचवीस वाणी गुणखान हे ॥ लौद्रव० ॥ १ ॥
 कोस पांच जैसलमेरधी हे प्रभु चे० लौद्रवनगर मझार
 हे ॥ लौद्रव० ॥ २ ॥ देवविमान जिसो बन्यो हे प्रभु चे०
 मन्दिर अति सुखकार हे ॥ लौद्रव० ॥ ३ ॥ अनन्त
 गुणे करी दीपता हे प्रभु चे० सहस्र फरणा श्रीपाम हे
 ॥ लौद्रव० ॥ ४ ॥ महिमा सुनि के आविषो हे प्रभु चे०
 संघ सकल यह ठाठ हे ॥ लौद्रव० ॥ ५ ॥ भव नाटक
 करता थका हे प्रभु चे० आयो श्रीदरवार हे ॥ लौद्रव०
 ॥ ६ ॥ दीन की विनर्ता धारजो हे प्रभु चे० भवसागर
 धी तार हे ॥ लौद्रव० ॥ ७ ॥ संघ में मंगल कीजिये हे
 प्रभु चे० विधि वन्दन करुं नाथ हे ॥ लौद्रव० ॥ ८ ॥
 पीर चौपीस चालीस माय हे प्रभु चे० मार्गशर सुदि
 सुधार हे ॥ लौद्रव० ॥ ९ ॥ पञ्चमीदिवसे भेंटिया हो हे
 प्रभु चे० आनन्द अंगन माया हे ॥ लौद्रव० ॥ १० ॥
 क्षेमसागर प्रभु प्रेमसुं हे प्रभु चे० मांगे अविचलराज
 हे ॥ लौद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिगंद स्वामिन् चरणों में अथ तो लेलो ॥ टेक ॥
 कृपानिधे कर मेलो अर्जा दया कर लेलो ।

संसार पार मेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १ ॥

रात्ना बही बना दो सुखी सदा बना दो ।

आपो विरुद्ध सुन लो चरणों में अथतो लेलो ॥ २ ॥

गिरनार तीर्थ आया मन है सदा सुहाया ।

आनन्द हृदय भरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ३ ॥

मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शान्त पेखा ।

मासाद्य ध्यान स्थिरेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ४ ॥

ऐसी हृदय में रेखा कर्मों की होगी खेखा ।

भव पार हूँगा बेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ५ ॥

मुक्ति से कर के मेलो राजुल को मेली पेला ।

पशु पर दया करेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ६ ॥

अथ तो मुझे भी तारो केवल के अंश डारो ।

कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ७ ॥

अन्तः समय सुधारो यह विन्ती स्वीकारो ।

दुःखी सदा बनेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ८ ॥

अन्तिम प्रार्थना परता आशातना से दरता ।

दयालु दीन बेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ९ ॥

संयत् तुष्णीमें शीतर माघ तुषला है सुखोत्तर ।

एकम को आपो पेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ १० ॥

गुरुवर्य पूर्णमागर तच्छिष्य हेमसागर ।

शरणा शरण में लेलो चरणों में अथ तो लेलो ॥ ११ ॥

स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥
 श्योमिति निश्चिनवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् ।
 शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥
 सकलातिशेषकमहासंभृत्तिसमन्विताय शस्याय ।
 धैलोक्यपूजिनाय च, नमो नमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥
 सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसंपूजिनाय निजिनाय । सुव-
 नजनपालनोद्यन-तमाय सननं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥
 सर्वद्वुरिताघनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्ट-
 ग्रहभूतपिशाचशाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति
 नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते
 जनहितमिति च नुत्ता नमत तं शांतिम् ॥ ६ ॥ भवतु
 नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते । अपरा-
 जिते जगत्यां, जयनीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्व-
 स्थापि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधूनां
 च सदाशिव-सुनुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां
 कृतसिद्धे, निर्घृतिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम् । अभय-
 प्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्ता-
 नां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्द-
 ष्टीनां धृति-रनिमित्तियुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशास-
 ननिरतानां, शांतिननानां च जगति जननानाम् । श्री-
 संपत्कीर्त्तिपशो-वर्द्धिनि ! जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥

सलिलानलविषविषधर- द्रुष्टप्रहराजरोगरक्षभयतः ।
 राक्षसरिपुगणमारी , चारेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥
 अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदे-
 ते । तुष्टिं कुरु कुरु दुष्टिं कुरु कुरु सशस्त्रिं च कुरु कुरु कृत्य-
 र् ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति-तुष्टिपुष्टि-
 त्वस्मीह कुरु कुरु जनानाम् । भोमिति नमो नमो
 ॐ ह्रीं हूं हः यः क्षः ह्रीं पुद् पुद् स्याद् ॥१४॥ एवं
 यन्माक्षरपुरसरं संस्तुता जया देवी । कुरुते शांतिं
 नमतां नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इतिपूर्वसूरि-
 दशित-संश्रपदविद्भिः स्तवः शांतेः । सलिलादिभ-
 यविनाशो, शांत्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चे-
 नं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम् । स
 हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥
 उपसर्गाः क्षयं यानि छिद्यंते विघ्नवद्भयः । मनःप्रस-
 प्तामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमां-
 गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां , जैनं
 जयति शासनम् ॥१९ ॥

॥ अथ श्रीगौडीपार्श्वजिन वृद्धस्तयन लि० ॥

॥ टोहा ॥

याणी प्रह्लायादिनी, जागै जगविद्यात ।

शासतणा गुण गायतां, गुज गुस पसज्यो-नात ॥१॥

नारंगे अह्णिलपुरे, अहिमद्रावादे पास ।

गौडीनो धणी जागनो, मष्टुनो पूरे आम ॥२॥

सुभ बेला सुभदिन घडी, मष्टुरत एक मंडाण ।

प्रतिमा ते इह पासनी, धई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ डाल ॥

गुणहि विशाला मंगलीक माला. वामानो सुन
साचोजी । घण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो
घणी जाचोजी ॥ गु० ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणु माई
प्रतिमा, तुरक तणै घर हुंतीजी । अश्वनी भूमि अश्व-
नी पीडा, अश्वनी वालि दिगूनी जी ॥ गु० ॥ ५ ॥ जाण
तो जद जेहने कहिये, सुहणो नुरकने आवैजी । पास
जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवरु तुह संतापै जी ॥ गु० ॥ ६ ॥
प्रहळडोने परगट करजे, मेघा गोडीने देजे जी । अधिको
म लेजे आंछो म लेजे । दफ्ता पांचमै लेजे जी ॥ गु० ॥
॥ ७ ॥ नहीं आविस तो मागिस सुरडीस, मोरबंध
बंधास्याजी । पुत्र कलत्र घन ह्य हाथी तुम्ह, लाछि
घणी घर जास्यैजी ॥ गु० ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुम्हने
मिलस्ये, सांध्यशाह जे गोडीजी । निलवट टीलो चोखा
चोखा, वस्तु वदै तसु पोठी जी ॥ गु० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

मनसु धीहनो नुरकडो, मानि अचन प्रमाण-।

पीपीने सुहणा तणो, संभलावै सहि नाणं ॥१०॥
 पीपी घाले तुरकने, पटा देव ह्म कोय ।
 अय सनाय परगटकरो, नद्योतर मारै सोय ॥११॥
 पाछली रात परांटीणै, पटली पंधै पाज ।
 सुहणा माहें सेटने, संभलावै जक्षराज ॥१२॥
 ॥ दाल ॥

एम काही जक्ष आयो राते, सारथवाहुने सुहणे
 जी । पास नणी प्रतिमा तुंलेजे, लेतो सिरमन धूणे जी
 ॥ एम० ॥ १३ ॥ पांचसै टफा तेहने आपे, अधिको म
 आपिम चारुजी । जनन करी पहुंचाहे धानिक, प्रतिमा
 गुण संभारैजी ॥ एम० ॥ १४ ॥ तुझने होसी बहु कल-
 दापरु, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस प्रणमीश तेह-
 नापाया, प्रहउठीने सुणजे जी ॥ एम० ॥ १५ ॥ सुहणो
 देहने सुरचाल्यो, अपने धानक पहुंतोजी । पाटण महि
 सारथवाहु, हींहे तुरकने जोतोजी ॥ एम० ॥ १६ ॥ तुरक
 जानां दीथो गोठी, चोखा तिलक लिलाहै जी । संकेत
 पहुंतो माचो जाणि, पोलावै पहुंलाहै जी ॥ एम० ॥ १७ ॥
 तुम घरि प्रतिमा तुझनें आयुं, पास जिणोसर केरीजी ।
 पांचसै टफा जो मुम नावै, मोल न मायुं केरीजी ॥
 एम० ॥ १८ ॥ नाणो देह प्रतिमा लेहै, धानक पहुंतो
 जी । केसरचंदन मृगमद घोली, विघसुं पूजा रंमेजी ।

॥ एम० ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते माहि
 प्रतिमा राखै जी । अनुक्रम आज्या परिकर माहे, श्रीसं-
 घने सुरसाखै जी ॥ एम० ॥ २० ॥ ओच्छथ दिन दिन
 अशिका थाये, सत्तरभेद सनाथी जी । ठाम रना दर-
 सण करवा, आथै लोक प्रभावो जी ॥ एम० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

इकदिन देखै अथधिसु, परिकरपुरनो भङ्ग ।

जपन करुं प्रतिमा तगो, तीरथ अठ्ठे अभंग ॥२२॥

सुदगो आवै सेठने, थल अदवी उज्जाट ।

महिमा भासै अनि घणी, प्रतिमा निहां पुहचाइ ॥२३॥

कुशल रोम निहां अठ्ठे, तुम्हने मुझने जाणि ।

संका छोटी काम करि, करतो मकरि संकाणि ॥२४॥

॥ दोहा ॥

पाम मनोअथ पूग करै, पाठण एक वृषभ जोमै ।

परिकरथा परिगारो करै, एक थल अडि पीतो

जने ॥ २५ ॥ थरि कोम आज्या जेनये, प्रतिमा नवि

थाथै जेनये । मोटी मनट विमारण धई, पाम भुवन

संहावुं मदी ॥ २६ ॥ आ आदकी किम करे, गणाय,

कुदको कोई मदीस पाहाण । देवळ पाम जिनैसर तगो,

संहावुं किम थरै किगो ॥२७॥ जळ विन श्रीसंघ

रहसै जिहां, तिलायतो किम आवै हर्हा । विनापुर

धयो निद्रा लहे, यक्षराज आधीने कहे ॥२८॥ गूँह
 ऊपर नांगो जिहां, गरध घणो जाणि जे तिहां । स्व
 स्त्रिक सोपरी महीनांग, पाहाय तणो उल्लटस्ये खाण
 ॥२९॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, इमून जल
 नीमरमी कृष्णो । खाराकृश तलो इह सही-
 नांग, भूमि पट्यो दे नीलो द्याण ॥ ३० ॥ सि-
 लायटो सोरोहि वस, कोट पराभवियो किल
 मिम । तहां धको तूं इहां आय जे, स्वययचन मा-
 हो मानजे ॥ ३१ ॥ गोटीनां मन थिर धापियो ।
 सेलायटने सुटणो दियो । रोगकमाउंने पूरुं घास । पास
 तणो मंहे आवाम ॥३२॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण,
 हेमवरण देखाट्यो नैण । गोटी मनह मनोरथ हुआ,
 सिलायटने गया तेह्या ॥ ३३ ॥ सिलायटो आवै
 घरमो, जोमे खीरखाटपुन घरमो । घट्टे घाट करै
 कोरणो, लगन भल पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ धंभ र
 तीची पूनली, नाटक बौतुक करती रली । रंग कण्ठ-
 रन्ध्रियामगो रनै, जोनां मानवनां मन वसै ॥३५॥
 पायो पूगे प्रासाद, स्वर्गसमां मंहे आयास । दिवस
 घारी इण्टो घट्यो, मनखिय देवल ऊपर बट्यो ॥३६॥
 भ लगन शुभ वेला पास, पट्यारुण देठा श्रीपास ।
 देमा मोटी मेरु समान, एकलामिल वगटे रहै-वान

(३३८)

॥ ३७ ॥ घात पुराणी में सांभली , तवन मांहीं स
सांकली । गोठी तणा गोतरीया अछै , यात्रा करीने प
पछै ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघनविहारण यक्ष जगि , तेहनो अकल सरूप ।
प्रीत करै श्री संघने , देखाडै निज रूप ॥३९॥
गिरुओ गौटी पास जिन , आपै अरथबंदार ।
सानिध करै श्रीसंघने , आता पूरगहार ॥४०॥
नील पलाणैनील हय , नीलो थइ असवार ।
मारग चूका मानवी , याट दिखावणहार ॥४१॥

॥ डाल ॥

घरण अदार तणो लहे भोग, विघन निवारै टा
रोग । पवित्र धई समैर जे जाव , टालै सगला पा
संताप ॥४२॥ निरधनने घरि धननो सुन , आपै अ
पुत्रीयाने पुत्र । कायरने मृरापण धरै , पार उतारै ल
च्छी धरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग , पग विहण
आपै पग । टाम नहीं तेहने दे टाम, मन धंछिन पूरै अमि
राम ॥ ४४ ॥ निराधार ने दे आधार, भवसापर उता
पार । आरतीयानि आरत भंग । धरै ध्यान ते लो
सुरंग ॥४५॥ समत्या सहाय दीये यक्ष राज, तेहना मो
गछै दियाज । यदि हीण ने यहि प्रकाश . रंगाने

दधन विलाम ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुरानो दांगारं, भय
भंजग रंजण अयमार । बंधन नूट्टे बेटी तया , श्री
पार्श्वनाम अक्षर ममरणां ॥४७॥

॥ दोहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अक्षर जपै, विश्वानर विकराल ।

हृत्पियूष दूरे टले, दुर्द्धर सिंह मियाल ॥४८॥

घोर नणा भय चकये, विष अमृत उदकार ।

विष धरनो विष ऊनरै, संग्रामे जयजयकार ॥४९॥

रोग मोग दालिट्ट दुर, दोहण दूर पुलाय ।

परमेसर श्री वासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥५०॥

॥ टाल ॥ (कटखानी बाल)

उंजितु २ उंज उपमम धरी, ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपाद्वै
अक्षर जपेन । मृतने येन भोटिंग जंगरसुरा, उपम-

मेधार इक्ष्वाकु गुणंते ॥५०॥५१॥ दुर्द्धरारोग मोगा जरा

जंनने, माघ ऐकांतरा दूतपने । गर्भबंधन यणं मर्प

विच्छू विषं, बालिका बालमेवा भ्रमंते ॥५०॥५२॥

साहगी डाहगी रोहिणी रंरणी, फोटका मोटका दोष

हुंते । दाड उंदर मणी कोल नोला तणी, स्थान मीयाल वि-

कराल दंते ॥५०॥५३॥ धरणोट्ट पद्मायनी समरशोभा-

यनी, घाट आघाट अटवी अटने । लघुभी लीला मिलै

सुजस बेलाडले, मपल आसा फलै मन हसंते ॥५०॥

॥ ५४ ॥-अष्ट महाभय हरै कानपीडा टलै, ऊनरै सुल
 सीसग भणतै । घदसु वर प्रीतसुं प्रीति विमल प्रसु, श्री
 पास जिण नाम अभिराम मन्तै ॥ उंजितु ॥ ५५ ॥
 इति श्रीगोडी पाईवनाथजी वृद्ध स्तवन समप्तम् ।

गौतमस्वामी का छंद ।

घोर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो नि-
 शदिस । जो कीजे गौतम नो ध्यान, तो घर विलसे
 नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चढे, मन
 घाञ्छित लीला संपजे । गौतम नामे नावे रोग, गौतम
 नामे सूर्य संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकटा, तस
 नामे नावे ठूकटा । भूत-प्रेत नवी मंडे प्राण, ते गौतम
 ना करुं घखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे नीरमल वाय,
 गौतम नामे वाधे ध्याय । गौतम जिन शासन शणगार,
 गौतम नामे जय जपकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा
 घृत गोल, मन घाञ्छित का पडत घोल । घरसुं घरणी
 निरमल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम
 वदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ।
 मोटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सकल विहाण
 ॥ ६ ॥ घर मंगल घोड़ानी जोड़, घाट विलहे घाञ्छित
 कोड़ । महिपल माने मोटा राघ, जो तुठे गोनमना

पाप ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक दले, उत्तम नरनी
 संगत मोले । गौतम नामे नौरमह ज्ञान, गौतम नामे
 याधे यान ॥ ८ ॥ पून्ययन अयधरो सह, गुरु गौतमना
 गुण छे बहु । बहू लायण्य समय कर जोड़, गौतम तुठे
 संपति कोड़ ॥ ९ ॥ इति ॥

देसावगासी का पद्यस्त्राण ।

आयक के तीन साक्षात् लेनी हो तो तथा जितनी उपादा
 पद्यनी हो तो उम की विधि —

उपारे में वा कर तथा पर क अन्त स्थान में कना हो
 तो प्रथम काय निकाल कर इटान्त एक यानू गग का आस-
 मय देखे—

इच्छामि स्वमासमगो धंदिउं जायशिघ्राण निमी-
 शिघ्राण भरपण्य चन्दामि ।

कद का इरियादिया को —

इच्छाकारण संदिसह भगवन् ! इरियावहिवं प-
 दिक्रमामि ? इच्छं । इच्छामि परिक्लमिउं, इरियावहि-
 याण विराहणाण गमणागमणे पाणक्रमणे शीयक्रमणे
 हरियक्रमणे ओसां उत्तिग पगगदग महीमक्रदा संनां-
 णा संक्रमणे, जे मे जीवा विराहियां, परिदिपा, वेई-
 दिया, तेईदिपा, धरिदिपा, पंचदिपा, अभिदिपा,

मानस हंस सम चङ्ग, नमो सिद्ध महागुणी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासश्रेणं
पजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ आचारजमुनिपति गङ्गी, गुण छत्तीसी
धामोजी । चिदानन्द रसस्वादता, परभावे निःकामोजी
॥ उल्लाळो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्वन, साध्य
निज निरधारथी । निज ज्ञान दर्शन चरण धारज,
साध्यना व्यापारथी । भवि जीव बोधक तत्व शोधक
सफल गुण संपत्ति धरा । संघर समाधि गत उपाधि,
दुविच तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय आचार्यपदं वास-
श्रेणं पजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ खंति जुष्टा मुक्ति जुष्टा, अत्र
मद्व जुता जी । मद्य सोय अकिंचना, तव गुण
संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उल्लाळो) जे रम्या घल्ल सु-
गुति गुना, समिति समिता श्रुतधरा, स्वाहाद धार
तदश्यादक, आत्म पर विभजनकरा । भव भौद
साधन धार शासन, यदन भोरी मुनिवरा । सिद्धान्त
वापगदान समर्थ, नमो पाठक पद धरा ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय उपाध्यायपदं वा-
सक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

नमोऽर्हन् ॥ सरल विषय विषयारिने, निःकामो
निःसंगो जी । भव द्वय ताव जमायता । आनम
साधन रंगी जी ॥१॥ (उल्लासो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप
रमणो, देह निर्ममनिर्मदा । फाउसन्नामुद्रा धीर आसन,
ध्यान अभ्यासी मदा । मय तेज दीपे कर्म भीपे , नैव
ह्रीपे पर भणी । मुनिराज करुणा सिन्धु त्रिमुषन ,
पेदु प्रणमुं हिन भणी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय उपाध्यायपदं वासक्षेपं
यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

नमोऽर्हन् ॥ सम्पन्न दर्शन गुण नमो , तस्य
स्वरूप प्रदीन जी ॥ जसु निरागर स्वभाव ते, चैमन
गुण जे अरूपो जी ॥१॥ (उल्लासो) जे अनूप श्रद्धा
धर्म प्रगटे , सगळ पर दहा टले । निज शुद्ध मत्ता
प्रगट अनुभव , करुणा रूपिणा उचलले । पहू मान
परिणति घस्तुनखे , अहयनसु कारण पणे । निज
साध्य हटे सर्वकामी , मत्स्यना संवत्ति गणे ॥

मानस हंस सम बड़ , नमो मित्र महागुणी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय मित्रपदं वासतो
यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण छतीर्मा
धामोजी । चिदानन्द रसस्वादना, परभावे निःकामांती
॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्वन , साव्य
निज निरधारधी । निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज,
साध्यना व्यापारधी । भवि जीव बोधक तन्व शोधक
सफल गुण संपत्ति धरा । संवर समाधि गन उपाधि,
दुविध तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमन्निनेन्द्राय आचार्यपदं वास-
तो यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ खेति जुआ मुक्ति जुआ, जत्र
महव जुता जी । सचं सोयं अकिंचना , तव गुण
संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सु-
गुति गुता , समिति समिना श्रुतधरा, स्वाहाद धारै
मत्त्ववादक , आत्म पर विभजनकरा । भव भीरु
साधन धीर शासन , बहन धीरी मुनिवरा । सिद्धान्त
वापणदान समरथ , नमो पाठक पद धरा ॥



ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमद्भिनेन्द्राय उवाच्यायपदं पा-
सक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ सकल विषय विषयारिने, निःकामी
निःभंगी जी । भव दय नाथ जगदाधना । आत्म
माधन रंगी जी ॥१॥ (उल्लासो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप
रमणी, देह निर्ममनिर्मदा । काउसगा मुद्रा भीर आसन,
ध्यान अभ्यासी मदा । तप तेज दीपे कर्म भीषे , नैव
ह्रीपे पर भणी । मुनिराज कल्याणा मिन्धु त्रिमुखन ,
पंडु प्रणमुं हिन भणी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमद्भिनेन्द्राय साधुपदं पासक्षेपं
यजामाहे स्वाहा ॥ ५ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ सम्पत् दर्शन गुण नमो , तत्त्व
स्वरूप प्रमीन जी ॥ जसु निरभार स्वभाय छे, चेतन
गुण जे अरूपा जी ॥१॥ (उल्लासो) जे अनूप श्रद्धा
धर्म प्रगटे , सकल पर दहा टले । निज शुद्ध गता
प्रगट अनुभव , परगता स्वगता उच्छले । यह मान
परिणानि फलुनत्ये , आह्वयनसु कारण पणे । निज
साध्य दष्टे सर्वकण्ठी . मन्वना संपत्ति गणे ॥

मानस हंस सम बहू , नमो सिद्ध महागुणी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनियारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासश्रे-
यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ आचारजमुनिपत्रि गणी, गुण उत्तीर्णी
धामोर्जी । चिदानन्द रमस्वादना, परभावने निःकामोर्जी
॥ उल्लासो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिदूनन , साध
निज निरधारधी । निज ज्ञान दर्शन चरण धारज,
माधयना व्यापारधी । भवि जीव बोधक तत्र्य शोचक
सपत्न गुण संगति धरा । संयर समाधि गत उपाधि,
दूषिष तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनियारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय श्याचार्णपदं वास-
श्रेयं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत् ० ॥ मीनि गुण्या मुक्ति गुण्या, अत्र
मद्व गुणा जी । मयै मोगे अकिंपणा , तप गुण
संज्ञम रभागी ॥ १ ॥ (उल्लासो) जे रम्या मयै गु-
मुनि गुणा , ममिनि ममिना श्रुत-धरा, श्याशद को
नस्ववादक , शासन पर विगतनरुग । भव भोद
माधन भोद शासन , परन भोगे मुनिधरा । गिराग
काशदान समरुग , मधो पाटक पद् धरा ॥

(12)

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय दर्शनपदं वासक्षेत्रं
यजामहे स्वाहा ॥६॥

नमोऽर्हत् ॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक
भावेजी । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावेजी
॥ १ ॥ (उलालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक,
बोधक भाव बिलक्षण । स्यादाद-संगीतत्व- रंगी,
प्रथम भेदा भेदता । सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल
संशय छेदता ।

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमञ्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं वासक्षेत्रं
यजामहे स्वाहा ॥७॥

नमोऽर्हत् ॥ चारित्र गुण वन्ती वली नमो, तत्व
रमण जसु मूलोजी ॥ पर रमणीय पणुं टले, सकल
सिद्ध अनुकूलोजी ॥१॥ (उलालो) प्रतिकूल आश्रव
त्याग संजम, तत्व थिरता दम मधी ॥ शुचि परम
खंति मुक्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥ सामायिका-
दिक भेद धर्म, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अक-
लुष अमल उज्वल, काम कद्रमल चूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्म-

नरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय चारिद्रपदं धाम-
क्षेत्रं यजामहे स्वाहा ॥८॥

एच्छा रोधन तप नमो, पाप्म अभ्यंतर भेदेओ ॥
ध्यामम सत्ता एवता, पर परिणानि उच्छेदे जी ॥ १ ॥
(उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संसृति, जेह सिद्धपणु
परे । योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे ।
अंतर सुहरम तन्व माधे, गर्व गंवरता करी । निज
आत्म सत्ता प्रगट भावे, करी तप गुण आदरी ॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमात्मनेऽनन्तज्ञानस्यरूपाय जन्म-
नरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय तपपदं धामक्षेत्रं
यजामहे स्वाहा ॥६॥ इति

अथ नव पदों के नव चैत्यपंदन, नव स्तपन
तथा नव धुइ ॥

॥ अथ अरिहंतपद धर्मपंदन ॥

जय २ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विशारी ॥
दोकारदोक जलवि रुषि, राम पातु मारसी ॥१॥ स-
मुद्रपात शुभ वेरडे, दायदून मारसी, सुहृ च-
रम शुचि पादमे, भयो पर अदिनारी ॥ २ ॥ अंतरंग
रिपुगण हरीए, हृप जप्ता अरिहंत ॥ ततु पद पै-
बजमे रमत, तीरथरम दिन संज ॥३॥ इति ॥ 'इति-
नि नामतित्थे'दे नमोःइति तक ॥

जां ॥ इति अरिहंत पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद वैश्वर्यद्वय ॥

श्रीशैलेशी पूर्व मांत, तनुदिनन भागी ॥ पुत्र्य प-
उपसंग मं, ऊरध गत जागी ॥ १ ॥ समय एकमे
लोकशांत, गया निगुण निरार्गी ॥ चेतनभूषं आत्मगुण,
सुदिशा लही मागी ॥ २ ॥ कैवल दंजगनाणधी न ,
रुपातीन स्वभाव ॥ सिद्ध भये तनु हीरधर्म, धरे धरि
शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद वैश्वर्यद्वय ॥

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

(धारं महिला ऊपर मेह भरोगे पीजली, न दात)

आष्ट परम नग माम हीना योही पूर्वमे ॥ महा-
गलाल ही० ॥ उल्लोको परै धाम गयोर्गी धाममे ॥
महा० म० ॥ अजोगी के डाल तजे भविष्यमा ॥
महा० म० ॥ शैलेशी लही र्म दलै गुण धरिना ॥
महा० द० ॥ १ ॥ हस्पाक्षर पंच पाठ रहै मे योगमे ॥
महा० र० ॥ सेरस प्रकृतिनो अन्त करीनें अन्तमे ॥ महा-
क० ॥ गमन करै नगरइमे अक्रिय योगमे ॥ महा०
अ० ॥ पुत्र्यपयोग अरुण स्वभाष अरुधर ॥ महा०
स्व० ॥ २ ॥ त्रुगुण नव परमाण योगिन लक्षे करी ॥
महा० यो० ॥ धरुण विजदा भास निरापदन लही ॥
महा० नि० ॥ मध्ये योगिन अष्टगनाकृति अन्तमे ॥

म्हा० घ० ॥ मर्षी पक्ष थी हीन भणी सिद्धान्तमें
 म्हा० भ० ॥ ३ ॥ तनुपद्मारा नाम शिलासैं जोपैं
 म्हा० शि० ॥ युग लोचन में भाग अलोक कुं स्वर्ण
 ॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल यत्तीस प्रमाण स्वमाह
 ॥ म्हा० प्र० ॥ वृद्धि घनुशतपंच गुणासै हीनता ॥ म्हा०
 ॥ गु० ४ ॥ मिलिया एकमें अनंत आवाधा ना लही ॥ म्हा०
 अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही ॥ म्हा०
 सि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा०
 धरो० ॥ कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें ॥ म्हा०
 मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीनें गमन कियो शिववास
 जी । अवावाघे सादिअनादि चिदानंद चिदरासीजी ।
 परमात्म पद पूरण विलाशी अध घन दाघ विनाशी
 जी । अनंत चतुष्टमय शिवपद घ्यावो केवलज्ञान
 भासीजी ॥ १ ॥ इति सिद्धापद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चंत्यवदन ॥

जिन पद कुल मुखरम अनिल । मिनरस गुण
 धारी । प्रबल सखल घन मोहकी । जिणतें चमूहारी ।
 ॥ १ ॥ ऊज्यादिक जिनराज गीन । नवनन विस्तारी
 भय हूपै पापै पदंत । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचा

धारी जीयक, आचारिजपद मार । निन कुं पंद हीर
भर्म , अट्टोमर सी धार ॥ ३ ॥ इति आचारिपद स-
न्यवेदन ॥

॥ अथ आचारि पद स्तयन ॥

(नणदल दीर्घा नो, ग चाल)

त्वर्ना खडगभी जेणे, हणयो मोभ सुभट सम देणे
हां, गणवनि गुण वेर्वा ॥ टेर ॥ मान महागिरि ययरे,
अतिजोभन महव ययरे हां ॥ग० ॥१॥ देभरूप यिम
वेली, घर अडमव कीर्दे टेली हां॥ग०॥ मुच्छा मंलभा
भरियो, लोट मागर मुचें मरियो हां ॥ग०॥२॥ मदन
नाग मद हीनो, जिण दम जाम जेपें कीनो हां ॥ग०॥
मोह महामह्य ताहयो, पुण पंगग मुगें पाहरो हां ।
ग० ॥३॥ दोम गयंद यम कीनो, परि उपजाम अकुम
लीनो हो ॥ग०॥ अंतरंग रिपु भेया, सुरवर विण जिण
निपेया हो ॥ग० ॥४॥ रम कृति गुणभी लीनो, मय
अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारजपद गृह-
यो, धरी जीय कृजलमा मेशो हां ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति
आचारिपद स्तयन ॥

॥ अथ आचारिपद स्तुति ॥

पंशाधारकुं पाई उजवाई दोप रतिन गुणधारी
जी । गुण हसीसे आगमधारी दाददा अंग विधारी

जी । प्रयत्न मयत्न धन मोह हरणकरं अनिलं समो गुण
 चाणी जी । क्षमा महित जे मंजम पाले आचारज गुण
 ध्यानी जी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवंदन ॥

धन धन श्री उवज्जाय राय, शठता घन भंजन ।
 जिनवर दिम्बत दृवाल संग, कर कून जन रंजन ॥ १ ॥
 गुणघण भंजण मण गयंद, सुय शृणि क्रियमंजण ।
 कुणालंध लोय लोयणं, जन्थय सुयमंजण ॥ २ ॥ महा
 प्राणमें जिन लह्यो ए , आगममें पद तुर्य । तिनमें
 अहनिश हीरधर्म वंदे पाठक वर्ग ॥ ३ ॥ इति उपा-
 ध्यायपद चैत्यवंदन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(सांबलिया अलगा रहोनें, ए चाल)

हुयने रे दूरी हुयने, चेतन भापै सठने ॥ दूरी
 हुयनें ॥ तुं मुक्त पाम क्युं आवै ॥ १ ॥ तुम्हने कुण पन-
 लावे, ॥ १ ॥ आंकणी ॥ तो संगे निज पनें डीनो, रचना
 घरम भुलागो । नाणावरणी खय उपशमसे, भावेंडी
 मंडाणो ॥ १ ॥ १ ॥ द्रव्यै ते परजासं कीना, जानि-
 नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक, किण कमें
 उपदेश ॥ १ ॥ २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकुं शंका, तें
 संगे लागी । नीलवर्णकी समता सेनी, में भयो तोरुं

रार्गी ॥३०॥३॥ उप कर्त्तिये हगिगो भविगानो, अवि-
यां लाभन आग । आधीनां मन रीदानामं , माया-
येनविनाय ॥३०॥४॥ आभिये समरार्गी पर आगम,
सूत्रमेने उषडभतय । तन् मेथामं हगि शठताकुं, येनन
कृजलता पाप ॥ ३० ॥५॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

अंग हग्यां चउदं पृथक् गुण पनधामना भारी जी,
सूत्र अरथपर पाठक कर्त्तिये जोग समधि विचारो ओ ।
नयगुण सुग आगम पृग नय निरुपे नारी ओ, मुनि-
गुण भारी सुध विनारी पाठक पृजा अविचारी ओ ॥
१ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम शाधुपद संस्पधेदन ॥

दंसग नाग चरित्त नरी, पर जिवपद गार्गी, धर्म
लुहृ श्रुति नप्रमे, आदिम नय कारी ॥ १ ॥ गुणव-
मत अपमत्तन, भये अंतरजारी । मानन इंदिय दम-
नभूल, समदम अभिरारी ॥२॥ आहति घन गुणगणा
भार्यो ए, पंचम पद मुनिराज । मस्यदपेशज मफल ई,
ईरधर्म के बाल ॥ ३ ॥ इति शाधुपद संस्पधेदन ॥५॥

॥ शाधुपद स्तवन ॥

(मालन मालन मति बने , ए चाल)

निकवाया लमजन कटे, धीर चडगति वसन रं

गेसहो ॥ मुर्नांदर्जा ॥ गग हीन भय तुं करं ॥ सावित्री ॥
 शिव रमणा में हेत हो ॥ मुर्नांदर्जा ॥ १ ॥ सर्व प्रसाद
 नर्जा रहे ॥ सा० ॥ छटे पर्य कोइहो ॥ मु० ॥ शन
 मोगम आगम करं ॥ सा० ॥ लघु काले गुण आदि
 हो ॥ मु० ॥ २ ॥ म्यानद्विं निद्रा उदै ॥ सा० ॥ पामें करं
 निकंद हो ॥ मु० ॥ प्रकला निद्रा में रही ॥ सा० ॥
 धारम गुणना शम हो ॥ मु० ॥ ३ ॥ म्थिनि रस घात
 प्रमुक्त धरं ॥ सा० ॥ जो गुण संख्यानीत हो ॥ मु० ॥
 सो पिण निण जगमें लही ॥ सा० ॥ त्रिकघन गुणनी
 ख्यात हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ ग्यण घन में शिव पथे ॥ सा० ॥
 साधन पर वर जावहो ॥ मु० ॥ साधु हुवह नसु परं
 में ॥ सा० ॥ कुशल भवतु जगनीवहो ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति
 पंचम साधुपद स्तवन ॥

। अथ साधुपद स्तुति ॥

सुमनि गुणनि कर संजम पाले दोंप वयालीश
 शाले जी, पटकाया गोकुल रुखवाले नवविध ब्रह्मजन
 पाले जी । पंच महाजन मूभा पाले धर्म शुरु उज-
 शाले जी । ज्ञापक श्रेणि कर कर्म खपावै दम पद गुण
 उपजाने जी ॥ इति साधुपद स्तुति ॥

॥ छटे दर्शनपद चैत्यवन्दन ॥

दृग पुगाल परिपद, अट्ट परमिना संसार ।

गंडिभेद तप करि लहे , मप गुण आधार ॥ १ ॥
 क्षायक वेदक जनि असंख, उपजम पण पार । विना-
 जेण चारिघ नाण , नही ह्ये जिन दातार ॥ २ ॥
 श्रीसुदेव गुरु धर्मनीए , रुचि लहून अभिराम । दर-
 शनकुं गणि हीरधर्म , अह निज करत प्रणाम ॥ इति
 दर्शनपद वन्यबंधन ॥

॥ दर्शनपद रचन ॥

(गमनंद्रके वाग में आंघो मोहि रघो री, ए गाल)

देव श्री जिनराज , गुरु ते साधु भणोरी । धर्म
 जिनेश्वर मोक्ष , लक्षण पोधि तणोरी ॥ १ ॥ पोधि
 लाभके काज , मसम नरक भलोरी । नेण विना सुर
 लोप , तनि अधिक चुगेरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तस,
 पोधरी छांहे लोरी । उपजम क्षायक वेद , ईश्वर मीन
 कोरी ॥ ३ ॥ भव सापर हं अपार , पुण अस्ताप
 कोरी । जसु लाम ते लोप , गोमपद मात्र गरी
 ॥ ४ ॥ यद् भाषे अपमाण , नाण शक्तिभलारी ।
 पोधि धर्ममें जाय , लाभे कृपाल कोरी ॥ ५ ॥ इति
 दर्शनपद रचन ॥

॥ अथ दर्शनपद स्तुति ॥

जिनपणगतमथ सुभा मरुथै समथिम गुण उजवाले
 ज्ञा, भेद वेद करि आनम निरुती पशु टाली सुर पावे

जी । प्रत्याख्यानने सम तुल्य भाव्यो गणधर अस्ति
 मुरा जी, ए दर्शनपद नित नित वंदो भवमागर
 तीरा जी ॥ १ ॥ इति दर्शनपद स्तुति ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम, नाण
 भाव मिलापसं जिन जनिन , सुय वीस प्रमाण ॥१॥
 भव गुण पञ्चवि ओहि दोष, मग लोचन नांग । लोका
 लोक स्वरूप जाण, इक केवल भांग ॥२॥ नाणानर
 नासथो ए, चेतन नाण प्रकाश । मसम पदमें हीरप
 नित चाहन अबकाश ॥३॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ।

॥ अथ ज्ञानपद स्तवन ॥

(म्हारे अनि उद्धरंगे, ए चाल)

जिनवर भापिन आगम भणिषा, नत्व यथास्थित
 गमिया जी ॥ म्हारे जगजन नाम्ना ॥ ते उत्तम वर नांग
 कहाये, भविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥
 भक्षाभक्ष कुपंध सुपंधा, पेयापेय अग्रंधा जी ॥ म्हा० ॥
 देव कुदेव अहित हिनधारी, जाणें जेण विचारी जी ॥
 म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोष है इंड्री मारु, तेण परोक्ष
 विचारु जी ॥ म्हा ० ॥ ओही मग केवल हे वारु, जीव
 प्रत्यक्ष सुधारु जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ अथ विजसम वलें जग
 जाणें, लोकादिश अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिसुवन पत्रे

जातु पर्याय, धारि शुभ अध्ययनार्थं जी ॥ म्हा० ॥ ४४ ॥
 नागापर्याय उपशम क्षयार्थ, जेसन नागाकुं विलम्ब जी
 ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भवि जन हरये, निमदिन कुज-
 म्हाता निररै जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ज्ञानपद स्मयन ॥

॥ अथ ज्ञानपद स्तुति ॥

मनि भ्रुति इंद्रा जनित कर्तिये कर्तिये गुण संभारं
 जी, आत्मभारि गणपर विचारि द्वादस अंग विस्तारं
 जी । अपधि मन पर्येय केवल बलि प्रत्यक्ष रूप अथ-
 भारं जी, ए पांच ज्ञानतः वेदो पूजा भविजनने सुख-
 कारो जी ॥ इति ज्ञानपद स्तुति ॥

अथ आष्टमचारिप्रपद वैश्ववेदन ॥

जस्य पर्याय शालु पाप, जग ५ मसिनेद । नमन
 करे शुभ भाव लाप, पून नरपति मुंद ॥ १ ॥ अंवे परि
 अरिहेतराय, करि पर्म निवेद । सुमति वेप मीन गुणि
 युत, दे सुख्य आमंद ॥ २ ॥ इपु वृति मान कामायर्था
 ए, रतिम लेम सुविधेय । जीव अरिभूतः शारभम, न-
 मन करत निम संत ॥ ३ ॥ इति आष्टमचारिप्रपद वैश्ववेदन ॥

आष्टमचारिप्रपद स्मयन ॥

निविंशत्य अज निर्गुणा । विदाभाम निमंग, सुजानी
 सांभलां) देरा ॥ मृतिं हीन पोसन कर, कृपी पुद्गा ० रंग (सु०)
 ॥ १ ॥ स्वर्द्धक कारका पर्याया, कांवे कारक भाव (सु०)

कृत्वा जोग सुधा मना , लब्धा संव स्वभाव (सु०) ।
 ॥ २॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धि लहे जगमान (सु०) ।
 मध्ये वसु ममये लहे , अंते द्वौते जाण (सु०) ॥ ३ ॥
 सहकारी मानसमुग्धा , कारण रम्य वलेण (सु०) ।
 घम्य प्रकारता , सम प्रभूत का तेन (सु०) ॥ ४ ॥
 धन रूपी भलो, चेतन संगम धाम (सु०) कर वन मिन
 पद धर्म में , कुशल भवतु अमिगम (सु०) ॥ ५ ॥
 ॥ इति चारित्र्य पद स्तवन ॥

अथ चारित्र्यपद स्तुति ॥

करम अपनय दूर लपाये आत्म ध्यान लगीं जी ।
 पारे भावना सुधी भाये सागर पार उतारै जी । परम
 राज कुं दूर तजी ने चकी संगम भारै जी । पर
 चारित्र्य पद निम यन्दो आत्म गुण हिनारै जी ।
 इति चारित्र्य पद स्तुति ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीकायभादिक सीवेनाथ, तद्भव जिय जाण । रि
 धनेरणि पाल्य, मध्य गुदुज परिमाण ॥ १ ॥ वसु
 मित आमो मरी , आदिक मन्त्रि निदान । भेदे मन्त्र
 युत म्पिणे, दगन कर्म विमान । २ ॥ नवमो श्री मा
 नलोप . इन्द्रा मंथ मन्त्र । वन्दन मे निम सीव
 दूर भवतु भवतु ॥ ३ ॥ इति तप

अथ तपपद स्तवन ॥

धारम भेद भणया जिनराजै, याद्य मणा जगंकारै
 रे(जिब पदत्रेणि)। तिण भव मिद्रि मणा धर जाता ।
 जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥१॥(जि०)समता महिमै
 जिनते भारी,भर्ता कर्मपधु पिणकारै(जि०)जीव
 कनक में कर्म कयोग । दहे तप पाषक का जोरा रे
 (जि०) ॥२॥तप तम्यर ना कुसम हे आद्रि , देव नर
 नी फलते मिद्रि रे(जि०) पाप सकल हे तमनी राशी,
 तपभानु से जाय नारी रे(जिब०) ॥३॥जसप पसाये
 लहियै वारु । लब्धां मगरी जग हिन वारु रे(जि०)
 अति दुषर पृण म्वाध्या हीना, काम माने वांकि
 मारे (जि०) ॥४॥इच्छा रोधन रूपा कहिये,तपपद ही
 येसन बहिये रे (जि०)पाठक हीरधर्म शृषा से । नव
 पद कुशाला कुं भासे रे ॥जि०५॥इति तपपदस्तवन ॥

अथ तपपद स्तुति ॥

इच्छारोधन तप से भाग्या आगम तेहनो मार्या
 जी, इष्ट्य भायने द्वादश दार्या जोग ममार्था मग्नी
 जी । येसन निजगुण परिणत पैर्या तेहीज तपगुण
 दार्या जी, म्पधि सकलनो कारण देर्या ईश्वर से मुख
 भार्या जी ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रमा, नवपद अभिरामी रे
 लोय ॥ अहो नव० ॥ कम्पणासागर गुणनिधि, जग
 अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन
 पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो
 लो० ॥ गहवा श्रीअरिहंतजी, नमुं चित्त उह्लासी रे
 लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी,
 धया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो ध० ॥ सिद्ध नमो
 भवि भावगी, जे आगम अरूपी रे लोय ॥ अहो जे०
 ॥ ३ ॥ गुण छतीमे सोभता, सुंदर सुखकारी रे लोय
 ॥ अहो सु० ॥ आचारज नीज पदै, वंदू अविकारी रे
 लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशामी, तप
 द्विविध आधारी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चौथे पद पा-
 ठक नमो, संवेग समधी रे लोय ॥ अहो सं० ॥ ५ ॥
 पंचाचार पालण परा, पंचाश्रव न्यागी रे लोय ॥ अहो
 पं० ॥ गुणरानी मुनि पांचमें, प्रणमुं बडभार्गी रे लोय
 ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें ओलखै, श्रुत अढा
 आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरमण नमो, ध्यानम
 शुभ भावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ज्ञान नमो गुण
 सासमे, जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ म्य पर
 प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान नियारे रे लोय ॥ अ० अ०

॥ ८ ॥ आठमें चारित्र्यपद नमो, परभय निवारी रे
 लोप ॥ अ० प० ॥ खांत्यादिक दस धर्मनां, जेह ते अ-
 धिकारी रे लोप ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नयमे बलि नय-
 पद नमो, पाह्याभ्यंनर भेदे रे लोप ॥ अ० पा० ॥ पांघ्या
 काल अनंनना, जे कर्म उच्छेदे रे लोप ॥ अ० जे०
 ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानर्था, ध्यावै शुभ भावै रे
 लोप ॥ अ० घ्या० ॥ नृप श्रीपालनर्था परै, मन धंछित
 पावै रे लोप ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आम् वैष्टुक मासर्मा,
 नय आंघिल करिये रे लोप ॥ अ० न० ॥ नव आंली
 विधि युत करी, शिष्यकमला धरिये रे लोप ॥ अ० शि०
 ॥ १२ ॥ मिद्वचक्रनी बहु परै, घर महिमा कीजे रे लोप
 ॥ अ० घ० ॥ श्रीजिनलाभ कहै मझा, अनुपम जस
 लीजे रे लोप ॥ अ० अ० ॥ १३ ॥ इति नवपद स्मरण ॥

अथ नवपद स्मरण २ जुं ॥ राग मारु ॥

मोग्धनायक जिनवरु जी, अनिमय जाम अनूप ।
 मिद्व अनंन महागुणी जी, परमानंद मरुप । भविक
 मन भारज्यो रे । भारज्यो नवपद ध्यान ॥ अ० ॥ १ ॥
 ॥ ए देर ॥ श्री आचारज गणधरु रे, गुण लक्ष्मीस
 निवास । पाठक पदधर मुनिवरु जी, श्रुत दायक सु-
 विलास ॥ अ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर जोभनाजी,
 साधु समभार्यन । सम्यग्दर्शन सुंदरु जी, ज्ञान प्रकाश

अंगेन ॥ भ० ॥ ३ ॥ संवर साधना चरण छै रे, तब
 वल्लभ विधि दोग्य । ए नयपदना ध्यानधी रे, निरुपाधिक
 सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे,
 मूल ए नयपद जाण । अविचल अनुभव कारणे जी,
 नितप्रति नमन कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥ इति पद ॥

॥ रागप्रभाति ॥ नयपद ध्यान धरें रे ॥ भविका न० ॥
 मन ध्यान काया कर एकान्ते, विरुधा दूर हरी रे ॥ भ०
 न० ॥ १ ॥ मंत्र जई अरु मंत्र घने रा । इन सब कुं
 विमरो रे । अग्निहोत्रादिक नयपद जपने, पुण्य भंडार
 भरो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ घट मिट्ट मय निध भंगल माया,
 भंगति मरुज यरो रे । घातनन्द शर्का बलिहारी, शिव
 मरु धोज यरो रे ॥ भ० ॥ न० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पुनः ॥ जीया अनुर सुजाण, नयपद के गुण गावरो
 ॥ जी० ॥ नयपद मद्रिमा जगमें मोटी, गणधर पाव न
 पाव रे ॥ जी० ॥ १ ॥ करम निरानिम दूर करम को,
 सुन्दर सुदु बवाव रे ॥ जी० ॥ २ ॥ इनको पृष्ठ आ-
 कषन करमा, अजरामर सुख पावरो ॥ जी० ॥ ३ ॥ ए
 तिव सब आगामी शायो, नयपद संगवमावरो ॥ जी०
 ॥ ४ ॥ परम जमा शिव समगाव रे, समर समर दुख
 भावरो ॥ जीया० ॥ ५ ॥ निर ॥

॥ श्रीनवपद स्तुति ॥

मम संदन हो सिद्धचक्रपदम् ,
 मन पाँटिल दे शिषराजपदम् ।
 महू संघन में पद संघ्रपदम् ,
 शुभप्पान नमे शुभध्येयपदम् ॥ १ ॥
 परितंनपटं दुय सिद्धपदम् ,
 गिग मूरिपटं षड् ज्ञायापदम् ।
 महू माहू दशज्ञानज्ञानपरम् ,
 तपकर्म दलं श्रेय होय अरम ॥ २ ॥
 अतो भव्यजनां नय आम्लकरो ,
 तनुरोग हरो कहै जाग्र म्वरो ।
 तुम ध्यान धरो पहूमान करो ,
 भव्यशर परो शिषराज शरो ॥ ३ ॥
 गच्छ स्वस्वतरेमें सुख्य पूर्ण दिगो ,
 विमलेश्वर व्रतमें मान्य दिगो ।
 जय हो जय हो मुझ प्राण प्रिगो ,
 कहै श्रेयसागर आराध दिगो ॥ ४ ॥

॥ श्री नवपदस्तुतिः ॥

त्रिदं चक्रं चारं वन्दे ॥ १ ॥
 श्रीमन्मेकं पादं नीमि ॥ २ ॥

शास्त्रे चोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥

मानिष्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपद वैश्ववन्दनानि ॥

उत्पन्नसन्नागा महोमपाणं , सप्राविष्टेभ्यः
 संठियाणं । सदेमपाणं दिगमउक्तपाणं, नमो नमो
 मया जिगाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणामाणं सुरमापाणं
 नमो नमोऽणंनचउक्तपाणं । मुरीगा दुरीकयकृमापाणं
 नमो नमो मुरममण्यहाणं ॥ २ ॥ सुमन्त्रविश्याण्य
 राणं , नमो नमो यागमकुंजराणं । साहण संसा
 संजपाणं, नमो नमो सुद्धदपाद्माणं ॥ ३ ॥ जिगुन
 चइ लक्षणगाम, नमो नमो निष्पल्लुंगणाम । भ्र
 संयोहमोटरम , नमो नमो नाणदियागाम ॥ ४ ॥
 भारादियन्त्राण मदिगम, नमो नमो संजमर्
 गाम । कर्मदुमोभ्यु नककृमागाम, नमो नमो वि
 मयाभगाम ॥ ५ ॥ इइ नवपदमिदं लद्धिविज्ञान
 नवदिवसुभ्याम ही निवेशागामे । दिगव सु
 मारं , प्राणित्पादावगां । विजय विजय नर्क , नि
 ट्पनं, नमामि ॥ ६ ॥ इति नवमम ॥

॥ पुनः द्वितीयप्रश्नः ॥

आद्यदिग्म उदाह कर्त्तुं , अति सुन्दर ११ ।
 देवा विदुः अकल्प शास्त्रे भाष्यमाल्या भव ॥ १५

आधारज उपजाय माधु , ममता रस धाम । जिन
 भाषित सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
 पौध रोज गुण श्रेयदाय, नाण चरण नय शुद्ध । ध्याये
 परमानन्दपद , ए नय पद अविच्छेद ॥ ३ ॥ इह पर-
 भय आनन्दकन्द , जग माहि प्रसिद्धी । चिनामणि
 मम ज्ञान जोग , बहु पुरायै लद्धी ॥ ४ ॥ तिहुअण
 सार अपार एह महिमा मनधारां,परिहर पर जेजाल-
 जाल निम एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पद सेवतां ,
 महजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि , प्रगटे
 वेगन भूप ॥ ६ ॥ द्वितीयं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपद्मी की स्तुति॥

निरूपम सुखदायक जगनायक,लायक निवर्गनि
 गार्मा जी । करुणासागर निजगुण आगर , शुभ स-
 मता रस धार्मा जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनयर,
 ध्याये जे मन रंगेजी । ते मानय श्रीपाल तर्णापेरं,पामे
 सुख सुखमंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आधारिज पा-
 टक , माधु महागुणध्वंजाजी । दरिसण नाण चरण
 नय उत्तम, नयपद जग जयध्वंजा जी ॥ एहनुं ध्यान च-
 रणां लहिये, अविचल पद अचिनाशीजी । ते सघला
 जिननायक नमिये , जिण ए नीमि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आसु मासमनाहार निम बलि,चैत्रकमास जगीशे जी ।

जास्त्रे शोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥

सानिध्यं कुर्यन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवयद् वन्द्यवन्दनानि ॥

उत्पन्नमन्त्राणां महोमघाणं , मन्त्रादिहेतव्याणां
 संदिवाणं । सदेमणाणं दिगसज्जगणाणं, नमो नमो हि
 मया जिगाणं ॥ १ ॥ मिद्धाणमाणं सुरमासणां
 नमो नमोऽणमचउकपाणं । गृहीणा दृहीरुगदुगणां
 नमो नमो गुरमघण्टाणं ॥ २ ॥ मुसन्धविशारकना
 णं , नमो नमो यागगकुंजराणं । माहृण संसादि
 संजघाणं, नमो नमो मुद्धदपादमाणं ॥ ३ ॥ जिगुननं
 चद् क्षण्यगणम, नमो नमो निष्मलदंमगणम । भ्रमण
 संघोऽणमोऽणम , नमो नमो नागादिवापणम ॥ ४ ॥
 सागद्विअर्षीय मदिगणम, नमो नमो संजघर्षी
 गणम । कर्मदुसोऽणम नकृणाणम, नमो नमो विप
 लवावणम ॥ ५ ॥ इह नवयमिदं म्दिद्विज्जातवि
 यमिगमदुवाम ही निरेज्ञाणमाय । दिगप सु
 णां , त्यागिपादावपां । विज्ञय विज्ञय चक्रे , वि
 दुक्क नमादि ॥ ६ ॥ इति मन्त्रम ॥

॥ पून दिनेयवा + म ॥

आद्यदिह-न ३२११ कति . चानि मुद्रा ३२११
 हेतु निद चक्रेय इत्येव यानमगुण मय ॥ १ ॥

आधारज उवज्ज्वाप साधु , समता रस धाम । जिन
 भाविन सिद्धान्त शुद्ध , अनुभव अभिराम ॥ २ ॥
 बोध बीज गुण संशदाए, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो
 परमानन्दपद , ए नव पद अविच्छिन्न ॥ ३ ॥ इह पर-
 भय ध्यानन्दकन्द , जग माहि प्रसिद्धी । चिंतामणि
 मम जाम जोग , यह पुरायै लद्धी ॥ ४ ॥ तिहुअण
 मार अवार एह मतिमा मनधारो,परिहर परजंजाल-
 जाल निम एह संभारो ॥५॥ सिद्धचक्र पद शेषतां ,
 महजानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्पाणनिधि , प्राटे
 जेवन भूप ॥ ६ ॥ द्वितीयं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीनवपदजी की स्तुति॥

निरूपम सुखदायक जगनायक,लायक शिष्यगति
 गार्गी जी । कल्याणसागर निजगुण आगर , शुभ स-
 मता रस धार्मी जी । श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनपर,
 ध्याये जे मन रंगेजी । ते मानव श्रीपाल मर्णापरे,पामे
 सुख सुरमंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पा-
 टक , मायु महागुणवंताजी । दरिसण नाण चरण
 तव उत्तम, नवपद जग जपवंता जी ॥ एहनुं ध्यान व-
 रतां लहिंये, अविच्छल पद अविनाशीजी । ते मघला
 जिननायक नमिये , जिग ए नानि प्रकाशीजी ॥ २ ॥
 आसु मासमनाहार निम बलि,शत्रकमास जगोशे जी ।

- १३ अक्षयपलगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १४ पसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १६ मृदुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १७ सर्वसंगमुक्तिगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १८ ऋजुगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 १९ द्वादशविधनपगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २० सप्तदशविधसंपन्नगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २२ गौणगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २३ अकिंचनगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २४ प्रामर्शगुणसंयुताय श्री आ० ॥
 २५ अनित्यभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २६ अशरणभावनाभावकाय श्री आ० ॥
 २७ संसारस्वरूपभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २८ एकत्वस्वरूपभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 २९ अन्यत्वभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३० अनुनिभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३१ आश्रयभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३२ संघभाषनाभावकाय श्री आ० ॥
 ३३ निर्जराभाषनाभावकाय श्री आ० ॥

३४ लोकम्यरूपभावनाभावकाय श्री आ० ॥

३५ वांभिरुल्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥

३६ धर्मदुर्लभभावनाभावकाय श्री आ० ॥

॥ इतिआचार्ये षट्त्रिंशत् गुणाः ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्री आचारांगमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उपाध्याय नमः

२ श्री सुयमहांगमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

३ श्री ठाणांगमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

४ श्री समवायांगमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

५ श्री भगवतीमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

६ श्री ज्ञातामूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

७ श्री उपामगदस्मामूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

८ श्री अंतगडमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

९ श्री अणुत्तरोववाङ्मयमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

१० श्री प्रक्षन्धाकरणमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

११ श्री विपाकमूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ० ॥

१२ श्री उत्पादपूर्वपठनगुणयु० ॥

१३ अघ्रावणीपूर्वपठनगुणयु० ॥

१४ वीर्यप्रवादपठनगुणयु० ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयु० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री मा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शान्तादिद्वाविंशतिपरीमहसहनतन्वराग श्री मा०
 २७ मरणांतउपसर्गमहनतन्वराग श्री मा०
 ॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥
- १ परमार्थमंगल्यनारूपश्रीमहर्जनाय नमः ॥
 २ परमार्थजननेयनारूप मह० ॥
 ३ शशापन्नदर्शनयर्जनरूप मह० ॥

- ११ घनस्पनिकापरक्षकाय श्री सा०
- १२ असकापरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तेहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १६ चउहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ ध्यानगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतन्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतन्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसद भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंग्रहनायरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थजन्मेयनारूप सद् ॥
- ३ दयापन्नदर्शनयर्जनरूप सद् ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शृङ्गाररूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैशाखरूप सह० ॥
 ८ अर्द्धचिन्तनरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनरूप सह० ॥
 १० धैर्ययिनरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रयत्नविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति विनयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमत्तमारमिति विनयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमत्तस्थितमात्वादिमारमिति वि० ॥
 २१ चांक्षादृषणरतिताप सह० ॥
 २२ बांक्षादृषणरतिताप सह० ॥
 २३ विचित्रमारूपदृषणरतिताप सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रतीकाररूपदृषणरतिताप सह० ॥

- ११ घनस्पतिकापरक्षकाय श्री मा०
- १२ असकापरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १५ तेहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १६ चउहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री मा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभावनाभावकाय श्री मा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ घचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीमहमहनतन्पराय श्री मा०
- २७ मरणांतउपसर्गमहनतन्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदस्य भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंग्रहनायरूपश्रीमद्दर्शनाय नमः ॥
- २ परमार्थजन्मेवनायरूप मह० ॥
- ३ दयापद्मदर्शनयर्जनरूप मह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- ५ शुभ्ररूप सह० ॥
- ६ धर्मरूप सह० ॥
- ७ वैपायुकरूप सह० ॥
- ८ अर्द्धदिनरूप सह० ॥
- ९ सिद्धदिनरूप सह० ॥
- १० चैत्यदिनरूप सह० ॥
- ११ भूतदिनरूप सह० ॥
- १२ धर्मदिनरूप सह० ॥
- १३ साधुवर्गदिनरूप सह० ॥
- १४ आचार्यदिनरूप सह० ॥
- १५ उपाध्यायदिनरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनदिनरूप सह० ॥
- १७ दर्शनदिनरूप सह० ॥
- १८ समार जिनशास्त्रमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- १९ संसार जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिसारमिति चि० ॥
- २१ तांकाद्वयकारहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षाद्वयकारहिताय सह० ॥
- २३ विधिबिस्मकारद्वयकारहिताय सह० ॥
- २४ बुद्धिप्रदोकारद्वयकारहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनस्य सह० ॥
 ५ दृष्ट्यास्य सह० ॥
 ६ धर्मरागस्य सह० ॥
 ७ वैषाद्यस्य सह० ॥
 ८ अहंतिनस्य सह० ॥
 ९ सिद्धयिनस्य सह० ॥
 १० धन्ययिनस्य सह० ॥
 ११ श्रुतयिनस्य सह० ॥
 १२ धर्मयिनस्य सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनस्य सह० ॥
 १४ आचार्ययिनस्य सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनस्य सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनस्य सह० ॥
 १७ दर्शनयिनस्य सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चित्तवन्नस्य सह० ॥
 १९ संसारे जिनमतसारमिति चित्तवन्नस्य सह० ॥
 २० संसारे जिनमतस्थितमाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ लोकादृषणरतिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरतिताय सह० ॥
 २३ विचित्रिस्वरूपदृषणरतिताय सह० ॥
 २४ बुद्धिप्रतीकारूपदृषणरतिताय सह० ॥

- ४ कुद्दर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रुपरूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपायुत्तररूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनयरूप सह० ॥
 ९ मिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ भ्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धम्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्लिमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहट्टिप्रशंमारूपदृषणरहिताय सह० ॥



- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपायुनरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनगरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ माधुर्याविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्लिप्तारूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहप्रिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मगगरूप सह० ॥
 ७ वैषाष्टनपरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनपरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनगरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनपरूप सह० ॥
 ११ धृतविनपरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनपरूप सह० ॥
 १३ माधुवर्गविनपरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनपरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनपरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनपरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनपरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ यनस्पनिकापरक्षकाय श्री मा०
 १२ असकापरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १५ त्रैदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १६ चतुर्दंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री मा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०
 ॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥
 १ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजनृमेवनारूप सह० ॥
 ३ दयापददर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाष्ट्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुयर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विनिक्तिमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रूपरूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाष्टरूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनयरूप सह० ॥
 ९ मिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० धैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ माधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 २१ शंकादृपणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृपणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदृपणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृपणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रूपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपाष्ट्यरूप सह० ॥
 ८ अहंदिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्लिमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रज्ञामारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- १ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 २ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ३ धर्मरागरूप सह० ॥
 ४ वैपाकृत्परूप सह० ॥
 ५ अहंदिनयरूप सह० ॥
 ६ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 ७ वैत्ययिनयरूप सह० ॥
 ८ श्रुत्ययिनयरूप सह० ॥
 ९ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १० साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 ११ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १२ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १३ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १४ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १५ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १६ संसारे जिनमनमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १७ संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 १८ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 १९ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २० विचिपित्तसारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २१ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पनिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १५ तेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंनयनारूपश्रीसहस्रनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्मेवमारूप सह० ॥
 ३ दयापत्तदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- १ कुदृशानवर्जनरूप सह० ॥
 २ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ३ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपायुकरूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुचर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनजामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमत्सरमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमत्स्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादृपणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृपणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्त्स्मारूपदृपणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृपणरहिताय सह० ॥

- ११ वनमनिकागम्भकाय श्री मा०
 १२ प्रमकागम्भकाय श्री मा०
 १३ एकेन्द्रियर्जायगम्भकाय श्री मा०
 १४ वेद्वेन्द्रियर्जायगम्भकाय श्री मा०
 १५ त्रैवेन्द्रियर्जायगम्भकाय श्री मा०
 १६ चतुर्वेन्द्रियर्जायगम्भकाय श्री मा०
 १७ पंचवेन्द्रियर्जायगम्भकाय श्री मा०
 १८ सोमनिग्रहकाय श्री मा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री मा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री मा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री मा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 २४ घचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीमहसहनतन्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतन्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसत्त भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थज्ञानसेवनारूप सद० ॥
 ३ दयापक्षदर्शनवर्जनारूप सद० ॥

- १ कुद्दर्शनवर्जनरूप सह० ॥
- २ शुभ्रपारूप सह० ॥
- ३ धर्मरागरूप सह० ॥
- ७ वैषाद्यरूप सह० ॥
- ८ अहंछिनयरूप सह० ॥
- ९ सिद्धचिनयरूप सह० ॥
- १० चैत्यचिनयरूप सह० ॥
- ११ श्रुतचिनयरूप सह० ॥
- १२ धर्मचिनयरूप सह० ॥
- १३ साधुवर्गचिनयरूप सह० ॥
- १४ आचार्यचिनयरूप सह० ॥
- १५ उपाध्यायचिनयरूप सह० ॥
- १६ प्रवचनचिनयरूप सह० ॥
- १७ दर्शनचिनयरूप सह० ॥
- १८ संसारे जिनज्ञानसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
- १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
- २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
- २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
- २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
- २३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सह० ॥
- २४ कुदृष्टिप्रज्ञासारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पतिकायरक्षकाय श्री मा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ द्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १५ त्रेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चतुष्टन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ ध्यानगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वारविशनिपरीसहसहनतन्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतन्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंयत्नरूपश्रीसदर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्यमेवनारूप मह० ॥
 ३ दयापन्नदर्शनयजनरूप मह० ॥

- १ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 २ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ३ धर्मरागरूप सह० ॥
 ४ वैपायुक्तरूप सह० ॥
 ५ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ६ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 ७ चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ८ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 ९ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १० साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 ११ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १२ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १३ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १४ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १५ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १६ संसारे जिनमनमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १७ संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 १८ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 १९ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २० विचिबिन्मारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २१ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ७ धनसन्निहायशुक्लाय श्री मा०
 ८ प्रसन्नायशुक्लाय श्री मा०
 ९ एकेन्द्रियर्जायशुक्लाय श्री मा०
 १० वेद्वेन्द्रियर्जायशुक्लाय श्री मा०
 ११ तैद्वेन्द्रियर्जायशुक्लाय श्री मा०
 १२ चउद्वेन्द्रियर्जायशुक्लाय श्री मा०
 १३ पंचेन्द्रियर्जायशुक्लाय श्री मा०
 १४ लोभनिघ्नकाय श्री मा०
 १५ क्षमागुणयुक्ताय श्री मा०
 १६ शुभभावनाभावकाय श्री मा०
 १७ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 १८ संजमयोगयुक्ताय श्री मा०
 १९ मनोगुप्तियुक्ताय श्री मा०
 २० वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २१ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २२ शोभादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतन्वराय श्री सा०
 २३ मरणांतउपसर्गसहनतन्वराय श्री मा०
 ॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥
 परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसहर्षनाथ नमः ॥
 परमार्थज्ञानसेवनारूप सह० ॥
 व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रूपरूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषावृत्तरूप सह० ॥
 ८ अर्हट्टिनरूप सह० ॥
 ९ मिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ जंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रसंगसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाण्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हटिनरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनरूप सह० ॥
 १० पैत्ययिनरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनज्ञानारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिंतनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितसाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा०
 १२ ब्रसकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ बेहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १५ तेहन्द्रियजावरक्षकाय श्री सा०
 १६ चउहन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 २२ संज्ञमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीमहमहनतत्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसदु भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थमन्त्रवना रूपश्रीमद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्मनेवना रूप मद् ॥
 ३ दयापन्नदर्शनवर्जन रूप मद् ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपाकृत्यरूप सह० ॥
 ८ अर्हटिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिन्तयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादृपणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृपणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रिमारूपदृपणरहिताय सह० ॥
 २४ कुहप्रिप्रशंसारूपदृपणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पतिकारक्षकाय श्री सा०
 १२ असक्तारक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ त्रैकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १५ तैकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १६ चतुर्केन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १७ पंचकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभावनाभावकाय श्री सा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहमहनतत्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंस्मरणरूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थज्ञानसेवनारूप सह० ॥
 ३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुभ्रपारूप सह० ॥
 ६ भर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषावृत्तरूप सह० ॥
 ८ अर्हटिनरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनगरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चित्तवनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चित्तवनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थित्तमाध्यादिसारमिति चि० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रतीसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाद्युत्तररूप सह० ॥
 ८ अर्हत्तियरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संमारे जिनाज्ञामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संमारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संमारे जिनमनस्थितस्वाध्यादिमारमिति चि० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचिक्छिमारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंमारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पनिकापरक्षकाय श्री मा०
 १२ असकायरक्षकाय श्री सा०
 १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १४ वेद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १५ तद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १६ चउद्वेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री मा०
 १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
 १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
 १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
 २० शुभभाषनाभावकाय श्री मा०
 २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री मा०
 २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
 २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २४ घनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
 २६ शीतादिद्विविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा०
 २७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री मा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसट् भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंनयनारूपश्रीसद्दर्शनाय नमः ॥
 २ परमार्थजन्मवेचनारूप सह० ॥
 ३ दगापन्नदर्शनवर्जनरूप सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैषाद्युत्तररूप सह० ॥
 ८ अर्हतिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धविनयरूप सह० ॥
 १० चैत्यविनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतविनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मविनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्यविनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनविनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनसारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिसारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रित्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

- ४ कुदर्शनवर्जनरूप सह० ॥
 ५ शुश्रूषारूप सह० ॥
 ६ धर्मरागरूप सह० ॥
 ७ वैपायूच्यरूप सह० ॥
 ८ अहंदिनयरूप सह० ॥
 ९ सिद्धयिनयरूप सह० ॥
 १० चैत्ययिनयरूप सह० ॥
 ११ श्रुतयिनयरूप सह० ॥
 १२ धर्मयिनयरूप सह० ॥
 १३ साधुवर्गयिनयरूप सह० ॥
 १४ आचार्ययिनयरूप सह० ॥
 १५ उपाध्याययिनयरूप सह० ॥
 १६ प्रवचनयिनयरूप सह० ॥
 १७ दर्शनयिनयरूप सह० ॥
 १८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 १९ संसारे जिनमनमारमिति चिंतयनरूप सह० ॥
 २० संसारे जिनमनस्थिममाध्यादिमारमिति चिं० ॥
 २१ शंकादूषणरहिताय सह० ॥
 २२ कांक्षादूषणरहिताय सह० ॥
 २३ विचित्रिस्माररूपदूषणरहिताय सह० ॥
 २४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सह० ॥

- ११ घनस्पर्शिकापरक्षकाय श्री सा०
- १२ घ्रसकायपरक्षकाय श्री सा०
- १३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १४ वेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १५ तेदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १६ चउदंन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा०
- १८ लोभनिग्रहकाय श्री सा०
- १९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा०
- २० शुभभायनाभावकाय श्री सा०
- २१ प्रतिलेखनादिक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा०
- २२ संजमयोगयुक्ताय श्री सा०
- २३ मनोगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २४ वचनगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २५ कायगुप्तियुक्ताय श्री सा०
- २६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतन्पराय श्री सा०
- २७ मरणांतउपसर्गसहनतन्पराय श्री सा०

॥ अथ सम्यक्तके सदसठ भेद लिख्यते ॥

- १ परमार्थसंज्ञयनारूपश्रीसदृशनाय नमः ॥
- २ परमार्थज्ञानुमेयनारूप सदृ० ॥
- ३ दयापन्नदर्शनवर्जनरूप सदृ० ॥

४ कुदशनवर्जनरूप सह० ॥

५ शुभ्ररूप सह० ॥

६ धर्मरामरूप सह० ॥

७ वैषावृत्तरूप सह० ॥

८ अर्हट्टिनरूप सह० ॥

९ मिद्धविनयरूप सह० ॥

१० चत्थविनयरूप सह० ॥

११ श्रुतविनयरूप सह० ॥

१२ धम्मविनयरूप सह० ॥

१३ साधुवर्गविनयरूप सह० ॥

१४ आचार्यविनयरूप सह० ॥

१५ उपाध्यायविनयरूप सह० ॥

१६ प्रवचनविनयरूप सह० ॥

१७ दर्शनविनयरूप सह० ॥

१८ संसारे जिनाज्ञामारमिति चिन्तनरूप सह०

१९ संसारे जिनमनमारमिति चिन्तनरूप सह०

२० संसारे जिनमनस्थितमाध्यादिमारमिति चि०

२१ शंकादृषणरहिताय सह० ॥

२२ कांक्षादृषणरहिताय सह० ॥

२३ विचिकित्सारूपदृषणरहिताय सह० ॥

२४ कुदप्रिपदांसारूपदृषणरहिताय सह० ॥

२५. तत्परिचयदृपणरहिताय मह० ॥
 २६ प्रवचनप्रभावकरूप सह० ॥
 २७ धर्मकथाप्रभावकरूप सह० ॥
 २८ यादिप्रभावकरूप सह० ॥
 २९ नैमित्तिकप्रभावकरूप सह० ॥
 ३० तपस्विप्रभावकरूप सह० ॥
 ३१ प्रज्ञप्त्यादिकविद्याभृत्प्रभावक मह० ॥
 ३२ चूर्णअंजनादिसिद्धप्रभावक सह० ॥
 ३३ कविप्रभावकरूप सह० ॥
 ३४ जिनशासने कौशलता भूषण स० ॥
 ३५ प्रभावनाभूषणरूप स० ॥
 ३६ तीर्थसेवाभूषणरूप स० ॥
 ३७ स्थैर्यनाभूषणरूप स० ॥
 ३८ जिनशासने भक्तिभूषणरूप स० ॥
 ३९ उपशमगुणरूप स० ॥
 ४० संवेगगुणरूप स० ॥
 ४१ निर्वेदगुणरूप स० ॥
 ४२ अनुकंपागुणरूप स० ॥
 ४३ आस्तिक्यगुणरूप सह० ॥
 ४४ परतीर्थकादिवेदनवर्जनरूप सह० ॥
 ४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरूप सह० ॥

- ४६ परमोर्धिकादिआलापयर्जनरूप स० ॥
 ४७ परमोर्धिकादिमंलापयर्जन रूप श्रीस० ॥
 ४८ परमोर्धिकादि अगनादिदानयर्जन श्रीस० ॥
 ४९ परमोर्धिकादि गंधपुष्पादिप्रेषणयर्जन श्रीस० ॥
 ५० गजाभिद्योगाकारयुक्तश्रीसह० ॥
 ५१ गणाभिद्योगाकारयुक्तश्रीस० ॥
 ५२ घालाभिद्योगाकारयुक्त श्री सह० ॥
 ५३ सुगभिद्योगाकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५४ कांसारघृन्त्याकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५५ गुम्फनिघट्टकारयुक्त श्रीसह० ॥
 ५६ सम्पत्तयचारित्र्यधर्मस्य मूलमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ५७ चारित्र्यधर्मस्य पुरम्प द्वारमिति चिन्तन श्री सह० ॥
 ५८ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिज्ञानमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ५९ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिज्ञानमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ६० चारित्र्यधर्मस्य धारकमिति चिन्तनरूप सह० ॥
 ६१ चारित्र्यधर्मस्य भाजनमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६२ चारित्र्यधर्मस्य सक्षिभमिति चिन्तनरूप स० ॥
 ६३ अस्मिन्जीव इति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री सह० ॥
 ६४ स च जीवा निम्नइति श्रद्धानस्थानयुक्त सह० ॥
 ६५ स च जीवः कर्माणि करोमीति श्रद्धानस्थानयुक्त स०
 ६६ स च जीवः कृतकर्मोऽपि वेदयतीति श्रद्धानस्थानयुक्तसं

६७ जावस्थास्ति निर्व्याणमिति अद्वानस्थानयुक्तश्रीस०
 ६८ अस्ति पुनर्मोक्षोपायेति अद्वानस्थानयुक्तश्रीस०

इमी तरह अइयउ स्वामामग देना

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेन्द्रियव्यंजनावग्रहमनिज्ञानाय नमः ॥
- २ रसनेन्द्रियव्यंजनावग्रहमनिज्ञानाय नमः ॥
- ३ घ्राणेन्द्रियव्यंजनावग्रह मति० ॥
- ४ श्रोत्रेन्द्रियव्यंजनावग्रह मनि० ॥
- ५ स्पर्शनेन्द्रियअर्थावग्रह मनि० ॥
- ६ रसनेन्द्रियअर्थावग्रह मनि० ॥
- ७ घ्राणेन्द्रियअर्थावग्रह मनि० ॥
- ८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रह मनि० ॥
- ९ श्रोत्रेन्द्रियअर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन इन्द्रिय अर्थावग्रह मनि० ॥
- ११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १२ रसनेन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १६ मन इन्द्रिय ईहा मनि० ॥
- १७ स्पर्शनेन्द्रिय अणाय मति०
- १८ रसनेन्द्रिय अणाय मनि० ॥

- १० घ्राणेन्द्रिय अपाय मनि० ॥
 १० बभ्रुरिन्द्रिय अपाय मनि० ॥
 ११ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय मनि० ॥
 १२ मन इन्द्रिय अपाय मनि० ॥
 १३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १४ रसनेन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १५ घ्राणेन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १६ बभ्रुरिन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १८ मन इन्द्रियधारणा मनि० ॥
 १९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 २० अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 २१ संज्ञि श्रुतज्ञानाय नमः ॥
 २२ असंज्ञि श्रुतज्ञा० ॥
 २३ सम्यक् श्रुतज्ञा० ॥
 २४ मिथ्याश्रुतज्ञा० ॥
 २५ सादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 २६ अनादिश्रुतज्ञानाय नमः ॥
 २७ सपर्यवसनिश्रुत० ॥
 २८ अपर्यवसनिश्रुत० ॥
 २९ गमिकश्रुत० ॥

- ४० अगमिकश्रुत० ॥
 ४१ अंगविष्टश्रुत० ॥
 ४२ अनंगप्रविष्टश्रुत० ॥
 ४३ अतुगामि अवधिजानाय नमः ॥
 ४४ अननुगामि अवधि० ॥
 ४५ घट्टमान अवधि० ॥
 ४६ हीयमान अवधि० ॥
 ४७ प्रतिपानि अवधि०
 ४८ अप्रतिपानि अवधि० ॥
 ४९ प्राप्नुमनिमनःपर्यवज्ञानाय नमः ॥
 ५० विपुलमनिमनःपर्यवज्ञा० ॥
 ५१ लोफालोकप्रकाशकर्त्राकेयलजानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ७२ भेद ॥

इमं तदहं इत्यादि २१ अक्षरान्तरं ॥

अथ चारित्र्यपदके ७० भेद लिख्यते ॥ —

- १ प्राणान्तिवानशिरमणरूपचारित्र्याय नमः ॥
 २ मृदावादशिरमणरूपचारि० ॥
 ३ अदनादानशिरमणरूपचारि० ॥
 ४ मैथुनशिरमणरूपचारि० ॥
 ५ पत्नियहशिरमणरूपचारि० ॥
 ६ श्रमाधर्मरूपचारि० ॥

- जाज्ञधर्मरूपचारि० ॥
दुःसाधर्मरूपचारि० ॥
नित्यधर्मरूपचारि०
तपोधर्मरूपचारि०
संप्रथमधर्मरूपचारि० ॥
मन्यधर्मचारि० ॥
जायधर्मरूपचारि० ॥
अविचनधर्मरूपचारि० ॥
संभधर्मरूपचारि० ॥
पृथ्वीरक्षासंप्रथमचारि० ॥
उदगरक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
तेजोरक्षासंप्रथमचारि० ॥
वायुरक्षासंप्रथमचारि० ॥
धनस्रनिरक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
वेदन्दिग्रक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
तेजन्दिग्रक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
अनुदन्दिग्रक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
संचेन्दिग्रक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
अजायक्ष्मासंप्रथमचारि० ॥
प्रेक्षासंप्रथमचारि० ॥
उपेक्षासंप्रथमचारि० ॥

- ० अगमिकश्रुत० ॥
 १ अंगविष्टश्रुत० ॥
 २ अनेंगप्रविष्टश्रुत० ॥
 ३ अतुगामि अवधिजानाग नमः ॥ १.
 ४ अननुगामि अवधि० ॥
 ५ वर्द्धमान अवधि० ॥
 ६ हीयमान अवधि० ॥
 ७ प्रतिपाति अवधि०
 ८ अप्रतिपाति अवधि० ॥
 ९ प्राजुमनिमनःपर्यवजानाग नमः ॥
 १० विपुलमनिमनःपर्यवजा० ॥
 ११ लोफालोकप्रकाशकर्त्राकेयलजानाग नमः ॥

॥ इति ज्ञानपदके ११ भेद ॥

इमं नाह ३१ न ११ ११ ११ ॥

अथ चारित्र्यपदके ७० भेद लिख्यते ॥ -

प्राणानिधानविरमणरूपचारित्र्याय नमः ॥

सृष्ट्याद्यादविरमणरूपचारि० ॥

अदत्तादानविरमणरूपचारि० ॥

संशुनविरमणरूपचारि० ॥

परिग्रहविरमणरूपचारि० ॥

श्रमायमरूपचारि० ॥

- आर्जवधर्मरूपचारि० ॥
मृदुताधर्मरूपचारि० ॥
सुक्तिधर्मरूपचारि०
० तपोधर्मरूपचारि०
१ संयमधर्मरूपचारि० ॥
२ मन्थधर्मचारि० ॥
३ नान्यधर्मरूपचारि० ॥
४ अहिंसनधर्मरूपचारि० ॥
५ संभधर्मरूपचारि० ॥
६ पृथ्वीरक्षासंगमचारि० ॥
७ उदगरक्ष्मासंगमचारि० ॥
८ मैत्ररक्ष्मासंगमचारि० ॥
९ वातरक्षासंगमचारि० ॥
१० धमःधमिरभ्रामंगमचारि० ॥
११ वेदन्दिग्ररभ्रामंगमचारि० ॥
१२ तेजन्दिग्ररभ्रामंगमचारि० ॥
१३ अतन्दिग्ररभ्रामंगमचारि० ॥
१४ पंचेन्दिग्ररभ्रामंगमचारि० ॥
१५ अर्जाधरक्ष्मासंगमचारि० ॥
१६ वेत्तामंगमचारि० ॥
१७ उपेक्षामंगमचारि० ॥

- ८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपचनाद्यागरूपसंयमचा० ॥
 ९ प्रमार्जनरूपसंयमचारि० ॥
 १० मनःसंयमचारि० ॥
 १ शकसंयमचारि० ॥
 २ कायासंयमचारि० ॥
 ३ आचार्यवैशाष्ट्यरूपसंयमचारि० ॥
 ४ उपाध्यायवैशाष्ट्यरूपसंयमचारि० ॥
 ५ तपस्विवैशाष्ट्यरूपसंयमचारि० ॥
 ६ लघुशिष्यादिवैशाष्ट्यरूपसंयमचारि० ॥
 ७ ग्लानसाधुवैशाष्ट्यरूपसंयमचारि० ॥
 ८ साधुवैशाष्ट्यरूपचारि० ॥
 ९ समणोपासकवैशाष्ट्यरूपचारि० ॥
 १० संघवैशाष्ट्यरूपचारि० ॥
 १ कुलवैशाष्ट्यरूपचारि० ॥
 २ गणवैशाष्ट्यरूपचारि० ॥
 ३ पशुपंडगादिरहिनवसुनिवमनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ४ स्त्रीहास्यादिकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ५ स्त्रीमासनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥
 ६ स्त्रीअंगोपांगनिर्भक्षणवर्जनचारि० ॥
 ७ कूडयंभरसहितस्त्रीहावभावश्रयणवर्जनचारि० ॥
 ८ पूर्वस्त्रीसंभोगचिंतनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि० ॥

- ४६ अतिसरसभाहारवर्जनद्राद्यगुप्तिचारि० ॥
 ४७ अतिआहारकरणावर्जनद्राद्यगुप्तिचारि० ॥
 ४८ अंगविभूषावर्जनद्राद्यगुप्तिचारि० ॥
 ४९ अणुमणनपोरूपचारि० ॥
 ५० उग्रादर्शनपोरूपचारि० ॥
 ५१ धृत्तिभ्रंशरूपचारि० ॥
 ५२ रसन्धागतपोरूपचारि० ॥
 ५३ कायफ्लेशनपोरूपचारि० ॥
 ५४ मंलेखणानपोरूपचारि० ॥
 ५५ प्रायच्छिन्नतपोरूपचारि० ॥
 ५६ विनयनपोरूपचारि० ॥
 ५७ वैषाधृत्यनपोरूपचारि० ॥
 ५८ सज्जायनपोरूपचारि० ॥
 ५९ ध्यानतपोरूपचारि० ॥
 ६० उपसर्गनपोरूपचारि० ॥
 ६१ अनंतज्ञानसंयुक्तचारि० ॥
 ६२ अनंतदर्शनसंयुक्तचारि० ॥
 ६३ अनंतचारिश्रमंयुक्तचारि० ॥
 ६४ कौषनिघ्नकरुणचारि० ॥
 ६५ माननिघ्नकरुणचारि० ॥
 ६६ मायानिघ्नकरुणचारि० ॥

७० लोभनिग्रहकरणचारि० ॥

अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१. पायस्कृषिनतपसे नमः ॥
२. इत्यग्नपोभेदतपसे नमः ॥
३. पाञ्चउगोदगीतपभेदतपसे नमः ॥
४. अभ्यंतरउगोदगीतपभेदतपसे नमः ॥
५. द्रव्यतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
६. क्षेपतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
७. कालतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
८. भायतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
९. कायक्लेशतपभेद त० ॥
१०. रम्यवागतपभेद त० ॥
११. इन्द्रियकषाययोगविययकसंलीनतातपसे नमः
१२. स्त्रीपगुर्षदकादियजितस्थानअयस्थिसंलीनता त०
१३. आल्योगप्रायच्छित्त तप०
१४. प्रतिक्रमणप्रायच्छित्त तप०
१५. मिश्रप्रायच्छित्त तप०
१६. विवेकप्रायच्छित्त तप०
१७. इवमर्गप्रायच्छित्त तप०
१८. तपप्रायच्छित्त त०
१९. भेदप्रायच्छित्त त०

- मूलप्रायश्चित्त त०
 अणवस्थितप्रायश्चित्त त०
 पारंशियप्रायश्चित्त त०
 ज्ञानविनयरूप त०
 दर्शनविनयरूप त०
 शारिप्रविनयरूप त०
 गुर्यादिकमनविनयरूप त० ॥
 घघनविनयरूप त०
 कावविनयरूप त० ॥
 उपचारकविनयरूप त० ॥
 आचार्यवेद्यावद्य त० ॥
 उपाध्यायवेद्यावद्य त० ॥
 साधुवेद्यावद्य त० ॥
 तपस्वियेद्यावद्य त० ॥
 मृषुजिज्यादिवेद्यावद्य त० ॥
 ग्लानसाधुवेद्यावद्य त० ॥
 श्रमणोपामकवेद्यावद्य त० ॥
 संपद्येद्यावद्य त० ॥
 कुलयेद्यावद्य त० ॥
 गणयेद्यावद्य त० ॥
 धारणात्मपत्ते ममः ॥

४१ पृच्छनात्तपसे नमः ॥

४२ परावर्त्तनात्तपसे नमः ॥

४३ अनुपेक्षान्तपसे नमः ॥

४४ धर्मकथात्तपसे नमः ॥

४५ आर्त्तध्याननिवृत्त त० ॥

४६ रौद्रध्याननिवृत्त त० ॥

४७ धर्मध्यानचिन्तन त० ॥

४८ शुक्लध्यानचिन्तन त० ॥

४९ पाह्यउपसर्गान्तपसे नमः ॥

५० अभ्यन्तरउपसर्गान्तपसे नमः ॥ इतिपंचाशत्तपभेद
इमं तस्य ५० नमस्कारं कर्तुं

अथ पञ्च कल्याणकीं टीप

॥ कार्तिक-शुक्लपक्ष-कान्तिक सुदी ॥

१ साधुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

२ अरिष्टनेमिनाथजिनाय चपवनशास्त्राय नमः

३ पद्मवभजिनाय ज्ञानजन्मने नमः

४ पद्मवभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

५ महार्थीजिनाय मोक्षगताय नमः

कार्तिक-शुक्लपक्ष-कान्तिक सुदी ॥

६ सुविनिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

७ अनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

मार्गशीर्ष-शुक्ल-पक्ष-मिगसर सुदी ।

सुधिनाथजिनाय जातजन्मने नमः

सुधिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

० महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१ पद्मप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ मार्गशीर्ष-शुक्ल-पक्ष-मिगसर सुदी ॥

० अरनाथजिनाय जातजन्मने नमः

० अरनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

१ अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१ महिनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१ मन्दिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१ महिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१४ शम्भुनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१५ शम्भुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ पौष-शुक्ल-पक्ष-पौष घटी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः

११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१२ चन्द्रप्रभजिनाय जातजन्मने नमः

१३ चन्द्रप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष सुदी ॥

६ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

६ शान्तिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

११ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ वदी ॥

३ पद्मप्रभजिनाय चपवनप्राप्त्याय नमः

१२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१६ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

७३ ऋषभदेवजिनाय मोक्षगीताय नमः

१० श्रेयांसनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ सुदी ॥

६ अभिनन्दनजिनाय जातजन्मने नमः

६ वासुदेवजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

१ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः

१ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः

४ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

८ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः

- ६ अजितनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
- १६ अमिनन्दनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
- ११ परमनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-कृष्णपक्ष-फागण षड्वि ॥

- ६ सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पत्तकेवलज्ञानाय नमः
- ७ सुपार्श्वनाथजिनाय मांश्रगताय नमः
- ७ चन्द्रप्रभजिनाय उत्पत्तकेवलज्ञानाय नमः
- ६ सुविधिनाथजिनाय व्यसनप्राप्त्याय नमः
- ११ अयम्भदेवजिनाय उन्वत्तकेवलज्ञानाय नमः
- १६ श्रेयांसनाथजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- १६ मुनिसुव्रतजिनाय उन्वत्तकेवलज्ञानाय नमः
- ११ श्रेयांसनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
- १४ वासुपूज्यजिनाय ज्ञानजन्मने नमः
- १० वासुपूज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण सुदी ॥

- ८ अरनाथजिनाय व्यसनप्राप्त्याय नमः
- ४ महिनाथजिनाय व्यसनप्राप्त्याय नमः
- ८ शम्भनाथजिनाय व्यसनप्राप्त्याय नमः
- १६ महिनाथजिनाय मांश्रगताय नमः
- १६ मुनिसुव्रतजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र वदी ॥

- ४ पार्श्वनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
- ४ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- ५ चन्द्रप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
- ८ ऋषभदेवजिनाय जानजन्मने नमः
- ८ ऋषभस्वामिजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र सुदी ॥

- ३ कुण्डुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- ५ अजिननाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ गंभवनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ९ सुमनिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ११ सुमनिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः
- १६ महार्वाणजिनाय जानजन्मने नमः
- १५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलजानाय नमः

॥ वैशाख-कृष्णपक्ष-वैशाख वदि ॥

- १ कुण्डुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- २ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
- ५ कुण्डुनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
- ६ शीतलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

- १० नमिताथजिनाय मोक्षगताय नमः
१३ अनन्तनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१४ अनन्तनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१४ अनन्तनाथजिनाय उत्पद्येयलज्जानाय नमः
१४ कुन्दुनाथजिनाय जातजन्मने नमः

वैशाख-शुक्लपक्ष-वैशाखसुदी

- ४ अभिनन्दनजिनाय च्यवनप्राप्त्याय नमः
७ धर्मनाथजिनाय च्यवनप्राप्त्याय नमः
८ अभिनन्दनजिनाय मोक्षगताय नमः
८ सुमतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
९ सुमतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१० महावीरजिनाय उत्पद्येयलज्जानाय नमः
१२ विमलनाथजिनाय च्यवनप्राप्त्याय नमः
१३ अजितनाथजिनाय च्यवनप्राप्त्याय नमः

॥ ज्येष्ठ-शुक्लपक्ष-जेठ घटी ॥

- ६ श्रेयांसनाथजिनाय च्यवनप्राप्त्याय नमः
८ मुनिसुव्रतजिनाय जातजन्मने नमः
९ मुनिसुव्रतजिनाय मोक्षगताय नमः
११ शांतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ शांतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१४ शांतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिनाथाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिसर्वज्ञाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामिपारंगताय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमालाको गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमानों के नाम ॥

- | | |
|----------------------------|----------------------------|
| १ श्री सीमंधर स्वामी | २ श्री युगमंधर स्वामी |
| ३ श्री षाट्टुस्वामी | ४ श्री सुषाट्टु स्वामी |
| ५ श्री सुजान स्वामी | ६ श्री स्वयंप्रभ स्वामी |
| ७ श्री ऋषभानन स्वामी | ८ श्री अनंतवीर्य स्वामी |
| ९ श्री सुरप्रभव स्वामी | १० श्री विशालधर स्वामी |
| ११ श्री वज्रधर स्वामी | १२ श्री चंद्रानन स्वामी |
| १३ श्री चंद्रषाट्टु स्वामी | १४ श्री भुजंग स्वामी |
| १५ श्री ईश्वर स्वामी | १६ श्री नेमप्रभ स्वामी |
| १७ श्री योग्मेन स्वामी | १८ श्री महाभद्र स्वामी |
| १९ श्री देवयम स्वामी | २० श्री अजिनर्थार्य स्वामी |

चार माश्वते जिनवर के नाम ॥

- | | |
|----------------------|-------------------------|
| १ श्री ऋषभानन स्वामी | २ श्री चंद्रानन स्वामी |
| ३ श्री षाट्टुस्वामी | ४ श्री चर्द्धमान स्वामी |

मेरी भावना ।

उसने रागद्वेषमादिक जीने, सब जग जान लिया ।
 ये जीवोंको मोक्षमार्गका, निस्पृह हो उपदेश दिया ॥
 छुट धीर जिन हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वार्थान कहे ।
 क्लि-भावमे घेरिन हो गह, जिन उमा में लीन रहे ॥१॥
 अपोंको आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं
 राज-परके हित-साधनमें जो, निशदिन तन्पर रहते हैं ॥
 तार्थन्यागकी कटिन तपस्या, बिना रोद जो करते हैं ।
 से जानी साधु जगनके, दुखसमूहको हरते हैं ॥ २ ॥
 हे सदा सम्मग उन्हींका, ध्यान उन्हींका निरग रहे ।
 नही जैसी पर्यामिं गह, जिस मदा अनुरक्त रहे ॥
 हीं मनाऊँ किमी जीवको, शूद्र कर्मा नहीं किया करूँ ।
 रथन-बनिगा पर न लुभाऊँ, संतोपासुम पिपा करूँ ॥३॥
 ज्योत्स्ना, भाव न रचवूँ, नहीं किमी पर प्रोध करूँ ।
 इल दसगोंकी दृढनिधि, कर्मा न ईर्ष्या-भाव धरूँ ॥
 हे भावना ऐसी मेरी, सरले-रूप रूपदहार करूँ ।
 गने जहाँतक इस जीवनमें, आरोंको उपकार करूँ ॥४॥
 नप्राभाव जगममें मेरा, मय जीवोंमें दित्य रहे ।
 तिन-दुरी जीवों पर मेरे, उरमे वरणाश्रम रहें ॥
 जिन मूर-कृमार्गियों पर, क्षोभ नहीं सुहको आवे ।

कले, प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करे ।
 स्वप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहि, कोई मुख से कहा करे ॥
 पनकर मय युग-वीर हृदय से, देशोत्थनिरन रहा करे ।
 वन्मुग्धरूप विचार खुशी से, मय मुख-मंरुट महा करे ॥१७॥
 ॥ अथ चारह भावना ॥

॥ शंका ॥

पहिंछी अनित्य भावना:—

राजा राणा छत्रपति, हाथिन ये अमवार ।
 मरना मरको एक दिन, अपनी अपनी पार ॥१८॥

दूसरी अज्ञान भावना:—

दूध बल देई देवता, मान जिना परिवार ।
 मरनी पित्रियां जायको, कोई न मानन द्वार ॥१९॥

तीसरी संसार भावना:—

भ्राम विना निर्धन दुखी, नृणापण भनवान ।
 दुख न सुख संसारमें, मय जग देखी छान ॥२०॥

चौथी एकद्वय भावना:—

जगद्वय जगद्वय, मरे अकेला होय ।
 गो व... चौथी मरना न होय ॥२१॥

पांचवीं अज्ञान भावना:—

जहां देह पार...
 पर-संपत्ति पर म...

छठी अशुचि भावना;—

दिप चाप चादर महीं, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगतमें, और नहीं धिन गेह ॥३॥

॥ सांगडा ॥

सातमी आश्रव भावना;—

मोह नींद के जोर, जगवार्मा घूमें सदा ।
कर्म चोर चहुँ ओर, मरवम लुटे सुधि नहीं ॥४॥

आठमी मंचर भावना;—

मन गुरु देय जगाय, मोह नींद जय उपशमे ।
तय कुछ वने उषाय, कर्म चोर आवत रुके ॥५॥

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जग भावना;—

ज्ञान दीप तब तेल भर, घर जांधे भ्रम झोर ।
या विधि विन निकसे नहीं, पैटे पूरव चोर ॥
पंच महाव्रत मंचरण, समिति पंच प्रकाश
प्रपल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जग मार ॥६॥

दशमी लोक संठान भावना;—

चौदाह गजु उमंग नभ, लोक पुरय संठान ।
नामें जाय अनादिन, मरमन है विन ज्ञान ॥७॥

इग्यारमी षोभिषीज-भावना;—

धन तन कंचन राजसुख, सवर्ति सुलभ कर जान ।
दृष्टिभ हे संसारमें, एक गधारथ जान ॥११॥

॥ पारमी धर्म भावना ॥

जाचें सुरतरु दैय सुख, चिंतन चिन्ता रैन ।
विन जाचे विन चिंतये, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥

अथ आठ-धुई ते देववांदने की विधि ॥

पश्चात् कर्मामन्तरं देवैः चैव्यवंदनं कर्तव्यम् ।

मकलकुशलवर्द्धो-पुष्करावर्त्तमेघां,
दूरितनिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।

भवजलनिधिषोमः सर्वसम्पत्तिहेतुः,

स भवतु मननं यः श्रेयसे पाश्वर्धदेवः ॥१॥

नमोऽम्भुषं अरिहंसाणं भगवन्ताणं आङ्गराणं नि-
धराणं मयंमेषुद्राणं पुरिसुत्तमाणं पुरिसखीहाणं
पुरिसवरपुंहरिष्माणं पुरिसवरगणहर्थाणं लोपुत्तमाणं
लोगनाहाणं लोमदिष्माणं लोमपईयाणं लोमवज्राजग-
राणं अभयदयाणं चक्रसुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-
णं धोदिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं
धम्मसारहीणं धम्मवरणाउरेनचद्वदीयं अप्पडिह्य-
वरणाणंदेसणभराणं विअदुत्तमाणं जिजाणं जाययाणं

निघ्नाणं तारयाणं बुद्धाणं योह्याणं मुत्ताणं मोञ्जाणं
 सध्वन्नृणं सध्वद्रिमीणं सिवमयलमरुअमणं
 कखय-मध्यायाह-मपुणरानिति मिद्धिमड नामयेणं
 संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइ
 मिद्धा जे अ भविस्संनि गागण काले संपड अ वट्टमा
 सध्वे निविहेण वंदामि ॥१॥

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इगियावहिपं
 टिक्कमामि, इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहिपं
 विराहणाण गमणागमणे पाणक्कमणे थोयक्कमणे इमि
 क्कमणे ओम्भा उल्लिग पणगट्ठग मट्टीमक्कडासंताणा संक
 णे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया तेइदि
 यउरिंदिया पंचिंदिया अभिहया वल्लिया लेमिया मे
 घाट्टया संघट्टिया परियाविया किलामिया उहविया हा
 णाओटाणं संकामिया जीवियाओं वयगेयिया तस
 मिच्छामि वृक्कहं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं पापच्छित्तकरणेणं विमोही
 करणेणं विमह्ठीकरणेणं पाथाणं कम्मणं निग्घायणट्ठाए
 टामि काउम्मणं ।

असन्ध उमसिणं नामसिणं खासिणं ह्दीणं
 अभाइणं उट्टइणं वापनिसग्गेणं भमल्लिण पित्तमु
 ष्ठाए सुट्टमेहिं अंगसेयात्तेहिं सुट्टमेहिं ऐलसंवा-

लेहिं सुहृमेहिं दिहिंसंचालेहिं एवमाहएहिं आगारेहिं
 भभग्नां अथिराहिभो हृद्भ मे कउरस्सगो जाव अरि-
 हंताणं भगवंपाणं नसुद्धारेणं न पारेमि ताव कउपं
 टागोणं मोणेणं आणेणं अष्पाणं थोसिरामि ॥ १ ॥

८६. लोगम्म वा वा नउरार का पाइम्ममा को विर
 मगट लोगम्म कहे—

लोगस्स उल्लोअगरे, धम्मनित्थपरे जिणे । अरि-
 हंतं कित्तइस्सं , अउर्यासं पि वेयन्ती ॥ १ ॥ उस्तमम-
 जिअं च वंदे, संभवमभिगुंदणं च सुमइं च । पउम-
 प्पहं सुपासं , जिणं च वंदण्णहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च
 पुष्पदंनं , मीअल मिअंम वासुपुअं च । विमलमणंतं
 च जिणं , धम्मं सेतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंभु अरं च
 महिं, वंदे सुणिसुअ्यपं नमिजिणं च । वंदामि रिद्धनेमिं
 पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मण अभिधुआ ,
 विहपरपमला पहीणअरमरणा । अउर्यासं पि जिणयरा,
 नित्थयरा मे पर्मायंतु ॥५॥ कित्तिव वंदिय महिया,
 जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुगयोहिलाभं,समा-
 हिवरमुत्तमे दिंतु ॥६॥ वंदेसु निम्मलयरा , आइवेसु
 अहियं पयासयरा । मागरवरांभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम
 दिंसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे वैत्यबंधन करें—

जय जय नाभि नरिंद नंद सिद्धाचल मंडण ।
 जय जय प्रथम जिणंद चन्द भव दुःख विहंङ्ग ॥
 जय जय साधु सुरिंद विंद्र वंदिय परमेसर ।
 जय जय जगदानंद कंद श्रीरिपभ जिणेशर ॥
 अमृत सम जिनधर्मनो ए दायरू जग मे जाण ।
 सुक पद् पंकज प्रीति घर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्थुगं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं
 तित्थपराणं मयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
 पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंभहत्थीणं लोमुत्तमाणं
 लोमनाहाणं लोमहिआणं लोमपईवाणं लोमपञ्चोअग-
 राणं अमपदयाणं चक्रबुदयाणं मगदयाणं सरणदया-
 णं पोह्दिआणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनाय-
 गाणं धम्ममारहाणं धम्मवरणाउरंनचकवईणं अप्प-
 ह्दिअवरनाणदेमगाधराणं विअट्टउमाणं जिणाणं
 जावयाणं निआणं मारगाणं बुद्धाणं पांडियाणं मुत्ताणं
 सोअयाणं मय्यन्नूणं मय्यदरिमीणं मियमपलमग-
 मगंनमकरपमथ्यापाहमणुराविन्नि सिद्धिगइ ना
 मयेयं टाणं संवत्ताणं नमो जिणाणं जिणसयाणं जे अ
 अईया सिद्धा जे अ भविसंति गागए काले संवइ अ
 वरमाणा मय्यं निविहेण संदामि ॥

अरिहंतचेदद्याणं करेमि पाडस्सग्गं ॥ - -

पंदग्गयत्तिआण् प्पुअग्गयत्तिआण् सत्तारयत्तिआण्
सम्माणयत्तिआण् पांहिलाभवत्तिआण् निरुयसग्गय-
त्तिआण् सत्ताण् मेहाण् धिईण् धारणाण् अणुप्पेहाण्
पट्टमाणीण् टामि पाडस्सग्गं ॥

अहन्थ ऊत्तम्मिण्णं नीत्तम्मिण्णं त्यासिण्णं छीण्णं
जंभाइण्णं उह्हुण्णं पायनिस्सग्गेणं भमत्तिण् पित्तमु-
पद्दाण् सुह्हुमेहि अंगमंचलेहि सुह्हुमेहि खेत्तसंचालेहि
सुह्हुमेहि दिट्ठिसंचालेहि ण्यमाइण्हि आगारेहि
अभन्ता अचिरादिष्वां सुत्त मे काउत्तस्सग्गो जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुपारेणं न पारेमि गाव काणं
टाण्णं सोण्णं छाण्णं अण्णं योत्तिरामि ॥

हिं एक नरकात् वा पाटस्सग्गं वा पीठे वा करके एक
जन . तमोर्द्धनिगमाचागोपायार्थानामुच्यते . कदा वा पदार्थं क्तुमि
वो बोधे—

पारं देयं निम्भं वन्दे ॥ १ ॥

लोगम्म उज्जोअगरे, धम्मत्तिथपरे जिणे। अरिहंते
किल्लइसं, अउधीसंपि पेयत्थं ॥१॥ उत्संभमजिथं च
धंदे, संभयमभिणंदणं च सुमडं च। पउमप्पहं सुपाभं,
जिणं च संदण्हं धंदे ॥२॥ सुविहिं च पुण्हत्तं, मीअल
सिअंत वासुउज्जे च। विमलमणं च जिणं, धम्मं संति
च वंदामि ॥३॥ कुंभुं अरं च मत्तिं, वंदे सुत्ति सुव्वरं

नमिजिणं च । वंदामि रिद्वनेमि, पासं तद् वदुमाणं च
 ॥४॥ एवं मां अभियुजा, विदुपरयमला पहीण जरम-
 रया । चउवीसंपि जिणवरा, तित्यपरा मे पसीयंतु ॥५॥
 कित्तिप-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
 आरुग्ग योहिलाभं, समाहियर मुत्तमं दित्तु ॥६॥ वंदेसु
 निम्मलपरा, आइचेसु अहियं पयासपरा । सागरवरां-
 भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सगं ।
 वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्ति-
 आए सम्माणवत्तिआए योहिलाभवत्तिआए निरुवस-
 गवत्तिआए सद्धाए मेहाए विईए धारणाए अणुप्पे-
 हाए वड्डुमाणीए ठामि काउस्सगं ॥२॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जं-
 भाइएणं उहूएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए
 सुहृमेहिं अंगसंचालेहिं सुहृमेहिं खेलसंचालेहिं सुहृमे-
 हिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो
 अयिराहिओ हुअ मे काउस्सगो जाव अरिहंताणं
 भगवंताणं नमुकारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मो-
 येणं भाणेणं अप्पाणं वोसरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग करे पीछे पाठ के एक आशी
 रूसरी स्तुति को बोले

जैनाः पादा युष्मान् पान्तु ॥२॥

पुष्करपरदीपद्वे , धापदसंदे अ जंबूदीवे अ ।
 भरद्वाजपरदिदेहे, धग्माइगरे नमंस्तमि ॥ १ ॥ तमति-
 मिरपटलविष्टं-सणस्ससुरगणनरिंदमहिअस्स । सीमा-
 घरस्स वंदे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजराम-
 रणमोगपणासणस्स, काट्टाणपुषयल्लयिसालसुहावह-
 स्स । को देवदानवनरिंदगणणिअस्स, धम्मस्स सारमु-
 वल्लभ करे पमापं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयधो णमो जि-
 गुमण नंदी सपा मंजमे. देयनागसुवसकिअरगणस्स-
 म्भुअ भाषदिण । लोंगो जग्ध पइट्टिओ जगमिणं ते-
 ल्लकमपासुरं, धम्मो वड्डुउ सासध्मो विजयओ धम्मुत्तरं
 वड्डुउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगयधो करेमि काउस्सग्गं ॥

पंदणवत्तिअणं पृथ्थणवत्तिअणं सकारयत्तिअणं
 सम्माणवत्तिअणं पोहिलाभयत्तिअणं निरुयसग्गव-
 त्तिअणं मट्टाणं मेहाणं भिईणं भारणाणं अणुण्णेहाणं
 वड्डुमार्णाणं ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

असत्थ उस्ससिण्णं नीससिण्णं खासिण्णं ह्रीण्णं
 जंभाहण्णं उईण्णं पायनिसग्गोणं भमल्लिणं पित्तमुच्छाणं
 सुहमेहि अंगमंघालेहिं सुहमेहिं रोत्तमंघालेहिं सुहमेहिं
 दिट्ठिसंघालेहिं एयमाइण्हिं आगारंहिं अभागो अवि-
 राहिधो हुअ मे काउस्सग्गो जाय अरिहंताणं भगवं-

माणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कार्यं ठाणेणं माणेणं
 छाणेणं अष्याणं वोसिरामि

एक नाकार का काउम्माग का पर के एक मन्दी लेम्मे
 स्तुति कहे—

जैनं वाक्यं भूयाद् भूयै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारमयाणं परंपरयाणं ।

लोअग्गमुवगयाणं नमो मया सच्चमिद्धाणं ॥१॥

जो देवाण विदेवां, अं देवा पंजली नमंमनि । तं देव दे-
 व मद्दिअं, म्मिमा वंदे महाधीरं ॥२॥ इतोवि नमुक्कारो
 जिणवर वसहरस वद्धमागग्गस । संमारमागराओ,
 तारेइ नरं व नारिया ॥३॥ उज्जनमेलमिहरं, दिक्खा
 नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्खद्विं, अरिद्वनेमि
 नमंस्सामि ॥४॥ चत्तारि अट्ट दस दांष वंदिया जिणवरा
 षउव्वीसं । परमह निद्वि अट्टा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अन्नन्ध ऊससिण्णं नीमसिण्णं खासिण्णं ह्यीण्णं
 जंभाट्टण्णं उड्डट्टण्णं वायनिसग्गेणं भमल्लिण्णं पित्तमु-
 च्छाण्णं सुहृमेहिं अंगमंचालेहिं सुहृमेहिं खेदसंचा-
 लेहिं सुहृमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं गवमाइण्णहिं आगारेहिं
 अभागो अविगहिओ हृज्ज मे काउस्सग्गो । जाष
 अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कार्यं
 ठाणेणं माणेणं छाणेणं अष्याणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक स्वका का काटस्मगा का पाठ पर एक भादमी चौथी
स्तुति करें—

सिद्धा देवी दद्यात् सौख्यं ॥ ४ ॥

नमोऽन्युणं अरिहंताणं भगवंताणं आङ्गराणं
निहयराणं सपंमंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं
पुरिसवरपुंढरीश्याणं पुरिसवरगंधर्वाणं लोमुत्तमाणं
लोगनाहाणं लोगहिश्याणं लोगवईयाणं लोगपञ्चोअग-
राणं अअपदयाणं अअखुदयाणं मग्गादयाणं सरणदयाणं
पोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेनिगाणं धम्मनायगाणं
धम्मसारहिंणं धम्मवरणाउरंतनकःश्रीणं अण्णहिहणव-
रणाण दंसणभराणं विअट्टउमाणं जिखाणं जावयाणं
सिद्धाणं सारायाणं बुद्धाणं पाहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं
सव्वहूणं सव्वदरिमाणं सिवमपलमरुअमणंनमअसव-
मव्यायाह-मणुणरायित्ति सिद्धिगई नामधेवं ठाणं संप-
त्ताणं नमोजिगाणं जिपभयाणं। जे अ अइआ सिद्धा
जे अ अयिसंतिणागण काले संपहअ वट्ठमाणा सव्वे
निविहेण धंदामि ॥

पीछे " अरिहंत चेदपाय करानि काटस्मगा धंशख-

तिगा का पाठ " अअथ का पाठ कर कर उपर चार स्तुति लिपी
है जैसे कि चार स्तुति करें वह पहले जैसे पाठ भाषा । बेसा

दगेफा कदे । पीते नाग म्नि क्कपय ग्री हो जे जे
नमोऽयुगं का पाठ पूग कहे ।

नमोऽयुगं अरिहंमाणं भगवंमाणं आङ्गरायं नि-
त्थयराणं मयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिसमीराणं
पुरिमयरपुंहरिआणं पुरिमयरंघहन्धीणं लोगुत्तमाणं
लोगनाद्दाणं लोगहिआणं लोगवईवाणं लोगपज्जोग-
राणं अभयदयाणं धक्खुदयाणं मग्गदयाणं मरुण्णदया-
णं षोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेमिणाणं धम्मनापणाणं
धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंनचक्खवदीणं अप्पडिहय-
वरनाणदंसणधराणं विअइउमाणं जिणाणं जावपायं
तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं षोह्पाणं मुत्ताणं मोअगाणं
सव्वन्तूणं मव्वउरिसीणं मिवमयन्मरुअमणंनम-
क्खय-मव्वापाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं
संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ
सिद्धा जे अ भविस्संति ग्गागण काले संपइ अ वइमाणा
मअ्थे निविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेहआइ उट्टेअ अहेअति रियलोए अ ।
सव्वाइ ताइ वंदे इअ संतो तत्थ संताइ ॥१॥

जावंत केचि साह भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंइ विरयाणं ॥१॥
नमोऽहंत्तिसइाचार्यापाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

यह वैसा ठप किया हो वैसा स्वरन कर, तब नहीं किया
हो गो हाथों स्वरन कर पातुग्याह गाथामे कम नहीं कहे । पीछे—

जय धीपराय जगगुरु, होउ ममं नुरु पभावओ भयवं ।
भवनिच्येओ मरगागुमरगिया इद्रफलमिर्द्रा ॥ १ ॥

लोगविस्त्रुवाओ, मुग्जणदुआ परन्थकरणं च ।

सुहगुरु जोगो नच्यण मेथणा घाभवमर्गडा ॥ २ ॥

यह ठा नच्यण मुग्जणदुआ परन्थकरणं च पीछे खड़े होना ।

। चौदह नियमों की गाथा ।

मेचिन देख्य विगोए घाणः मेघोल वन्य कुसुमेसु ।
घाहण मयंण विलेयंग पंभेदिमिं न्हाणे भत्तेसुं ॥ १ ॥

॥ गाथा का संक्षिप्त अर्थ ॥

१ 'मेचिन' (जिनमें जाय मत्ता हां, योनेसे उंगो
धाजादि) कषापानी, हरीशारक फल, पान, हरादानन,
निमक आदि ।

२ 'दृश्य' जिनमें घाज मूहमें जाये उतने दृश्य-
जल, मंजन, टानन, रोटी, दाल, चावल, कड़ी, साग,
मिठाई, पूरी, पी, पापड़, पान, सुपारी, चरन, मसा-
ला, आदि ।

३ 'विगय'—० जिनमें से मधु, मांस, मफखन
आर मदिरा ये ४ महाविगय अन्वय होने से श्रावक

को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष (५) घी, तेल, दूध, दही, गुड़, खांड अथवा मीठा पक्वान ।

४ 'उपानह'-जूता, बूट, सिलीपर, मांजा आदि जो पांवमें पहना जाय ।

५ 'तंबोल'-पान, सुपारी, इलायची, लौंग, पान का मसाला आदि ।

६ 'वस्त्र'--वस्त्र (आभूषण 'जवर' की संख्या भी इसी नियममें धार लेनी चाहिये) पगडी, टोरी साका, अंगरखा, चोगा, कुड़ता, धोती, पायजामा, हुपटा, चदर, अंगोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपड़ा जो ओढ़ने पहनेने में आवे ।

७ 'कुसुमेसु'--फूल, फूलकी चीजें जैसे-शय्या, पंखा, सेहगा, तुरी, हार, गजरा, अत्तर जो चीज सुंघनेमें आवे ।

८ 'वाहन'-सवारा-गाड़ी, फिरीन, सिगराम, हार्थी, घोड़ा, रथ, पालग्वी, डोन्की, मोटर, साईकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'नरता-फिरता, धरता, और उड़ता' ।

९ 'शयन'-कुरमी, टेबल, पटा, पलंग, गद्दी, तकिया पिट्टीना, तखत, मेज, सुखासन, आदि सोने वा बैठने की चीजें ।

१० 'विलेपन'—तेल, केशर, शंदन, मिलाक, सुर-
मा, काजल, उषदन, हजामन, पुरज, कंग, काथ
देवना, दवाई आदि जो चीज जर्जरमें लगाई जाये ।

११ 'बंध' [सामर्थ्य] स्त्री, पुंस्व लुट् दोषके न्याय
से श्रावक परदार श्याम और स्वदाराने ही संशय
रमें, उस्तुता भी प्रमाण करें, इसी प्रकार स्त्रीयांका भी
माल या आदमी समझ लेना चाहिये ।

१२ 'दिशि' [१० दिशा] जर्जरमें इतने कोश
(लेंबा, चाँदा, ऊँबा, नीचा) जाना जाना, निर्दोष मार,
इतने कोश भेजना तथा संमाना ।

१३ 'च्छाया' [स्नान] जर्जरमें मोटा स्नान इतनी
घेर करना (छांटास्नान) हाथ पर इतनी घेर भोना ।

१४ 'भक्षेत्'—अदान (अन्न), पान (पानी),
प्यादिम (मेवा—दूध), म्शादिम (पान—सोपारी आदि)
मे पारों आहारोंमेंसे, पानमें जिनकी बीजे पायें सब
का कृत्त पजन करना ।

इस लोके लिखाके, कर्मात्तु तदा, कां ताव कर्म म र
कडे उरुमेंही होयम का मिया पते र ० १ इति १३ लिखे क
गाथ इतनी भी लोका पर भी उहे म लि. इतने १३ कर्तु के पन
म्व जते र

६ काय.

१. पृथ्वीकाय-मिट्टी निमक आदि (खानेमें वा उपभोगमें आवे) उसका वर्जन ।

२. अप्काय- जो पानी पीनेमें या दूसरे उपयोगमें आवे उसका वर्जन. पानीकी जान कूवा, बावडी, तलाव, नदी, नल और मेघ आदिका प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोईभी काममें लाना तथा जीवानीका यत्न करना अन्यावश्यकिय है ।

३. तेउकाय-चून्हा, अंगीठा, भट्टी, चिराक आदि का प्रमाण ।

४ वायुकाय-हिंडोले पंखे [अपने हाथसे वा हुकमसे] जिनसे चलते हों उनका संख्याका प्रमाण. 'रूमालसे या कागजसे हवा लेनी यह भी पंखेमें गिनी जाती है उसका जयणा' ।

५. वनस्पतिकाय-- हराशाक तथा फलादि इतनी जानके खाने घर संबंधी मंगाने जिसकी गिनती तथा वर्जन ।

६. असकाय-- असर्जाव अपरार्था, बिनापरार्थाका विचार करना । यह ई कायका परिमाण कर लेना ।

६ कर्म.

१. असी (जग्य और थीजार) नलयार, पंदूक,

समंघा, परछी, भाला आदि हुरी, कैंची, चक्र और सरोमा चिमटी आदि औजार ।

२ मसी (लिखने पढ़नेका) कागज, कलम, दावान, पेन्सील, पेंसिल, पुस्तक, छापा, टाइप आदि ।

३ कृषी (कमी) ऐसी यमोने आदिका परिमाण यह रोजके नियम धारनेकी विधि संक्षेपमें लिखी है विनार जितना अधिक करिये माने नाम ग्यांल ग्यांल कर रविये उमनाली उपादा कापदा है.

उपरोक्त चींदा १४ नियम प्रतिदिन विनारणे पालांके मेरु जितना पाप कटकर मरगव जितना रह जागा है ।

उक्त चींदा नियमोंमेंसे अपने चाहिये उमनी व मुरखकर श्रीसुमुख्ये सुग्यारकिन्दसे पद्यपद्याण करते । यदि कभी सुग्महाराजका योग नहीं हो तो तो निरालि-गितानुसार पद्यपद्याण करतें ।

॥ पद्यपद्याणका पाठ ॥

॥ नवकारनी ॥

उमण खरे नमुकारमहिष मुद्विमहिये पद्यपद्याण
पद्यपद्याण आहारं अमणं पाणं ग्यांलं ग्यांलं अम-
स्थणाभोगेणं रहस्यगारेणं मन्मथगारेणं मन्मथगारेणं

वतियागारेणं--विमड्ओ पञ्चक्खाइ अन्नत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं लेवालेयेणं मिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविंव-
 गेणं पट्टच्चमक्खिणं महत्तरागारेणं सच्चसमाहिवति
 यागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पञ्चक्खाइ
 अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सच्चम-
 माहिवतियागारेणं वोसिरे ।

पञ्चक्खाण पारनेका पाठ.

उत्तमं सरे नमुक्कारसहियं पारिसियं मुट्ठिसहियं
 पञ्चक्खाणं किया चउच्चिहंपि आहारं पञ्चक्खाणं
 फासिअं पालिअं मोहिअं । निरिअं किट्ठिअं आराहिअं
 जं च न आराहिअं नस्स मिच्छामि वृक्कट्टं ।

पीछे एक नक्कार मंत्र पढ़े ।

१ विदल, जिम अन्नकी दो दाल (छिदल) हो जाय.
 और जिममेंमें तेल नहीं निकले, उस अन्नको कथे दृथ;
 दर्हां, छाशके साथ अर्थात् मिलापके खाना बडा दोष
 कहा है. दर्हां बगैरह खुश गम्य करके खानेमें विद-
 लका दोष नहीं है ।

२ आचार मय तरहका (संधान) नोन गोज याद
 अभक्ष्य होजाता है ।

३ कंदमूल ३२ अन्नन्नकाय. यह सयसं ज्वादे दोपकी बीज होनेमें विलकुल छोड़ने लायक है ।

४ रजस्यला औरनों को २४ प्रहर गृहकार्य न करना चाहिये ।

५ विवाह, सार्दमं घेदपा, आत्मपार्जा आदि कुम्भियाजका त्याग करना चाहिये ।

६ खराब गालियोंको गानेका कितने ही लोगोंमें बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये ।

७ पाल लस और वृद्ध विशाह वा कन्याविषय आदि कुर्मनियोंको मिटा देना चाहिये याने उपरोक्त प्रवृत्तियोंसे बहुत हानि होती है ।

८ अपने पंचे और कन्याओंको नीति और धर्मशास्त्रकी शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रयत्न करना चाहिये ।

प्यारे जैनी भाइयों इस लघु । विज्ञाप द्वारा निरूप देवगुरु बंधन वा १४ नियम चिन्तारके अष्टम लाभ लेना चाहिये । इति शम्.

अथ श्रावकों के प्रत्याख्यान के ४६ भांगा ।

(आंक नंभर ६)

अंक एक ११ का, एक करण और एक जोग से भांगा छठे नघ ।

वृत्तियागारेणं--विगड्जो पञ्चकखाड् अन्नत्थणाभोगेणं
 सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसट्ठेणं उक्खित्तविं-
 गेणं पट्टुच्चमक्खिण्णं महत्तरागारेणं सब्बसमाहिवत्ति-
 यागारेणं देसावगासियं उवभोगपरिभोगं पञ्चकखाड्
 अनत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सब्बम-
 माहिवत्तियागारेणं वोसिरे ।

पञ्चकखाण पारनेका पाठ.

उगए मूरे नमुकारसहिंयं पोरिसियं मुट्टिसहिंयं
 पञ्चकखाण किधा चउच्चिहं पि आहारं पञ्चकखाणं
 कासिअं पालिअं मोहिअं । तिरिअं किट्ठिअं आराहिअं
 जं च न आराहिअं तस्म मिच्छामि दृक्खं ।

वाञ्छे एक नवकार मंत्र पढ़ें ।

१ बिदल, जिम अन्नकी दो दाल (डिदल) हो जाय
 और जिममेंसे तेल नहीं निकले, उस अन्नको फसे दूध
 नहीं, द्वाशये साथ अर्धांग मिलायके खाना बड़ा दोष
 कहा है. नहीं चंगरह ग्यूस गरम करके खानेमें बिद-
 लका दोष नहीं है ।

२ आचार मय तरुका (मंधान) तीन रोज याद
 अभद्रप होजाता है ।

षट्तियागारेणं--विगड्भो पञ्चकखाड अस्तथणाभोगेणं
 सहसागारेणं लेयालेवेणं गिहृत्थसंमट्टेणं उक्खित्तविवे-
 गेणं पडुच्चमक्खिण्णं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्ति
 यागारेणं देसावगासियं उच्चभोगपरिभोगं पञ्चकखाड
 अनत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वम-
 माहिवत्तियागारेणं घोसिरे ।

पञ्चकखाण पारनेका पाठ.

उगए मूरे नमुक्कारसहियं पोरिसियं मुट्टिसहियं
 पञ्चकखाण कियं चउच्चिवहंपि आहारं पञ्चकखाणं
 फासिअं पालिअं मोहिअं । तिरिअं किट्ठिअं आराहिअं
 जं च न आराहिअं तस्म मिच्छामि वृक्खं ।

पौछे एक नक्कार भंअ पदे ।

१ बिदल, जिस अन्नको दो दाल (बिदल) हो जाय,
 और जिसमेंसे तेल नहीं निकले, उस अन्नको कषे दृष्य,
 दर्हा, द्राशके साथ अर्थात् मिलावके खाना बडा दोष
 कहा है. दर्हा बगैरह खुब गरम करके खानेमें बिद-
 लका दोष नहीं है ।

२ आचार सय तरहका (संभान) तीन रोज बाद
 अभक्ष्य होजाता है ।

३ कंदमूल ३२ अन्नकाय. यह सपसे ज्यादा दोषकी बीज होनेसे बिलकुल छोडने लायक है ।

४ रजस्वला औरतों को २४ प्रहर गृहकार्य न करना चाहिये ।

५ विवाह, सार्दाने चेटपा, आननपार्जा आदि कुरियाजका त्याग करना चाहिये ।

६ खराय गालियोंको गानेका बितने ही लोगोंमें बहुत प्रचार है उसका भी त्याग करना चाहिये ।

७ पाल लभ और वृद्ध विवाह वा कन्याविक्रय आदि कुरीतियोंको मिटा देना चाहिये याने उपरोक्त प्रवृत्तिये बहुत हानि होनी है ।

८ अपने पचे और कन्याओंको नीति और धर्मशास्त्री शिक्षाके लिये पाठशाला आदिका प्रबन्ध करना चाहिये ।

प्यारे जैनी भाइयों इस लघु । विताप द्वारा निरुप
देवगुरु धंदन वा २४ नियम चिनारके अवश्य लाभ
लेना चाहिये । इति शम्.

अथ श्रावकों के प्रत्याख्यान के २६ भांगा ।
(आंक नंबर ६)

आंक एक ११ का, एक फरण और एक जोग से
भांगा कठे नय ।

१. करुं नहीं मनसे
२. करुं नहीं वचनसे
३. करुं नहीं कायामे
४. कराउं नहीं मनसे
५. कराउं नहीं वचनसे
६. कराउं नहीं कायामे
७. अनुमोदुं नहीं मनसे
८. अनुमोदुं नहीं वचनसे
९. अनुमोदुं नहीं कायामे

अंक एक १२ का, एक करण और दोष जांग से भांगा ऊट नव ।

१. करुं नहीं मनसे वचनसे
२. करुं नहीं मनसे कायामे
३. करुं नहीं वचनसे कायामे
४. कराउं नहीं मनसे वचनसे
५. कराउं नहीं मनसे कायामे
६. कराउं नहीं वचनसे कायामे
७. अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
८. अनुमोदुं नहीं मनसे कायामे
९. अनुमोदुं नहीं वचनसे कायामे

अंक एक १३ का, एक करण और तीन जांग से

भांगा उठे तीन ।

- १ करं नहीं मन से वचन से काया से
 - २ कराडे नहीं मन से वचन से काया से
 - ३ अनुमोहुं नहीं मन से वचन से काया से
- अंक एक २१ का, दो करण और एक जोग से

भांगा उठे नव ।

- १ करं नहीं कराडे नहीं मन से
 - २ करं नहीं कराडे नहीं वचन से
 - ३ करं नहीं कराडे नहीं काया से
 - ४ करं नहीं अनुमोहुं नहीं मन से
 - ५ करं नहीं अनुमोहुं नहीं वचन से
 - ६ करं नहीं अनुमोहुं नहीं काया से
 - ७ कराडे नहीं अनुमोहुं नहीं मन से
 - ८ कराडे नहीं अनुमोहुं नहीं वचन से
 - ९ कराडे नहीं अनुमोहुं नहीं काया से
- अंक एक २२ का, दो करण और दो जोग से

भांगा उठे नव ।

- १ करं नहीं कराडे नहीं मन से वचन से
- २ करं नहीं कराडे नहीं मन से काया से
- ३ करं नहीं कराडे नहीं वचन से काया से
- ४ करं नहीं अनुमोहुं नहीं मन से वचन से

- ५ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ६ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से
- ७ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
- ८ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ९ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से

अंक एक २३ का, दो करण और तीन जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं मन से वचन से काया से
- २ करुं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से
- ३ कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से काया से

अंक एक ३१ का, तीन करण और एक जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से
- २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से
- ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं काया से

अंक एक ३२ का, तीन करण दो जोग से भांगा उठे तीन ।

- १ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से वचन से
- २ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं मन से काया से
- ३ करुं नहीं कराउं नहीं अनुमोदुं नहीं वचन से काया से

अंक एक ३३ का, तीन करण और तीन जोग से

भांगा ऊठा एक ।

१ करुं नहीं कगडे नहीं अनुमोदुं नहीं मनसे वचनसे
बापासे ॥ १॥

जूमते ४५ अंगणफनास भांगा ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

मरुट सिद्धि दापक मद्रा, घोरीशे जिनराय ।

सङ्गुः मामिनि सग्यनि, प्रेमे प्रणमं पाय ॥१॥

त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर ।

जामन नायक जग जयो, वर्द्धमान षष्ठ वीर ॥२॥

इक दिन पीर जिणंदने, चरणे करि परणाम ।

भक्तिक ज्ञापना हित भंगा, पूछे गौतम स्वाम ॥३॥

मुक्तिमार्ग आगविये, कहां किण परे अरिहंत ।

सुधा गरसु तव वचन रम, भांगे श्रीभगवंत ॥४॥

अतिथार आलोहये, घन धरिये गुरु साख ।

जाष ग्यमायां मवल जे, योनि घोराशी लाख ॥५॥

विधिष्टु चला घोसिरायिये, पाषण्थान अदार ।

चार दारण निरप अनुसरो, निंदो दुरित आधार ॥६॥

शुभकरणा अनुमोदिये, भाष भलो मन आण ।

अणमगा अवसर आदरी, नवपद जयो सुजाण ॥७॥

शुभगति ध्याराधन तणा, ए छे दश अधिकार ।
चित्त ध्याणीने आदरो, जिन पामो भवषार ॥८॥

॥ दाल पहेली ॥

॥ ए छिट्टि किहां राखी ॥ ए देगी ॥

ज्ञान दरिम्पण धारिध्र तप वीरज, ए पांचे आ
चार । एह तणा इह भय परभवना, आलोइये अनि-
चार रे ॥ १ ॥ प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाणी । वीर वं
एम बाणी रे ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ए ध्यांकणी ॥ गुरु ओ-
लकीये नहीं गुरु विनये, काले धरी यहूमान । स्र
अर्थ तदुभय करी सृष्टां, भणिये वहां उपधान रे ॥१॥
प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ ज्ञानोपकरण पाटी पौधी, ठवणी नो-
रवाली, तेह तणा कीधी आजातना, ज्ञान भक्ति न सं-
भाली रे ॥ ३ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ॥ इत्यादिक विपरीत
पणार्थी, ज्ञान विराध्युं जेह । आ भय परभव यलिय
अशोभय, मिच्छादुफह तेह रे ॥४॥ प्राणी. समकित
म्यां शुद्ध जाणी ॥ ए ध्यांकणी ॥ जिनवचने शंका नवि
कीजे, नवि परमम अभिजाय । साधु तणा निडा परि-
हरजां कलमेंदेह म राग्य रे ॥५॥ प्राणी ॥ म० ॥ मू-
दवर्णु छंडां परशंसा, गुणयंनने ध्यादरिये । साहार्माने
धर्म करी भिन्ना, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥६॥ प्राणी
॥ म० ॥ संघर्षण प्रामाद तणां जे, अयणीवाद मन

लेदपो । द्रव्य देवको जे विणसाह्यो, विद्यासंगता उघेटपो
 रे ॥७॥ प्राणी ॥ सा० ॥ इत्यादिक विपरीत पणार्थी,
 समकित म्बहुं जेह । आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥
 प्राणी, चारित्र स्यां चित्त ध्यायी ॥ ९ अंकणी ॥ पांच
 ममिनि घ्रण गुप्ति विराधि, घ्यांटे प्रवचनमाय । साधु-
 नणे धर्म परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥६॥ प्राणी
 ॥१०॥ श्रावकने धर्म सामायिक, पांसहमां मन घाली ।
 जे जपणापूर्वक जे घ्यांटे, प्रवचनमाय न घाली रे ॥१०॥
 प्राणी ॥ सा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणार्था, चारित्र
 रान्धुं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ११ ॥ प्रा० ॥
 सा० ॥ घारे भेदे तप नवि कांधुं, छत्ते योगे निज दाणे ।
 धर्म मन वन काया वीरज, नवि कोमविण भगते रे ॥
 ॥१२॥ प्राणी ॥ सा० ॥ तपवीरज आचारे एणि परे,
 विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ १३
 ॥ प्राणी ॥ सा० ॥ धर्माय विशेषे चारित्र केरा, अति-
 चार आलोइये । धार जिणेभर वपण सुणीने, पाप
 मण्ड सवि धोइये रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ सा० ॥

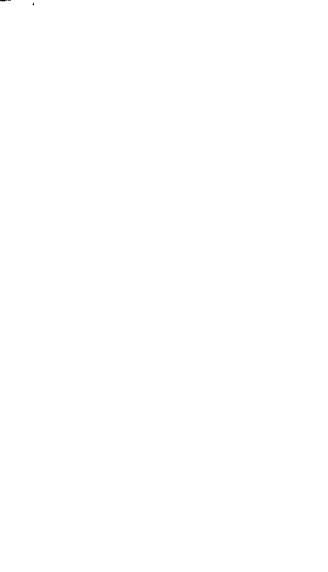
॥ दाल वीरजा ॥ पार्था सुगुरु पसाय ॥ एहेर्जा ॥

पृथिवी पार्था तेउ, याउ वनमपनि ॥ ए पांचे

धावर कलां ए । करिं करमण आरंभ, घेप्र जे गेहियां ।

कृपा मलाय म्बणाकीयां ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक,

टोकां भोपरां । मेडी घाल चगाशीयां ए । लीपग घुप
 काज, इणी परे परपरे । पृथिवी काग विगधिगा ए ॥ ३ ॥
 भोषण नायण पाणी, छीलण अपकाय । छीनी धोर्न
 करी दूह्या ए । भाटीगर कुंभार, लोह सोवन गरा
 भाडसुंजा निहान्यागरा ए ॥ ३ ॥ नापण शेकण कान
 घम्र निखारण । रंगण रांधण रसवर्ना ए । इणी पं
 कमांदान, परे परे केवली । नेउ याउ विराधिगा ए
 ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम चावि वनम्पनि । पान फु
 कल घुंटीयां ए । पोदोक पावडी जाक, शेक्यां सुक
 ष्यां । छुंयां छेयां आधीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने परं
 पाणी घालीने । घणा निल्यादिक पीलीया ए । घली
 कोलुमांदि, पीली शेलडी । कंद मृल कलवेचीयां ए
 ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हणवा हणवाया । हणतां जे
 अनुमोदोया ए ॥ आभव परभव जेह, वलिय भवोभव
 । ते मुझ मिच्छामि दुषाडण ॥ ७ ॥ कुर्मा सरमीया
 कीडा, गाडर गंडोला । इयल पूरा अलसीयां ए
 वाला जलो चडेल, विचलिन रसनणा ॥ वली अथा
 णां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेहन्द्रिय जीव, जे मे दूह
 ष्या ॥ ते मुझ ० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥
 चांचड कीडी कुंधुआ ए ॥ ९ ॥ गहरीयां घीमेल, कान
 खजूरडा । गांगोडा धनेडियां ए । एम तेइन्द्रिय जीव,



जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लंघ्य विमारियां जी, क
 भांग्यां पचकखाण । कपटहेतु किरिया करी जी, क
 आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ व्रण दाल क
 दुहे जी, आलोपा अतिघार । शिवगति आरा
 तणो जी, ए पहेलो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ दाल घोधी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

एच महाव्रत आदरो । साहेलडो रे
 अधवा ल्यो व्रत यार तो ॥ यथाशक्ति व्रत आदरो
 सा० । पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत ली
 संभारीये , सा० । हियडे धरिय विचार तो
 शिवगति आराधना तणो , सा० । ए बी
 अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सय खमाविये , सा०
 पोनि घोराशो लाख तो । मन शुद्धे करो खा
 मणां , सा० । कोइणुं रोप न राख तो ॥ ३ ॥
 सर्व मित्र करी चितवां , सा० । कोई न जाणो श
 तो । राग द्वेष एम परिहारो , सा० । कीजे
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमाविये ,
 सा० । जे उपनी अर्पानि तां । सज्जन कुटुंब
 करी खासणां , सा० । ए जिनशासन रीति
 तो ॥ ५ ॥ स्वमिये अने खमाविये , सा० । एहज
 पर्मनो सार तो । शिवगति आराधन तणो,

मङ्गलार ४ तो पानक गाली, वामे सुर अवत
 नव पद सरिखो, मंग्र न को संसार । इह भव
 सुख संपत्ति दातार ॥ २ ॥ जुओ भीलने भील
 राणी थाय । नवपद महिमार्थी, राजसिंह
 राणी रत्नवनीवेहु, पाम्यां छे सुरभोग । ए
 लेशो, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व
 फल्यो सत्काल । ऋणिधर फीटीने, प्रगट थइ पु
 शिवदुभरे योगी, सोवन पुरुसो कीध । इम
 काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधि
 जिणेसर भाख्यो । आराधन केरो, विधि जेणे
 राख्यो ॥ तेणे पाप पखाली, भव भय दुरे न
 जिन विनय करतां, सुमति अमृत रस चाख
 ॥ दाल आठमी ॥

॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ ए देशी ॥
 सिद्धारथ राघ कुलतिलो ए, त्रिशला मात
 नां । अघनीतले तुमे अघनरथा ए, करवा अम
 ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ ए आंकणी ॥
 राघ करवा घणा ए, केहेतां न लहुं पार नां
 चरणे आव्या भणो ए, जो तारे तो नार ॥ २ ॥
 आश करीने आधीयो ए, तुम चरणे महाराज
 आख्याने उघोखणो ए, मो किम रहेदो लाज ।

॥ पंचमी का छोटा स्तवन ॥

पंचमी तप तुमे कते रे प्राणी । निर्मल पामो ज्ञान
 रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पीछे किरिया । नहीं कोई ज्ञान
 समान रे ॥ पं० ॥१॥ नंदीसूत्रमें ज्ञान बखाण्युं । ज्ञान
 नना पंच प्रकार रे ॥ मनि श्रुति अवधि ने मनःपर्यव ।
 केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २ ॥ मनि अठावीश
 श्रुत बउदे वीश । अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोष
 भेदे मनःपर्यव दाख्युं । केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥
 चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेहसुं तेज आकाश रे ।
 केवल ज्ञान समो नहीं कोइ । लोकालोक प्रकाश रे ॥
 पं० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने । म्हारी पुरी उमेई
 रे ॥ समय सुन्दर कहे हूं पग पामुं । ज्ञान नो पंचमी
 भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥

॥ ग्यारसका स्तवन ॥

समयसरण पैठा भगवंत । गरम प्रकाशे भी
 अरिहंत ॥ पारं परपदा पैठा जुई । मिगजिर मुदि
 हणपारम रुई ॥ १ ॥ महिनाथना मोन कल्याण ।
 जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अरदीक्षा लोभी गयी
 ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवल ज्ञान । पांग कल्याण
 गक अनि परधान ॥ ए निविर्ना महिमा लवई ॥ मि०
 ॥ ३ ॥ पांग भगत परपण इमरीज । पांग कल्याणक

॥ ऋषभजिनेश्वरका स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिय । वीतनही क
 धारोरे (जगनातारो । मुझ तारो जी कृपानिधि ह
 मी) जग जशवाद प्रकट छे ताहरो । अविचल सु
 दातारोरे ॥ ज० मु० ॥ १ ॥ निजगुण भोक्ता परगुण लो
 आत्म शक्ति जगायारे । ज० । अविनाशी अवि
 अधिकारी, शिववाणी जिमरायारे ॥ ज० मु० ॥ २ ॥
 इत्यादिक गुण आवणे निमुगी, हँ तुज चरणे आणे
 । ज० । तुम रीकावण हेतु तनखिण, नाटक ए
 मघायोरे ॥ ज० मु० ॥ ३ ॥ काल अनंत रत्ना एकेंद्री, त
 साधारण पामी रे । ज० । वरम मंग्याता बलि वि
 लेंद्री, वेप धर्या दुःख घायोरे ॥ ज० मु० ॥ ४ ॥ सुर
 तिरि बलि नरक तर्गा गनि, पंचेंद्रियणो घायोरे । ज०
 र्वायोसे देटक मांति भमनां, अयनां हँ विण हाय
 ॥ ज० मु० ॥ ५ ॥ भवनाटक नितप्रति कर नवनव,
 मुझ आगल नाच्योरे । ज० । समरथ साहिय सुरत
 मरियां, हँ निरग्या मुझने जाच्योरे ॥ ज० मु० ॥ ६ ॥
 जो मुक्त नाटक देखा रीमया, तो मुझ बंछिन दीजे
 ॥ ज० ॥ जो नवि रीजा तो मुझ भामां, बलि नाटक
 नवि काजेरे ॥ ज० मु० ॥ ७ ॥ लालच धरि हँ सेव
 छारुं, हँ दुसरा नवि कापेरे ॥ ज० ॥ दाता सेती मु

भलेरो, वहिलां उत्तर आपेरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुस
 मरिष्या साक्षिष विण महारे, जो नवि कारज सारेरे
 ॥ ज० ॥ तो मुझ करम तणी गति अबन्दी, दोष न
 कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥ ९ ॥ दीनदयाल दयाकरी
 दीजे, शुद्ध समबिल सहिनागीरे ॥ ज० ॥ सुगुण से-
 बकना यांन्द्रम पुरो, तेहीजगुण मणिल्याणी रे ॥ ज०
 मु० ॥ १० ॥ वर्षे अदारे गुणतालीसे, जेष्टसुदी सोम-
 वारो रे ॥ ज० ॥ मालमंद प्रतिपददिन भेटवा, धीका-
 नेर महारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामिका स्तवन ॥

सकल संसार अथवार ए हुंगणुं, स्वामीसीमंधरा
 तुम्ह भगते भणुं । भेटवा पायकमल भाय हियडे घणो,
 वरिष सुपसाय जे धीनयुं ते सुणो ॥१॥ तुम्ह शु-
 कट अरिहंत शु रागिये, जिएयां अडे निस्यो कर
 जांदि करि भाविये । अति मयल मुझ हिये मोह माया
 घणां, एरु मन भगति किम करुं त्रिभुवन धणी ॥२॥
 जाय आरति करे नयनवी परिगडे, रीश अटकां चटे
 लोभ घयरी नडे । नयण रस वयण रस काम रस रसीयो,
 तेम अरिहंत तुं हियडे नवि यसीयो ॥ ३ ॥ दिवस
 न रात हियडे अनेरो धरुं, मूढ मन रीशवा वलिय

माया करुं । तुंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आवरुं,
 तेम कर जेम संसार मागर करुं ॥ ४ ॥ कम्मवमि
 सुख ने दुःख जे हूं मेहूं, मननर्णा घात अरिहंत किय
 कहुं । करि दया करि मया देव करुणापरा, दुःख हरि
 सुख करि स्यामी सोमंधरा ॥५॥ जाण संयोग आगम
 वपण पण सुणुं, भर्म न कराव प्रभु पाप पांते घणुं ।
 एक अरिहंत तूं देव बीजो नहीं, एह आवार जग जा-
 णजो अम्ह सही ॥६॥ घणा कणव माय पिय पुत
 परिपण सह, हस्यो थोल्पो रम्यो रंग रातो बहु । जयो
 जयो जगगुरु जीव जीवनवरा, तुम्ह समो वड नहीं
 अवसर बाल्हेसरा ॥७॥ अमियसम वाणि जाणुं सदा
 मांभलुं, धार वर परवदा मांहि आवी मिलुं । विन
 जाणुं सदा सामि पावड लगुं, किम करुं ठाम पुंडरगिरि
 वेगलुं ॥८॥ भोलिडा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य
 संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये । जेहने नामे मन वपण
 तन उल्लसे, दूरधी हूकडा जेम हिपडे वसे ॥९॥ भ-
 लभलो एणि संसार सह ए अच्छे, स्वामी सोमंधरा ते
 सह तुम पछे । ध्यान करतां सृपनमांहि आवी मिले,
 देखिये नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम
 सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहणुं नेह जे घात तुम्ह
 जो कहे । तुम्ह पाप भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख

जो होय तो रहिय आबो भिन्नु ॥११॥ मेरुगिरि
 लेखणी आभ कागल करं, क्षीरसागर तणां दूध खडिया
 भरं । तुम्ह मिलयातगा स्वामी संदेशड़ा, इंद्र पण ल-
 गिय न शके अन्ने एहया ॥१२॥ आपणे रंगभरि घात
 मुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय मुख तेटली ।
 पुणो सीमंधरा राज राजेमरा, लाड़ ने कोड़ प्रभु पूर-
 सविमाहरा ॥१३॥ पुष्यभवि मोह यश नेह हुवे जेहने,
 समरिये एणि संसार नित तेहने । मेहने मोर जिम
 कमल भमगे रमे, तेम अरिहंत तूं चिस मारे गमे
 ॥१४॥ खरं अरिहंतनु ध्यान हिवड़े वस्युं, यापहुं पाप
 हिय रहिय करडो किम्युं । ठाम जिम गरुड पर पंखि
 आवे घटी, ततखिण नर्पना जाति न शके रही ॥१५॥
 पाप में कज्ज सावज्ज सह परिहरी, स्वामी सीमंधरा तु-
 म्ह पय अणुमरी । शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालहुं,
 दुःख भंठार संमार भय टालहुं ॥१६॥ तुम्ह हुं दास
 हुं तुम्ह सेवक सही, एह में घात अरिहंत आगल
 कही । एवही माहरी भगति जाणी करी, आपजो पा-
 पर्जी सार केवल सही ॥१७॥ कलज ॥ एम म्हादि वृद्धि
 ममृद्धि कारण, दुरित कारण सुख कगे । उवज्जाव
 दर श्री भक्ति लाभे, पुण्यो श्री सीमंधरो । जय जयो
 जगगुरु जीव जीवन करी म्यामी मया घणी । कर जोडी

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण
 शैख्या धर्मनी सीर । आसाद चांमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संबच्छरी करिये श्रण उपवास ॥१॥ चउ-
 बीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घूप अगर
 उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ व-
 लि साहमीबच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे
 केई तपसी शिलधार । अडदाह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुपदेवी सानिध कहे जिनलाभ सरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलीभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
 नार्यभ चरण अंगठटे, दायक भवजल अंत ॥१॥
 जानुं पले काउस्सभग रत्ना, विचरथा देश विदेश ।
 खडां खडां केवल लब्धा, पूजो जानु नरेश ॥२॥
 लोकांतिक पचनें करी, वरस्या वरसी दान ।

बलि बलि कीनपुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हे श्याउं गाउं जिनघर घोर, जिनपर्ये पजूसण
 शक्या भर्मेनी सीर । आसाढ घामासे हुंती दिन पचास;
 पडिकामण सेवघदरी करिये प्रण उपवास ॥१॥ बड-
 बीशे जिनवर पूजा सगर प्रकार, करिये भटे भावे,
 भरिणे पुण्य भेदार । बलि बन्ध प्रवाडे किनां एत
 धर्मण, एम पर्ये पजूसन सहुमें महिमावंन ॥२॥ पुन-
 क पुताबी नब बाधनाये बंगाय, श्रीकल्पवृक्ष जिां
 सुदगां पार पलाय । प्रतिदिन परभादना दूर अण
 उगेब, एम भविपण माली पर्ये पजूसन मेद ॥३॥ ए-
 कि कालमेवपण करिये बान्दर, कोई नाका नये
 वेई नरमं निरुणर । एतरो पजूसन इममेवपण
 मेर, सुदगेवे मनेवे बडे किनाउ मनेद ॥४॥

१) ५५५ ५५५५५५ ५५५ ५५५ ५५५

५५५५ ५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५
 ५५५ ५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५
 ५५५ ५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५
 ५५५ ५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५
 ५५५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५ ५५५५

करकांठे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गयुं दोग्य धंशधी, देखी वीर्य अनन्त ।
 भुजापले भवजल तरया, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रत्नप्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, पाल्या रागनें रांय ।
 हेम देई यन खंडनं, हृदय तिलक मंत्रोप ॥६॥
 मोल पहर देई देजना, कंठ विवर पर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणं, निम गलं निलक अमृत ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सैर्यन ।
 त्रिभुवन निलक समा प्रभु, भाल निलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
 वसिषा निग कारण सहो, सिद्ध जिम्हा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय मन्यनां, निम नय अंग जिनंद ।
 पूजो बहुविध भावधी, कंठ सहु वीर मुजिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्ये रार्णा पद्मावती, जीयराजि त्वमावे । जाण
 पणुं जग ते भक्तुं, इण वेला आये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दृक्कंठं, अरिहंतनी माय । जे में जीय विरा
 धिया, अउरार्णी सार ॥ ते० ॥ २ ॥ गान लाग्य पृथि-

बलि बलि दीनये प्रभु पूर आगा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हे प्याडे गाडे जिनवर धार, जिनवर्ये पज्जुगण
 शाण्या धर्मनी मीर । आगाड र्नामाने हुंणी दिन पचाम,
 परिकामण दीपच्छुडी करिणे प्रण उपचाम ॥१॥ वर-
 धारो जिनवर पुजा मत्त प्रहार, करिणे भये भाये,
 मरिणे गुण्य भंसार । बलि धर्म्य प्रयादे किरणी लाभ
 अर्धन, इम पने पज्जुगण मद्दुमं महिमाधन ॥२॥ गुण
 व, पुजाया मय वाचनाये वेनाय, भीरुम्यमत्र त्रिदी
 सुतनी वाच पलाय । पतिदिन परभावना घुद भगा
 इत्येव, इम मरिण्य प्रार्था पने पज्जुगण मीव ॥३॥ व
 नि मारधीव उल्ल करिणे वासवार, कोडे भावना भाये
 वडे नपरी गिल्लवार । अरुदाद पज्जुगण इम मीवप भा
 मर सुपदेदी मानि । वडे जिनम्यान मरिद ॥४॥

॥ अथ भगवतके अंग पुजा ना दृष्टा ॥

इत्येवम स्मृत वाचसा, गुणदिव, नर पुत्रेण ।
 कथं च वाच भोगदे, वाचक, मयत्तल कोन ॥१॥
 इत्येव अंश वरुणमाग मया, विचर वा वेग भिरे ।
 वरुण वरुण केवल मया, पुजा ज्ञानु मीडा ॥२॥
 अनेकानि कथं चरी, वाचसा वादी वरुण ।

करकाँडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गर्वु दोग धंजधी, देवी दीर्घ अनन्त ।
 भुजापले भवजल तरथा, पूजो मध महन्त ॥४॥
 रक्षप्रथ गुण ऊजली, सकल सुगुण विभ्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, फरमा अविपल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशाम पले, पाल्या रागनें रीप ।
 हेम देह यन गेटनें, हृदय मिलक मंगोप ॥६॥
 मोल पहर देह देजना, कंठ विषय धा मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर गुणें, निम गले मिलक अमूल ॥७॥
 नाथंकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सिधंन ।
 त्रिभुवन मिलक ममा प्रभु, भाल मिलक जगजंन ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लांकांतिक भागवंन ।
 यमिया निज कारण मरी, सिद्ध जिया पूजंन ॥९॥
 उपदेशक मध मग्यनां, निम नय धंग जिनेह ।
 पूजो पहृविध भाषी, कजे महृ क्षर मुनिह ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हने राणी पद्मावती, जीवराजि ममाये । जाण
 वलु जग मे भर्तु, हण वेला पाये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दृष्टे, अरिंतनी मारु । जे मे जीव विरा
 थिया, कहराजी मारु ॥ मे० ॥ ८ ॥ मान मारु दृषि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हृं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्य पजूसण
 शाख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास,
 पडिकमण संवच्छरी करिये घण उपवास ॥१॥ चउ-
 बीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजायी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घूप अगर
 उखेय, इम भविषण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ ब-
 लि साहमीवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे
 केई तपसी शिलभार । अडदीह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुयदेयी सानिध कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलभरी संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंम ।
 कायंभ चरण अंगठटे, दागक भयजन्त अंग ॥१॥
 जानुं बले काउसमाग रथ्या, विभरवा देश विदेश ।
 स्वर्दां एर्दां केयल लाया, पूजो जानु नरेश ॥२॥
 लोकांतिकं वचनं करी, यरम्या यरमी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गर्पु दोय धंशधी, देखी धीर्य अनन्त ।
 भुजापले भयजल तरधा, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रक्षत्रय गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, पाल्या रागनें रोप ।
 हेम दई घन खंडनें, हृदय निलक संतोप ॥६॥
 मोल पहर देई देशना, फंड विषय पर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिम गले निलक अमूल ॥७॥
 तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेधन ।
 त्रिभुवन निलक समा प्रभु, भाल निलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगधन ।
 यसिपा तिण कारण सही, सिद्ध शिखा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय तत्वनां, तिम नय धंग जिनंद ।
 पूजो बहुविध भावधी, कहे सहु धार मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्वे राणा पद्मावती, जीवराशि खमाये । जाण
 पणुं जग ते भलुं, इण वेला आये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दुक्कटं, अरिहंतनी माख । जे में जीव विरा
 धिया, चउरागी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान माय्य पृथि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्य पजूसण
 शक्या धर्मनी सीर । आसाढ चांमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संवच्छरी करिये घण उपवास ॥१॥ घउ-
 कीशे जिनवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावें,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्य पजूसण सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजाधी नथ वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभायना घुप अगर
 उगेय, इम भविष्यण प्राणी पर्य पजूसण मेय ॥३॥ य-
 ष्टि माहर्मावच्छल करिये शारंगार, कोई भायना भायें
 केई तपसा जिलभार । अहदीह पजूसण इम सेयन आ-
 गंद, सुपदेया मानिथ कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना वृहा ॥

जलैभरि संपुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंत ।
 कथम शरण अंगटटे, दागक भयजल पांत ॥१॥
 जानुं बने कउमाराग रथा, विषरथा देश विदेश ।
 लदां लदां केयल लला, पूजां जानु मरेश ॥२॥
 लोकार्थिकं ध्यानं करी, परमा धर्मा दान ।

करकांठे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गयुं दोष घंशधी, देखी वीर्य अनन्त ।
 भुजायले भयजल तरथा, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रक्षप्रय गुण ऊजली, सफल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल वी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, पाल्या रागनें रोप ।
 हेम दहै यन खंडनं, हृदय तिलक संतोष ॥६॥
 मोल पहर देई देजना, कंठ विवर घर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुगं, निम गले तिलक अमूल ॥७॥
 श्रीधर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सेर्यन ।
 त्रिभुवन तिलक ममा प्रभु, भाल तिलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धजिह्वा गुण ऊजली, श्रीकांतिक भगवंत ।
 पसिपा तिन कारण महां, सिद्ध जिह्वा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय मन्वर्ता, निम नय धंग जिर्नद ।
 पूजो बहुविध भावधी, कहे सहु धार मुनिदं ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

ह्ये रार्णा पद्मावती, जीयराजि खमाये । जाण
 पणुं जग ते भलुं, इण वेला भाये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मिच्छामि दुक्कहं, अरिहंतनी माख । जे में जीय विरा-
 धिया, बडराजी साख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान माग्य वृधि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनघर वीर, जिनपर्य पजूसण
 शक्या धर्मनी सीर । आसाद चौमासे हुंती दिन पचास,
 पहिक्कामण संवच्छरी करिये अण उपवास ॥१॥ घउ-
 कीशे जिनघर पूजा सनर प्रकार, करिये भले भाये,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रयाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्य पजूसण सहुमें महिमावेन ॥२॥ पुस्त-
 क पूजार्थी नथ याचनाये वंचाय, श्रीकल्पसुत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घूप अगर
 उमेव, इम भविष्य प्राणा पर्य पजूसण मेव ॥३॥ व-
 लि माहर्मावच्छल करिये यांथार, कोई भावना भाये
 केई लग्नी जिलधार । अहदीह पजूसण इम मेवत आ-
 गेद, सुपदेशी मानिथ कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दृहा ॥

जनेवर्ग संगुट पात्रमां, युगलिक नर पूजन ।
 कथम चरण अंगटहे, दायक भवजल पंज ॥१॥
 जानु बने काउमगाग रता, विषयवा देग विवेग ।
 नर्दा नर्दा केवल लजा, पूजा जानु मरेज ॥२॥
 शोकांतिक वपनें कीं . चरगा चार्गी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गर्वुं दोष शंशयी, देखी धीर्य अनन्त ।
 भुजायले भवजल तरया, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रत्नप्रप गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम वले, पाल्पा रागनें रोप ।
 हेम दहे पन खंहेनें, हृदय निलक मनोप ॥६॥
 मोल पहर देई देगना, कंड विघर पर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, निम गले निलक अमूल ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेधंत ।
 त्रिभुवन निलक ममा प्रभु, भाल निलक जयधंत ॥८॥
 सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकांतिक भागधंत ।
 यस्मिण तिम कारण सहा, सिद्ध शिखा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नय तन्यनां, तिम नव शंग जिनंद ।
 पूजो बहुविध भाशयी, कहे सहु धार मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीयरानि स्यमावे । जाण
 गुं जग ते भस्तुं, इण वेला श्यावे ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मेच्छामि दुष्कटं, अग्निहंमनी माख । जे में जीव विरा-
 धिया. शठराणी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ मान नाग्य पृथि-

बलि बलि धीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हूं घ्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण
 शेख्या धर्मनी सीर । आसाढ चौमासे हुंती दिन पचास,
 पडिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपचास ॥१॥ चउ-
 बीशे जिनवर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भावे,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चैत्य प्रवाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्व पजूसण सहृमं महिमावंत ॥२॥ पुस्त-
 क पूजावी नव वाचनाये वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना घूप अगर
 उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥३॥ ब-
 लि साहमोवच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे
 केई तपसा शिलधार । अडदीह पजूसण इम सेवन आ-
 गंद, सुपदेवी मानिध कहे जिनलाभ मुरिंद ॥४॥

॥ अथ भगवंतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलैभरी मंगुट पात्रमां, युगलिक नर पूजंन ।
 कापंभ परण अंगठटे, दाणक भयजळ अंत ॥१॥
 जानुं बले काउरसाग रत्ना, विचरन्वा देश विदेश ।
 एहां एहां वेयळ लक्षा, पूजा जानु नरेश ॥२॥
 लोकांतिके वपनें करी, पाग्या वामी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गर्वु दोष भ्रंशधी, देखी वीर्य अनन्त ।
 भुजायले भवजल तरधा, पूजो खंध महन्त ॥४॥
 रक्षप्रप गुण ऊजली, सकल सुगुण विश्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पले, पाल्या रागनें रोप ।
 हेम दहं पन ग्वहनें, हृदय निलक मनोप ॥६॥
 मोल पहर देई देशना, कंड विघर पर तूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, निम गलं निलक अमृत ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन सेवक ।
 त्रिभुवन निलक ममा प्रभु, भाल निलक जयगंत ॥८॥
 सिद्धजिला गुण ऊजली, लोकांतिक भगवंत ।
 वसिषा निग कारण सर्हा, सिद्ध जिखा पूजंत ॥९॥
 उपदेशक नव मत्यनां, निम नव भंग जिनेद ।
 पूजो बहुविध भावधी, फहे सहु धार मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हवे राणी पद्मावती, जीपरानि स्वमावे । जाण
 गुं जग ते भलुं, इण वेला ध्याये ॥ १ ॥ ते मुक्त
 मेच्छामि दुष्कहं, अरिहंतनी माख । जे में जीव विरा
 धिया. खडराणी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ मात माग्य पृथि-

बलि बलि कीनयुं प्रभु पूर आशा मनतणी ॥१८॥

॥ पर्युसणकी स्तुति ॥

बलि बलि हं प्याउं गाउं जिनधर वीर, जिनपर्य पजूसण
 शक्या धर्मनी सीर । आसाद चौमासे हुंती दिन पचास,
 पढिकामण संयच्छरी करिये अण उपवास ॥१॥ यउ-
 कीगे जिनधर पूजा सतर प्रकार, करिये भले भाये,
 भरिये पुण्य भंडार । बलि चित्त्य प्रयाडे किरतां लाभ
 अनंत, इम पर्य पजूसण महुमें महिमायें ॥२॥ पुस्त-
 क. पुजार्थी नथ थापनागे यंथाप, श्रीकल्पसुत्र जिहां
 सुणतां पाप पलाय । प्रतिदिन परभावना धूव अगर
 उमेव, इम भविष्य प्राणी पर्य पजूसण मेव ॥३॥ व-
 ष्टि साहसोपन्यस्त करिये थारंथार, कोई भावना भाये
 केडे तपनी शिलधार । साहसैह पजूसण इम मेवत आ-
 गेद. सुगदेश मानिय केडे जिनलाभ सुदिंद ॥४॥

॥ अथ भगवन्तके अंग पुजा ना दृहा ॥

जलधरं मंगुट पात्रमां, गुगलिक. नर पुंज ।
 कथम चरण अंगदंडे, दाणक. भवजल अंग ॥१॥
 जानु बले काडगाग रणा, विणरना देग विदेग ।
 नदी नदी केपल लला, पुजां जानु मदेश ॥२॥
 लोकांतिक. वपनें कर्ता, वरगा नारी दान ।

करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥३॥
 मान गयुं दोष अंगर्था, देखी धीरे अनन्त ।
 भुजापले भवजल तरथा, पूजो गंध महन्त ॥४॥
 रत्नप्रप गुण ऊजली, मकल सुगुण विध्राम ।
 नाभि कमल नी पूजना, करता अविषल धाम ॥५॥
 हृदय कमल उपशम पत्त, पाल्या रागनें राय ।
 हेम देह वन गंधनें, हृदय निलक संतोष ॥६॥
 मोल पाद देह देजना, कंठ विथर पर मूल ।
 मधुर धुनी सुरनर सुणे, निम गाने निलक अमूल ॥७॥
 नार्थकर पद पुन्य धी, त्रिभुवन जन मेधक ।
 त्रिभुवन निलक समा प्रभु, भाल निलक अचरक ॥८॥
 सिद्धजिह्वा गुण ऊजली, ग्योकांतिक भगवंत ।
 पत्तिया तिन कारण मर्ती, सिद्ध जिया पूजना ॥९॥
 उपदेशक नय तप्यना, निम नय अंग जिनेद ।
 पूजो बहुविध भावधी, कां. सह धार मुनिदे ॥१०॥

॥ अथ पद्मावती आराधना प्रारंभ ॥

हरे राणा पद्मावती, ज्ञापराणि त्वमाये । ज्ञान
 षु जग ते भर्तु, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते सुभ.
 मिच्छामि वृक्षे, अरिहंतनी माय । जे में जीव विरा
 धिया, अउरानी लाय ॥ ते० ॥ ६ ॥ ज्ञान ज्ञान वृषि-

शीतला, साते अप्काय । सानलाख तेउकायना
 बली घाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति,
 साधारण । वी ति चउरिंद्रिय जीवना, वे वे लाख
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवना तिपेच नारकी, चार चा
 शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे सेविषां, जे पाप अ
 त्रिविध त्रिविध करी परिहकं, दुर्गतिनां दातार
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीर्ना जीवनी, घोल्या मृषावाद
 अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥
 मैलपो कारिमो, कीधो क्रोध विडोय । मान माया
 में कीया. बली राग ने छेप ॥ ते० ॥ ८ ॥ कली
 जीव दृहध्या, दीधां कृडां कलंक । निंदा कीर्ना प
 रनि अरनि निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चारु कीर्मा
 नरे, कीधो धापणमोमो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो,
 आपणो भगंसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने
 कीया, जीव नानाविध घात । खाटीमारभवे चर
 मारवा दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ कार्जा मुल्लाने
 पदो मंत्र कटोर । जीव अनेरुझभे कीया, कीर्मा
 अचोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ खाटकीने भवे मांछलां, ज
 जलयास । धोयर् भील कोली भवे, मृग पाशा
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ खाटकीने भवे में कीया, अ

॥ घंटीयान मराविया, कोरला हृष्टी दंत ॥ ते०
 ॥ परमाधामीने भवे, दीर्घां नारकी दुःख ।
 भेदन वेदना, ताडन अतितिर्य ॥ ते० ॥ १५ ॥
 नेभवे में क्रिया, नीमाह पचाव्या । तेली भवे
 पीलिया, पापे पिष्ट भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 भवे हल रेडीयां, फाट्यां पृथ्वीनां पेट । सुड
 त घणां क्रिया, दीर्घां पलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 ने भवे रोपिया, नानाविध पृक्ष । मृत् पत्र फल
 तां, लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ जाधो-
 ने भवे, भरत्या अघिका भार । पोटी पृष्ट कीडा
 दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ पुडीपाने भवे
 वा, कीर्षां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
 तद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ-
 गार्यां माणमष्टुंद । मदिरा मांस मारण भरुपां,
 मूल ने वंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ ग्याग्य रणाधी
 गो, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
 पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया
 दरमें दय दीधा । मम त्याधा कीमारागना, कृदा
 त कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विन्द्री भवे उंदर शीपा,
 तो हृत्पारी । मृद गमार तणे भवे, में जू लीर
 ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाइभुंजा तणे भवे, एकेद्रिय

धीनगा, साने अप्पुण्य । सानशास्त्र तेउकायना, साने
 वली घाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दग प्रभ्येक घनस्थिति, चौदह
 साधारण । धी निचउरिंद्रिय जीवना, वेवे लाग्य विचार
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवना निर्देव नारकी, चार चार प्रका-
 शी । चउदह लाग्य मनुष्यना, ए लाग्य चौराशी ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ इग्य भवे परभवे मेचियां, जे पाप अडार ।
 त्रिविधत्रिविध करी परिहकं, दुर्गतिसां दानार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीथो जीवनी, शोल्या मृषावाद । दोष
 अदत्तादानना, मैयुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह
 मेल्यो कारिमो, कीथो क्रोध विडोय । मान माया लोभ
 में कीया. वली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी
 जीव दृहव्या, दीर्घां कृडां कलंक । निंदा कीथो पारकी,
 रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाटो कीथो चो-
 तरे, कीथो धापणमोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो
 आप्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में
 कीया, जीव नानाविध घात । चांडीमारभवे चरकलां,
 मास्थी दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ काजी मुन्लाने भवे,
 पही मंत्र कठोर । जीव अनेकझभे कीया, कीर्थां पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ साळीने भवे सांछलां, जान्यां
 जलवास । धीवर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोट्यालने भवे में कीया, आकरा

। पंशीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते०
 ॥ परमाधामीने भवे, दीर्घां नारकी दुःख ।
 भेदन वेदना, ताडन अतितिख ॥ ते० ॥ १५ ॥
 नेभवे में किया, नीभाह पचाव्या । तेली भवे
 तोलिषा, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 भवे हल खेडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । छुट
 घणां किया, दीर्घां चलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 भवे रोपिषा, नानाविध पृक्ष । मूल पत्र फल
 लागां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आशो-
 ने भवे, भरथा अधिका भार । पोठी पूटे कीडा
 दया नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ पुष्पिने भवे
 गा, कीर्घां रंगण पाम । अग्नि आरंभ कीधा घणा,
 द अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ-
 रथां माणमपुंद । मदिरा मांस मातरण भरवां,
 मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ त्याग स्वणावी
 पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीधा अतिघणा,
 अपज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीया
 दरमें दय दीधा । सम राधा योनरागना, कूडा
 कीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विन्ती भवे उंदर लीषा,
 हतपारी । मूढ गमार तणे भवे, में जू लीर
 ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

धीनगा, साते अप्काय । सातलास तेउकायना, स
 बली घाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दग ग्रन्थेरु यनहरति, चौ
 साधारण । धी नि चउरिद्रिय जीवना, वे वे लाख वि
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता निर्पेच नारकी, चार चार प्र
 शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए त्याग्य चोराशी ॥ ते
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे मेचिगां, जे पाप अडार
 त्रिविधत्रिविध करी परिहृं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीर्था जीवना, थोल्या मृपावाद । दो
 अदत्तादानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्र
 मेलयो कारिमो, कीथो क्रोध विशेष । मान माया लो
 में कीया, बली राग मे द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी
 जीव दृहव्या, दीर्घां कृडां कलंक । निदा कीर्था पारकी
 रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी कीथो चो
 तरे, कीथो थापणमोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भले
 आप्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे मै
 कीया, जीव नानाविध घात । चाडीमारभवे चरकलां
 मारुधा दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ कार्जा मुन्दाने भवे,
 पही मंत्र कटोर । जीव अनेकज्ञभे कीया, कीर्था पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ खाडीने भवे मांछलां, जान्यां
 जलघाम । धोचर भोल कोली भवे, मृग पाड्या पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ थोट्यालने भवे में कीया, आकरा

करदंड । पंशीयान मराविया, कोरला छडी दंड ॥ ते०
 ॥ १४ ॥ परमाधामोने भये, दीर्घां नारकी दुःख ।
 वेदन भेदन वेदना, तादन अतिनिघ ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभये में किया, नीभाह पचाव्या । तेली भये
 निल पीलिया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हल्ली भये हल रोडीयां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । छड
 निदान घणां किया, दीर्घां पलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मालीने भये रोपिया, नानाविध वृक्ष । मृद पत्र फल
 फूलनां, लाग्यां पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधां-
 वाईयाने भये, भरवा अधिका भार । पोरी वृष्ट कोरा
 पट्टा, दया नार्णा लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ पुगीयाने भये
 छेतरवा, कीर्थां रंगण पास । अग्नि आरंभ कीर्था घणा,
 धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शृगवणे रम्य जडा-
 ता, मार्यां माणसवृंद । मदिरा मांस माग्यण भर्यां,
 खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ त्याग्य त्वणाधी
 धातुनी, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीर्था अनिघणा,
 पोत्रे पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीर्था
 बली, दरमें दय दीर्था । रम त्याधा कीमरागना, कृडा
 कोमज कीर्था ॥ ते० ॥ २३ ॥ दिल्ली भये उंदर लीया,
 गिाली हत्पारी । मृद गमार तणे भये, में जू लीग्य
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाइभुंजा तणे भये, एकेडिप

धीनगा, माते अप्काय । सानद्याय तेउकायना, साते
 घली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रन्येरु वनहरति, चौदह
 साधारण । धी नि चउरिंद्रिय जीयना, वे वे लाख विचार
 ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवना निर्वेच नारकी, चार चार प्रका-
 शी । चउदह लाख मनुष्यना, ए त्याम्व चौराशी ॥ ते०
 ॥ ५ ॥ इण भवे परभवे मेधियां, जे पाप अडार ।
 त्रिविध त्रिविध करी परिहृं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते०
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीयो जीवनी, शोल्या मृपावाद । दोष
 अदनादानना, मैयुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह
 मैल्यो कारिमो, कीयो क्रोध विशेष । मान माया लोभ
 में कीया, बली राग ने द्वेष ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी
 जीव दृहव्या, दीर्घां कूडां कलंक । निंदा कीयो पारकी,
 रति अरति निशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ नाडी कीयो चो-
 तरे, कीयो थापणमोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो
 आण्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में
 कीया, जीव नानाविध घात । चीडीमारभवे चरकलां,
 माख्या दिनने रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ कार्जा मुल्ताने भवे,
 पद्दी मंत्र कठोर । जीव अनेकझभे कीया, कीर्घां पाप
 अघोर ॥ ते० ॥ १२ ॥ सार्द्धीने भवे मांछलां, जान्यां
 जलवाम । धावर भील कोली भवे, मृग पाड्या पास
 ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोट्यालने भवे में कीया, आकरा

करदंड । पंशीषान मराविषा, कोरुण छडी दंड ॥ ते०
 ॥ १४ ॥ परमाधार्मीने भवे, दीघां नारकी दुःख ।
 छेदन भेदन वेदना, ताडन अतितिख ॥ ते० ॥ १५ ॥
 कुंभारनेभवे में किया, नोभाह पचाव्या । तेली भवे
 निल पीलिषा, पापे पिंड भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥
 हाली भवे हल खेडीपां, फाड्यां पृथ्वीनां पेट । सृष्ट
 निदान घणां किया, दीघां पलद चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥
 मालीने भवे रोपिषा, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल
 फूलनां, लागं पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ आधो-
 वाईपाने भवे, भरया अधिका भार । पोटी दूटे कीडा
 पड्या, दवा नाणी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुरीपाने भवे
 छेतरया, कीघां रंगण पास । अग्नि आरंभकीघा घणा,
 धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ शूरपणे रण जूझ-
 ता, मारयां माणसभृंद । मदिरा मांस माखण भरयां,
 खाधां मूल ने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी
 धातुनी, पाणी उल्लेच्यां । आरंभ कीघा अतिघणा,
 पोते पापज संच्यां ॥ ते० ॥ २२ ॥ कर्म अंगार कीघा
 घली, दरमें दय दीघा । सम खाधा धीतरागना, फूटा
 कोसज कीघा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विल्ली भवे उंदर मीषा,
 गिल्ली हत्यारी । मूट गमार तणे भवे, में जू लीख
 मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय

जीव । जुवारि चणा गृहे शेकिया, पाडंतां रीव ॥ ते ॥
 ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनंत
 रांधण इंधण अग्निनां, कीधां पाप उदक ॥ ते ॥ २६ ॥
 विकथा चार कीधी बली, सेव्या पांच प्रमाद । इष्ट
 योग पाड्या कीपा, रुद्ध विपवाद ॥ ते ॥ २७ ॥ स
 अने श्रावक तणा, व्रत लहीने भांग्यां । मूल
 उत्तर तणां, मुक्त दूषण लाग्यां ॥ ते ॥ २८ ॥ स
 बोछी सिद्ध शीवरा, शकराने समली । हिंसक जीव
 भवे, हिंसा कीधी सयली ॥ ते ॥ २९ ॥ सुवा
 दूषण घणां, बली गर्भ गलाव्या । जीवाणी दोल्पा घ
 शीलव्रत भंजाव्या ॥ ते ॥ ३० ॥ भव अनंत भम
 भकां, कीधा देह संबंध । त्रिविध करी बोसिके, तिण
 प्रतिपन्न ॥ ते ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां प
 कीधा परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी बोसि
 निणशु प्रतिपन्न ॥ ते ॥ ३२ ॥ भव अनंत भम
 भकां, कीधी कुटुंबसंबंध । त्रिविध त्रिविध करी बोसि
 निणशु प्रतिपन्न ॥ ते ॥ ३३ ॥ इणि परे इहमय प
 भवे, कीधां पाप अग्यत्र । त्रिविध त्रिविध करि बोसि
 कर्म जन्म पवित्र ॥ ते ॥ ३४ ॥ तणि विधे त आरा
 भना, भाये करणे जेह । समय मुंकर करे पापधी, वर
 एरुदो तेह ॥ ते ॥ ३५ ॥ राग वैराधी जे सुणे, ए

श्रीजी डाल । समयसुन्दर कहे पापघा, छटे ममकाल
॥ते०॥३६॥इति॥

अथ श्रावक नीचे लखेला प्रण मनोरथने चिंत-
वने महा मोहोटी निज्जरा करे । तथा
संसारनो अंत करे, ने लिखिये छेये॥

क्यारे हं पाण तथा अभ्यंतर परिग्रह जं
महापापनुं मूल, दुर्गमिने वधारनागे, काम, क्रोध, मान,
माया, लोभ, विषय अने कयापनां स्यामा, महादुःखनुं
कारण, महा अनर्थकारी दुर्गतिनी शिला, माठी लेश्यानो
परिणामी, अज्ञान, मोह, मन्सर, राग अने छेपनुं मूल,
दशविध यमिधर्म रूप कल्पवृक्षनो दावानल, ज्ञान,
क्रिया, क्षमा, दया, सत्य, संतोष तथा बोधिपीज रूप
समकिलनो नाश करनागे, संगम अने प्रत्यक्षर्यनो घात
करनागे, कुमति तथा कुसुद्विरूप दुःखदारिद्रनो देवा
घातो, सुमति अने सुसुद्विरूप सुखसौभाग्यनो नाश
करनागे, भय संगम रूप धनने मृटनारो, लोभ क्लेश
रूप समुद्रनो वधारनारो, जन्म जरा अने मरगनो
देवाघालो, कपटनो भंजार, मिथ्यास्व दर्शन रूप दान्य-
नो भरेलो, मोक्षमार्गनो विघ्नकारी, कटवा कर्म विषा-
कनो देवाघालो, अनेन संसारनो वधारनारो, महा पापी,

पांच इंद्रियना विषयरूप वैरीनो पुष्टिनो करनारो, मोहोटी चिंता शोक गारव अने खेदनां करनार, संसाररूप अगाध बहिनो सिंचवावालो, कूड कपट अने क्लेशनो आगर, मोहोटा खेदनां करावनारो, मंदबुद्धिनो आदर्यो, उत्तम साधु नियंथाये जेने निर्यो छे, अने सर्व लोकमां सर्व जावोनं एना मरिखो बीजो कोई विषम नथी, मोहरूप पाशनां प्रतिबंधक, इहलोक तथा परलोकना सुखनो नाश करनार, पांच आश्रवनो आगर, अनंत दारुण दुःख अने भयनो देवावालो, मोहोटा सावध व्यापार कुवाणित्य कुकर्मादान नां करावनारो, अधुव, अनित्य, अजायवनो, अस्मार, अत्राण, अशरण, एयो जे आरंभ अने परियत्त जेने हूं क्यारे छांटीश? जे दिवस छांडिश, ते दिवस महारो भय्य छे! ॥ ए प्रथम मनोरथ ॥

० क्यारे हूं मुंड भडने दश प्रकारं यन्निर्भर भारी, नववाहे विजुद्ध आत्मनारी, सर्व मावण परिहारो अणुमाग्ना सत्कार्यो गुणभारो, पांच समिति अणु गुणिये विजुद्धियहारो, मोहोटा अभिसरनां वारी, वेहेनालोश दाय रहित विजुद्ध आहारो, मन्त्र भेदे संयम भारी, पार भेदे सपत्न्याकारो, अंश आहारो, प्रांच आहारो, अणु आहारो, विम आहारो, लुक्ल आहारो, मुद

आहारी, अंतर्जावी, पांनजावी अरसजावी, चिरसजावी, स्तुवखजावी, तुछजावी, सर्व रस न्यागी, छफायना दया-
ल, निर्दोभी, निःश्यादी, पंखातुल्य, घायरानी परे अ
प्रतिबद्ध विहारी, शीतरागना आज्ञामहित, एहवा गुणांना
भारक जे अणुगार ने हं केपारे भईज? जे दियम हं
पूर्वोक्त गुणवान भाइज ते दियम भन्य जे ॥ ७ घांजां
मनोरथ ॥

हे कपारे हं सर्व पापस्थानक आलोहं, निःशान्य
भई, सर्व जावराति स्वमार्धाने, सर्वदम संभाराने, अटार
पापस्थानरुधी त्रिविधे योमराने, चारे आटार पणपर्या-
ने, शरीराने उहेले श्यासोच्छामे योमरार्धाने अण आ-
गथना आगथना भको, चार भंगलिक रूप चार शरण
सुरे उगगतो भको, सर्व संभारने वृंठ देसा भरो, एक
अरिहंस, पांजा सिद्ध, श्रीजा साधु, अने सोभा केशलि
प्ररूपिसभर्म, तेने प्यापना भको, शरीरना मसमारति,
भयो भको, पाटोपगमन संभारा मरति, वांच अति-
चार टालना भको, मरगाने अणपांजना भको, एहचुं पं-
दिस मरग अचकाले मुभाले कगविज? ॥ ७ श्रीजां म-
नोरथ ॥

७ अण मनोरथने श्रायक, मन वदन अने वापाणे-
कर्ता शुद्धपणे प्यापना भको सर्व कर्म निर्जरीने संभार-

नो अंग करे, मोक्षरूप शाश्वत स्थानक प्रत्ये पामे ॥

अथ सूतकवीचार प्रारंभ ।

प्रथम किसीके घर जन्म होवे उसका सूतक ।

१ पुत्र जनमे तो दिन दश और पुत्री जनमे तो पारह दिन तक सूतक रहे ।

२ पारह दिन उस घरका मनुष्य देव पूजा न करे । जंगल में जीमना हो तो दूसरे के घर से पानी लेकर देव पूजा करे ।

३ सूबायद करनेवाली करानेवाली को नो नवकार भी नहीं गीनना चाहिये ।

४ प्रसववाली स्त्री माम एक जिनपूजा न करे, दर्शन भी न करे ।

पह दिचारसार प्रकरण मध्ये कल्लो हे ।

५ घरना गोत्र बालाने दिन पांचका सूतक ।

६ व्यवहारभाष्य की मलयगिरिकृत टीका मध्ये कल्लो हे ।

७ जानवर घरमें जनमे तो दिन दश का सूतक, और जंगल में जनमे तो एक दिन का जानना । भैंस गाव का दूध १० दिन बाद कल्पे ।

१० पक्षी उड़ड़ी का दूध आठ दस दिन बाद कल्पे ।

१२ दाम ब्रामी के बालक जनमे तो २४ प्रहर

सूतक रहे ।

ऋतुव्रती स्त्री संबंधी सूतक विचार—

दिन तीन तक भांडो उपगर्ण आदि हूये नहीं पोषीस प्रहर बाद साफ़ होकर पीछे हाथ लगावे। दिन चार पहिक्रमणादिक करे नहीं। एण तपरपांकरे सो लेगे लागे । दिन पांच तथा सात पीछे जिनपूजा करे । रोगादिक कारण से तीन दिन विन्या पीछे जो रुधिर देखने में आवे सो दोष नहीं । विवेक करी पवित्र होकर जिन प्रतिमा का जिनदर्शन, अन्नपूजा करे, माधु ने पहिसाभे, परन्तु जिनप्रतिमा की अंगपूजा न करे । एक वर्षीय ग्रंथ में क्यो छे ।

॥ ऋतुव्रती ॥

पहले दिन बंधालनी, दूजे दिन ब्राह्मप्राणिनी,

तीजे दिन प्रजान, चारें पोषन समान ।

चौथे दिन सुद्ध होत (फिर) दर्शन करे ॥ इसका मज्जाप है जिममें भिस भिस स्त्रीय दिया है । अधिकार रसमागर में है । टाणांग गृधनी श्राव्य है जेटे दृग अमज्जाप है घटे देयलो ॥ इति ॥

१ घर्ममें मरण होइ तो दिन चारह का सूतक, उमका घरको माधु खाहार लेवे नहीं । उमका घरको बस्तु से पूजा होवे नहीं, एक निर्जायवर्णा में गोमूत्रमा

उद्देशा में कथ्यो है ।

२ कलेवर से भीटियों हो तो तीन दिन पूजा न होय । जन्म मरण वाला घर दुर्गच्छनिक कथा है ।

३ उसके घर की चीज वस्तु ग्याई हो तो देवदर्शन पडिकमणादिक तीन दिन न करे, नयकार नो ध्यान मन में करे जिसकी कोई बाधा नहीं ।

४ मृतकने अडक्या नहीं हो नोस्नान कीधा शुद्ध होय । दूसरा मनुष्य भी अडक्या हो तो मोलह प्रहर पडिकमणा न करे । जिसके घर जोमे वो चारह दिन पूजादिक न करे ।

जनमना तथा देशान्तरे मरण पासे या यनि मरे तो एक दिन का मृतक ।

आठ घरम नो पालक मरण पासे नो आठ दिन को मृतक ।

षट् विचार सार प्रकरण में कथ्यो है ।

गाथ बगैरह जानवर मरे नो कलेवर चारह लेजाय पाँचे एक दिनका मृतक ।

अन्य जानवरनो कलेवर फेरयो पाँचे असज्जाय नहीं । दाम दासा आपणी नोश्रायना हो उन के मरण हो तो तीन दिनका मृतक । जानना महिनाना गर्भ पहियों हो उनना दिनका मृतक ।

एह कल्प भाष्य में कहाँ है ।

धैशान्य यदि १, श्रायण यदि १, कार्तिक यदि १,
मार्गशीर यदि १, ए चार दिन में अमज्जाय जाणयी ।
ने मूत्र नी अमज्जाय तो प्रहर १२ तक जाणयी
की तो काल अमज्जाय पौरुष मूत्र में है उस
करना ।

इकवीस जातनो धोवण पाणी ।

हांदिनो १ कटांशानो २ चावलनो ३ तिलनो ४ तुस
५ जयनो ६ उमामग्नो ७ कांजनो ८ उहोपाणी ९
पाट नो १० घांपा नो ११ कवीठ नो १२ द्वाणनो १३
दिमनो १४ धोजोगनो १५ घांनो १६ आंवलानो १७
रनो १८ वीलनो १९ नारियल नो २० आंपर्ली नो २१
नका काल अलग अलग मूत्र परमाणे जानना ।

यावीस अभक्ष के नाम ।

१ मूत्र, २ पिप्ल, ३ विलक्षण, ४ कटुंवर ५ गुलर
ह पांच फल । मदिरा, ६ मांस, ७ ग्राह्य, ८ मषयन
यह चार महाविघई जानना । १० वस्त्र, ११ ओला,
२ कधी मिर्दा लृण, १३ रात्री भोजन, घांभी गोदी,
फजर कि ६ प्रहर पाद, साम कि ४ प्रहर पाद ।
वभक्ष हो जाना है । १४ वटुर्वाजफल, १५ घाचार,

१६ घांत्वष्टा, १७ त्रिदल, कमं गोरस उर्ही, छाद्द,
 दूध से अभक्ष होना है। १८ यंगग, १९ तुच्छकल,
 २० अजाणीया फल, २१ चलित्र रस—जिस वस्तु में
 खराय पदार्थ आता हो धान योग्य है। २२ अनंतकाय-
 तथा जहरीली चीज अफीम, सोमल आदि। यह बा-
 वीम अभक्ष है, श्रावक माधु को नहीं लेना चाहिये।

अथ तपागच्छीय राइप्रतिक्रमण विधि ।

१ प्रथम पूर्वली रीते सामायिक लेयुं, ते ज्यां सु-
 र्धा अणनवकार गणीए निर्दां सुर्धा सर्व विधि जाणवो ।
 पछी—

२ खमासमण दइ “इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-
 कुसमिण दुस्समिण ओहडुवाणि राइपायच्छित्त वि-
 सोहणत्थं काउस्सगं करं ? इच्छं, करेमि काउस्सगं,
 अन्नत्थउस्समिणं०” कही चार लोगस्स अधवा सोल
 नवकारनो काउस्सगं करी पारीने प्रगट लोगस्स कहेवो
 । पछी—

३ खमासमण दइ “ इच्छाकारेण संदिसह भग-
 वन् ! चैत्यवंदनं करं ? ” एम कही जगच्चिन्तामणिनुं
 धिन्यवंदनं जपवीपराय सुर्धा कहेवुं ।

अथपट्टिपत्तमामग ॥ १ ॥
 कम्मभूमिहि कम्मभूमिहि ॥
 पद्ममेवपणि ॥
 उदोम य मत्तरिसय ॥
 जिणयराण विहरंत लब्भइ ॥
 नवकोटिहि केवल्लिण ॥
 कोटि महस्म नव साहू गम्मइ ॥
 संपइ जिणवरा वीममुणि ॥
 विहुं कोटिहि वरनारा ॥
 ममहण कोटिमहस्म दुष्प ॥
 धुणिल्लइ निव चिहाराणि ॥२॥
 जयउ मारो जयउ मारो ॥
 गिम्ह सत्तुंजि उच्चिन पट्टु नेमिजिण ॥
 जयउ वार मघडरिमंडण ॥
 मुग्घच्छइ मुणिसुव्यय ॥
 मुहग्घिपास इहट्टुग्घिअंवेहण ॥
 अवरविंइहि नित्थयग ॥
 चिहुं दिमि विदिमि जं केवि ॥
 तीआणागयमंरइअ ॥
 वंइ जिण मत्तंवि ॥३॥
 सत्ताणवइ महम्म ॥

लक्ष्म्या छप्पन्न अट्टकोडीओ ॥

पत्तीस (य) यासिआइं ॥

तिअलोण नेइण वंदे ॥४॥

पनरस कोडी सपाइं ॥

कोडी पायाल लक्ष अडवत्ता ॥

छत्तीस सहस्र अमिआइं ॥

मासपयिंयाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देयानी गीने भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ण चारुने प्रत्येक एकेकुं
णमात्मण दद वांदयां । पछी

५ वे णमात्मण देयापूर्वक सज्जायनो आदेश
मार्गी , एक नयकार मर्गी, भगहेमरनी सज्जाय कह्यो

॥ अथ भगहेमरनी सज्जाय ॥

भगहेमर पाट्टपत्ती, अन्नपकूमारी अ रंजणकूमारी
। गिरिओ अणियाउमां, अउमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मैत्रज्ज भुत्तिभरो , यगरिगि नंदिमेण मोटगिगि ।
कयवत्तो अ मुत्तोमत्त , पुंइरिओ वेगि करवंट्ट ॥२॥
हत्त विहत्त मुत्तमण, मान्ण मत्तामात्त मात्तिभरो अ ।
मरो इत्तभरो , पत्तभरो अ जणभरो ॥ ३ ॥
उंक्कट्ट वंक्कत्ती , यणपुत्तमात्तो अरंजित्तुत्तमात्तो ।

ग्लो ह्लाहपुत्रो , विलाहपुत्रो अ पाहुमुर्णो ॥ ४ ॥
 अजगिरि अजररिअ, अजमुहूर्थी उदापगो मणगो ।
 कालपहरि संयो , पञ्जुदा मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
 रभयो विण्णुकुमारो , अहकुमारो ददण्णकारी अ ।
 मिज्जंस वृरगह अ , मिज्जंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
 एमाह महासन्ता , दिनु सुहं गुणगणेहि संजुत्ता ।
 जेमि नामन्नाहणे , पायपवेधा विलय जेनि ॥ ७ ॥
 तुलमा चंदनवाला , मंगोरमा मयगरेटा दमयन्ती ।
 नमणामुंदरी मया , नेदा भदा सुभदा य ॥ ८ ॥
 राहमई गिमिदत्ता , पडमायई अंजणा सिरीदेवी ।
 जिट्टमुजिट्ट मिगावटं , पभावटं चिह्णुणादेवी ॥ ९ ॥
 पंभी सुंदरी ऋषिणी , रेवटं कुन्ती मिवा जयन्ती य ।
 देवटं दोवटं पारिणी , कल्यावटं पुण्डवला य ॥ १० ॥
 पडमायटं प गंगी , गंधारी लक्ष्मणा सुसीमा य ।
 लंपुवटं मचभामा , ऋषिणि कण्ठट्ट महिसीओ ॥ ११ ॥
 जक्या य जक्यादिन्ना, भृञ्जा नह चैव भृञ्जदिन्ना य ।
 सेणा वेणा रेणा , भयणाओ धूलिभदरस ॥ १२ ॥
 इवाह महासईओ, जयंनि अरुलंकसीलकन्दिन्नाओ ।
 अज्जवि वज्जइजामि, जमपडहो तिहुअणे मयले ॥ १३ ॥
 पछी एक नयकार गणी , इच्छकार सुहराह० कही
 “ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! राइपडिफमणे ठा-

लकखा छप्पन्न अट्टकोडीओ ॥

पत्तीस (य) घासिआइं ॥

तिअलोण चेइए वंरे ॥४॥

पनरस कोडी सघाईं ॥

कोडी पायाल लकख अडवत्ता ॥

छत्तीस सहस्र असिआइं ॥

मासपयिंयाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पुर्याकित देवसीनी गीते भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ग चारणे प्रत्येक एकेक
एवमात्मण दृष्ट वांइवां । पछी

५ ने एवमात्मण देवापुत्रक सज्जायनो आदेश
मारी , एक नयकार गणी, भग्हेसरनी सज्जाय कहेपी

॥ अथ भग्हेसरनी सज्जाय ॥

भग्हेसर पाहुपरी, अजगजुमारा अ रंजणकुमारो
। तिरिओ अणिगाउत्तां, अडमुत्तां नागदत्तां अ ॥१॥
मेअत्त भुलिभरो , यगरगिनि नेदिमेण मोटगिरी ।
कयवरो अ मुत्तांमत्त , वुंइरिओ पेति करवंइ ॥२॥
इइ विइइ मुत्तांमत्त . माल सज्जायत्त मायि नरो अ ।
मरो इइइभरो . पत्तयरो अ जतनरो ॥ ३ ॥
उंइवइ वइपत्ता . गणकुमारो अरनिमुत्ताया ।

लो इलाहपुत्रो , विलाहपुत्रो ज पाहुमुणी ॥ ४ ॥
 मज्जगिरि अज्जरविज्ज , अज्जसुहन्धी उदायगो मणगो ।
 जलपग्गि संघो , पज्जुया मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
 भयो विण्णुपुत्तारो , अहकुमारो ददण्हारी अ ।
 वेल्लंभ वृग्गह अ , सिद्धंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
 म्माह महाग्गला , दिनु मुं गुणग्गणेहि संजुत्ता ।
 वसिं नामग्गहणे , पायपयंथा विलाय जंनि ॥ ७ ॥
 कुलमा संद्वनपाला , मणोरमा मयण्णहेहा दमयंती ।
 मयण्णसुंदरी मंग्या , वेदा भद्रा सुभद्रा य ॥ ८ ॥
 म्माह मिसिट्ता , पडमावट् अंजला सिरीदेवी ।
 जिट्ठसुजिट्ठ मिगावट् , पभावट् जिट्ठणादेशो ॥ ९ ॥
 संभो सुंदरी वपिणी , वेवट् कुंती मिया जयंती य ।
 वट्ठं दावट् पाग्गिणी , कल्लावट् पुक्कण्णला य ॥ १० ॥
 पडमावट् पगोरी , संभारी लक्खमणा सुमीमा य ।
 लंघुवट् मयभामा , रूपिणि कण्हट्ठ महिसीअं ॥ ११ ॥
 लक्खवा प जग्गवटिणा , भृग्गा नह नेव भृग्गदिग्गा य ।
 वेणा वेणा रेणा , भग्गणाअं भृत्तिभदस्स ॥ १२ ॥
 व्वाह महासट्ठंओ , जयंनि अकलंकसीलकन्दिग्गाओ ।
 अज्जपि घज्जइजग्गिं , जसपट्ठो तिट्ठअणे मयले ॥ १३ ॥
 पडी एक नवकार गणी , इच्छकार सुहराह० फही
 .. इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! राहपटिणमणे ठा-

लक्ष्म्या छप्पन्न अट्टकोडीओ ॥

पत्तीस (घ) वासिआइं ॥

तिअलोण चेइए वंइ ॥४॥

पनरस कोडी सघाईं ॥

कोडी थायाल लक्ख अडवला ॥

छत्तीस सहस्र असिआइं ॥

मासपयिंथाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवमीनी रीते भगवान्, आचार्ये,
उपाध्याय अने सर्वसाधु-ण चारुने प्रत्येक एकेकुं
गमाममगा दइ वांदथां । पछी

५ ने गमाममगा देवापूर्वक सज्जापनी आदेश
मार्गी , एक नयकार मर्गी, भरहेसरनी सज्जाप कोर्था

॥ अथ भेहेसरनी सज्जाप ॥

भरहेसर पाहुयथा, अभयकुमारो अ रंजणकुमारो
। गिरिओ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥१॥
मेअअ भुलिभरो . पपरिमि नंदिरेण सीरुगिरी ।
कययथा अ मुत्तमल , वृष्टिओ पेमि करवंट ॥२॥
हाइ विहाइ मुत्तमण . माल मशामल गालिभरो अ ।
अरो दमभरो . पदयथो अ जमभरो ॥ ३ ॥
उक्कट्ट वरपथा . गणमुत्तमाथो अर्धनिमुत्तमाथो ।

गो इलाहपुत्रां , विलाहपुत्रां अ पाहुमुर्णा ॥ ४ ॥
 अत्रिगिरि अत्रविअ, अत्रसुहृन्धी उदायगो मणगो ।
 अत्रपाहृति मंथो , पञ्जुता मूलदेवो अ ॥ ५ ॥
 अथो विपहृकुमारो , अत्रकुमारो ददप्यहारी अ ।
 अत्रम कूरगह अ . मित्रंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
 अत्र मलामला , दिनु मुहं गुणगणेहि मंजुता ।
 अत्रि नामनाहणे , पावपंथा विलय जंति ॥ ७ ॥
 अत्रमा चंदनपाला , मगोरमा मयणरेहा दमपंती ।
 अत्रमांडुर्ग मंथा , नंदा गहा सुभहा य ॥ ८ ॥
 अत्रमई गिमिहता , पटमावटं अंजणा सिरीर्षी ।
 अत्रमुजिहृ मिगावटं , पभावटं निहृगादेशी ॥ ९ ॥
 अत्रि मंडुरी म्पिणी , रंथट कुंमी मिया जपंती य ।
 अत्रि दौपटं पारिणी , कलावटं पुष्कला य ॥ १० ॥
 अत्रमावटं प गोरी , गंधारी लफवमणा सुमीमा य ।
 अत्रवुटं मणभामा , रूपिणि कणट्ट महिमीअो ॥ ११ ॥
 अत्रवा य जरगदिना, भृष्मा मह चैव भृष्मदिना य ।
 अत्रिणा वेणा रेणा , भर्णाअो धृतिभदरस ॥ १२ ॥
 अत्रवाह महासईअो, जपंति अरुलोकमीलकलिष्माअो ।
 अत्रयि वल्लइजामि, जसपट्टो तिहृअगो मयले ॥ १३ ॥
 पछी एक नयकार गणी , इच्छकार सुहराइ० कही
 इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! राइपट्टिमणे ठा-

लक्ष्म्या छप्पन्न अट्टकोटीओ ॥

पत्तीस (प) पासिआई ॥

तिअलोए नेइए वंरे ॥४॥

पनरस कोटी स्याटं ॥

कोटी पायाल लक्ष अडवत्ता ॥

छत्तीस सहस्र अमिआटं ॥

सामयपिंयाइं पणमामि ॥५॥ इति

४ पूर्वोक्त देवमानी गीते भगवान्, आचार्य,
उपाध्याय अने सर्वमाधु-ए चारुने प्रत्येक एकैकुं
त्यमाममण दड वांदयां । पडी

५ ने त्यमाममण देयापूर्वक मज्ञायतो आदेश
मानी , एक नयकार मानी, भग्देमानी मज्ञाय कहेपी

॥ अथ भग्देमानी मज्ञाय ॥

भग्देमर पाहुपरी, अन्नपट्टमागे अरंत्तापुमागे
। मिरिओ अणियाटुओ, अडमुत्तो नामदभाय ॥१॥

मसस्र मुत्तिवरो वपग्मिनि नेदिमेल मीहमिनि ।

वपयरो अ मृत्तामए , पुंइमिओ नेमि करवृ ॥२॥

इए विरइ मृत्तामए माल मृत्तामए मालि नरो अ ।

मरो दसस्रमरा वपयरो अ वपयरो ॥ ३ ॥

ईवृवृ वपयरो मपमृत्तामगे अरंत्तापुमागे ।

धरतो इलाहपुत्रो , विलाहपुत्रो अ वाहमुत्रो ॥ ४ ॥
 अत्रगिरि अत्ररविप्रज, अत्रमुत्तमी उदायगो मणगो ।
 काण्यपद्वि संघो , पञ्जुण मुन्देवो अ ॥ ५ ॥
 पभरो दिण्णुत्तमागो , अहकुमारो दृष्ट्यहारी अ ।
 मिश्रंग करगद अ , मिश्रंभव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥
 गमाह मलासभा , दिनु सुदं गुणगणेति संजुता ।
 जेमि नामज्जाणो , पायपंधा विलय अंनि ॥ ७ ॥
 मूलमा चंद्रनपाला , मणोरमा मणगरेहा दमपंती ।
 नमणांमुद्री संघा , नदा भदा मुभदा य ॥ ८ ॥
 गहमई गिरिदत्ता , पटमारई अंजना तिरिदेवी ।
 जिह्मुजिह् मिगारई , पभावरई निह्णारदेवी ॥ ९ ॥
 वंभी मुदुरां रविपती , वेपट कुंती मिश्र जपंती य ।
 देवई दोवरई धारिणी , कलापरई पुष्पतला य ॥ १० ॥
 पडमारई य गंगा , गंधारी लखतमणा सुमीमा य ।
 लंघुवरई वधभामा , रूपिणि वण्टट महिसीअो ॥ ११ ॥
 जयत्या य जयवदिता , भूष्मा मत चैव भूष्मदिता य ।
 रेणा वेणा वेदा , अयणीअो भून्निभदस्य ॥ १२ ॥
 इयाह महावरईअो , जपंमि अरलंकर्मीलकलिष्माअो ।
 अत्रपि अत्रइ जाति, जमपट्टो निह्णगो मणले ॥ १३ ॥

पछो पक्ष नषकार गणी , इच्छकार सुदुराइ० कही

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! गहपट्टिमणे ठा-

उं ? ” एम कर्त्ता, जमगो हाथ उपधि ऊपर धारि,
 “ इच्छं सद्यसवि राइय द्वाचिनिय० ” कर्त्ता। पत्नी-

२ नमोत्थुगं, करेमि भंने, इच्छामि ठामि काउस्सगो
 जो मे राइओ० तम्म उत्तरी० कर्त्ता, एक लोंगस्स अ-
 थया चार नयकारनो काउस्सगं करी, प्रगट लोंगस्स
 कलीने सच्चलोए अरिहंन चेइयागं० कर्त्ता एक लोंगस्स
 अथया चार नयकारनो काउस्सगं करयो ॥ पत्नी

३ पुक्खलरवरदी० सुअम्म०, वंदण० कर्त्ता अनि-
 चारनां आट माथा अथया माथा न आवडे सो आठ
 नयकारनो काउस्सगं करी, पार्ग मिद्धाणं बुद्धाणं०
 कर्त्ता वेसाने, प्रीजा आयटपकनां मुहपत्ति पटिलेही,
 वाइणां वे देयां ॥ पत्नी

८ उभा भइ “ इच्छाकारेण मीदिसह भगवत !
 राइपे आलोउं? इच्छं आलोणमि जोमे राइओं अइआगे
 क.ओ० ” कर्त्ता मात म्हाणनो पाट कर्त्ता, अणार वावणा-
 नक आलोउ, मध्यमसवि राइपे० सो पाट कहेयो ॥ पत्नी

६ वेसाने जमगो दीपण उभा राथा एक नयराट
 मर्गा, करेमि भंने० इच्छामि पटियमिडे० कर्त्ता वेदि-
 लाम्पुअ म्पुगं कर्त्ता वे वाइणां देवां, पत्नी अणुत्तिमाए
 अरिहंन राइपे० पार्धाने जमो वे वाइणां देवा ॥ पत्नी

७० उभा भइने, आपत्तिप उवाजाण० करेमि भंने०

दृच्छामि तामि काउस्सगं जो मे राइओ० कही, नरस
उत्तरी० कही, तप विनयगीनो या चार लोगस अथवा
मोल नवकारनो काउस्सग करवो. ते पारिने प्रगट
लोगस कही, हद्दा आषट्ठयर्नी सुहपत्ति पहिलेहीने
यांद्दणां वे देवां ॥

११ सकल तीर्थवंदन कहीने यथाशक्ति पच-
कम्याण करवुं ॥

॥ अथ तीर्थवंदना ॥

सकल तीर्थ वंदुं करजोए, जिनवर नामे मंगल
कोए । पहिले स्वर्गे लाग्य पचास, जिनवर पंच्य नमुं
निशदीम ॥ १ ॥ दोजे लाग्य अष्टाविंश कथां, दोजे
पार लाग्य सहायां । चोथे स्वर्गे अष्ट लाग्य धार, पांचमे
वंदुं लाग्य ज पार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गे महस पचाम, मानने
पालिश महस प्रामाद् । आठमे स्वर्गे छ हजार, नवदहा
मे वंदुं जत पार ॥ ३ ॥ अग्यार पारमे प्रगडो मर, नव
द्वेयके प्रणमे अठार । पांच अनुत्तर मेरे मर, जिन
चौराशी अधिकत वर्ला ॥ ४ ॥ महस मरनुं केवळ
मार, जिनवर भुवन तगो अधिकार । जिनवे मरनुं
विस्तार, पचाम उंपां पहिले र भार ॥ ५ ॥
परिमाण, सभामहित एक पंचदे
पान कोए संभाल, लाग्य ॥

१२ " सामायिक, चतुर्विंशत्यो, वंदनक, पट्टिकः
मगा, काउस्सगा, पचस्साण कयुं लेजी." एम घोर्त्ती
ने छ आयदपरु संभारयां ॥ तैमां

१३ पचस्साण कयुं हांय तो ' कयुं लेजी ' धायुं
होय तो ' धायुं लेजी ' कहेयुं ॥ पत्ती

१४ " इच्छामो अणुमट्टि नमो रमाममगाणं "
कती नमोऽहं० कतीण ॥ पत्ती

१५ विजाललोचन, नमोऽणुं, अरिहंतनेहपाणं,
कती एक नयकारनो काउस्सगा कती, पत्ती नमोऽहं०
कती कट्टाणकंदनी प्रथम भोय कहेवी ॥ पत्ती

१६ लोमम्म, पुपस्वरघरदी, सिट्ठाणं पुट्ठाणं, कती
अनुभवे चार भोयो कतीण तीण, निहां सुपी मर्ष
कहेयुं ॥ पत्ती

१७ नमोऽणुं कती भगवान् आदि चाने चार
ममासमणे पांदया ॥ पत्ती

१८ जमणां लाभ उपधि उपरभावा "अट्टाहजेसु"
कहेयुं । पत्ती

॥ अथ अट्टाहजेसु मुनिवंदन ॥

अट्टाहजेसु दीपममुंसेसु, पतरमसुभम्मभर्मासु ।
जावंत केवि माह, रपहरण सुत्त पट्टिगात्थारा । पंच-

बह्व्ययधारा, अट्टारससहस्रसीलंगधारा । अक्खया-
पारचरित्ता, ते मन्वे मिरसा मणसा मन्थएण वंदामि
॥ इति ॥

२९ ईशानगृणनी मन्मुख श्रीमीमंघर स्वामीतुं
चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीरराय, काउस्मग्ग, थोय
पर्यंत कर्हीए तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी

३० स्वमासमण दड श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन,
स्तवन, जयवीरराय, काउस्मग्ग, थोयपर्यंत कर्हीए
तिहां सुधी सर्व कहेवुं ॥ पछी

३१ मामागिक पारवानः विधिनी रीते मामागिक
पारवा सुधी सर्व विधि करवी ॥

इति राउप्रतिक्रमणविधि ममास ॥

१९२०

नपागच्छीय देवसिक प्रतिक्रमण विधि ।

इसमें स्तवन तक की विधि परापर एक ही है ।
पीठे की विधि में जो फेरफार है यह नीचे मुजब—

व्यक्तक कर्ही, पूर्वदि रीते पार स्वमासमण पूर्वक
भगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु, ए पार ने
यांदा जमणो हाथ उपनि ऊपर भाषा "अद्वाइमंछु"
मुनिचन्दन कहेवुं

॥ अथ वरकनक ॥

शरफनकृशसविदुम-मरकतचनमभिभं विगतमोहं ।
मसनिगने जिनानां सर्वामरपूजितं वदे ॥ १ ॥

॥ अथ अड्हाइजेसु मुनिवन्दन ॥

अड्हाइजेसु दीपसमुहेसु, पद्मससु कम्ममूर्मासु ।
जावंत केवि माह, इयदण गुच्छ, पट्टिमगहधरं ।

पंचमहव्यथाग, अट्टारम्भमरमर्मल्लंगभारं । अकल्पगा-
त्पारवन्ति, तं मुञ्चे तिसमा मंगमा मत्तरेण वंदामि ॥

इत्यमाममग दह, इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन ! देवमिय पापच्छित्त विमोहणत्थं क्खाममग

करं ? इच्छं, " देवमिय पापच्छित्त विमोहणत्थं
करंमि-युत्तसमं " अदत्थ-कम्ममिणो क्खी मर

लोत्तमं अथो म्भोत्त नपकारो काउत्तमग करयो, ते
त्पारी म्भोत्तलोत्तम कराने पदी

इत्थेवो म्भोत्तममग दह, " इच्छाकारेण संदिसह
भगवन ! अज्जाप संदिसाहुं ? इच्छं " क्खी, पालु

त्तमाममग इह " इच्छाकारेण संदिसह भगवन !
सजाग, म्भुत्त इच्छं " एम अज्जापनो आदेश भागी,

एक नवकार गणीत्तज्जाप क्खेवी ॥ पदी
इच्छं एक नवकार गणीत्तमाम्भुत्तु

कारेण संदिसह भगवन् ! दुःखखकस्यञ्चो कम्मकस्यञ्चो
 निमित्तं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं दुःखखकस्यञ्चो कम्म-
 कस्यञ्चो निमित्तं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थं ” कही
 संपूर्ण चार लोगस्स अथवा सोलह नवकारनो काउ-
 स्सग्ग करवो. पछी जेने लघुशांति कहेवी होय एवो
 एक घडेरो अथवा पोताने शांति कहेवानी होय तो
 पोतेज काउस्सग्ग पारोने “ नमोऽर्हत् ” कही लघु-
 शांति कहीने प्रगट लोगस्स कहेवो ॥ पछी

५ हरिपावही अने तस्स उत्तरी कही, एक लोगस्स
 अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स
 कहेवो ॥ पछी

६ चउक्कसाय कही, नमोत्थुणं कही, जावंति वेइ-
 आइं० कही खमासमण दइ, जावंत केवि साहु० कही
 उवसग्गहरं कहेवुं, अने पछी हाथ जोडी, मस्तके राखी,
 जयवीपराय कही खमासमण वेइ, मुहपति पडिलेहवी

७ खमासमण दइ “ इच्छाकारेण संदिसह भग-
 वन् ! सामायिक पाकं ? ” एम कहेवुं. आ स्थान के
 जो साक्षात् गुरु विराजमान होय तो ते कहे के “ पु-
 षोधि कायव्वो ” ते घारे शिष्य “ यथाशक्ति ” कही
 करी खमासमण दइ “ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !
 सामायिक पार्युं ” कहे, तेषारे गुरु कहे “ आयारो न

मोक्षम्भो” ते सांभली शिष्य “तहसि” कहे ॥ पद्वी
 ८ जमणो हाथ बरबला अधवा कटासणा उपर
 थापी, एक नवकार गणी “ सामाह्यवपमुक्तो ” कही
 ने थापेली थापना होय तो तेनी सामो जमणो हाथ
 चतो राखी एक नवकार गणी उठे ॥ इति देवसी प्र-
 तियामणनो विधि सामान्यपणे कळो, पाकी अंतर्विधि
 बंदरार्थ समजयो ॥

दीपमालाकी स्तुति ।

सिद्धार्थ प्राप्ता, जगत् विख्यात, त्रिशला देवी
 माय । तिहां जगगुरु जनम्पा, मय दुःख विरम्पा,
 महावीर जिनराय ॥ प्रभु लेइ दीक्षा, करहिन शिक्षा,
 देइ संवत्सरी दान । पट्टु कर्म खपेवा, शिष्यसुखलेशा,
 कीर्षो तप शुभ ध्यान ॥१॥ बरकेशळ पामी, अंतरजामी,
 यदि कार्णी शुभदीप्त । अमायम जाते, पीठ्ठी राते,
 मुगति गया जगदीस ॥ बलि गौतमगणधर, मोहटा
 मुनिवर, पाम्या पंचमजान । थया तन्व प्रकाशी, शील
 चिन्ताशी, पृहता मुमति निधान ॥ २ ॥ सुरपति संव-
 रिया, रत्न उद्धरिया, रात थई तिहां काली । जिन
 दिवा किधा, कारज सिधा, निगा थई उजवाली ॥
 सह लांके हरणी, निजरे निरणी, परथ कियो दीवाली ।

यस्मिन् भोजन भक्ते, निज निज मक्ते, जामे सेव सुहागे-
 ॥३॥ सिद्धायिका देवा, विघन हनेवा, चांद्रिन त्रेतिर-
 धारी कर संघने जाता, जिम जगमाता, गृह्या ज-
 क्त अपारी-॥ जिने गुण दम गावे, शिवसुख पावे,
 सुणज्यो भविजन प्राणी । जिणचंद्र जर्तासर, महासु-
 नीसरु जंपे पृह्या वागी ॥४॥ इति ॥

श्रीदेवचंद्रजी स्नात्रपूजा

प्रथम हाथमे कुसुमांजलि लेटेने नेमोडने कही पटे ।

दोहा— 'चउतीसे अनिशय जुआं, वचनानिमय जुत ।
 सांत्पस्मेसर देखि भवि, सिधामण संपत्त ॥१॥

दोहा— 'सिधामण बेठा जग भाण, देखि भविकजन ।
 गुणमणि भवाण । जे दाटे तुझ निरमल नाण, लहिये
 परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि
 जिणंदा, नारा चरकमल (सेवे चोमट इंदा) चांवीश
 पूजागे चोवीश सोभीगी चोवीश चैरागी, चांवीश जि

गंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥४॥

(एम कही प्रमुना मंत्रोपे पूजा करिये)

गाथा— सम्महिद्री देस जप, साहु साहुणी
सार । आचारिज उषज्जाय मुणि, जो निम्मल आ-
धार ॥५॥

दाल— चउविह संघे जे मन धार्यु, मांश तणु
कारण निरधार्यु । विविह कुसुम धर जानि गहेवी, तसु
चरणे प्रणमन ठवेवी ॥१॥ कुसुमांजलि मेन्ने वीरजि-
गंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥५॥

(एम कही प्रमुने मन्नेके पूजा करिये । ॥ इनि पांखडी
गाथा ॥

॥ वस्तुछंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, न-
मिय मनरंग । कल्लाणक विहि संठविय करिमुधम्मसु-
पघिस सुंदर । सय इगसित्तरि नित्थंकर, इगसमय वि-
विहरंति महियल । चवग समय इगवीश जिण, जन्म स-
मय इगवीश । भत्तिय भावे पजिया, करो मंघ सुजगीस
॥१॥

॥ एकदिन अचिरा हुलरावनी ॥ १ ॥ चाल

॥ भव तीजे समकिण गुण रम्या , जिनभक्ति
प्रमुख गुण परिणम्या । तजी इन्द्रिय सुख आशंसना,
करी धानक वीशनी सेवना ॥१॥ अति रागप्रजस

प्रभाषना, मनभाषना एहवी भाषता । सवि जीवकलं
शास्त्रेन रसी , एसी भवदया मन उद्धसी ॥२॥ लही
परिणाम एह्युं भलुं , निपजावी जिनपद निरमलुं ।
आउ एधं विचे एक भव करी , भ्रटा संवेग ते धिर
धरी ॥३॥ तिहां षडिप लहे नरभव उदार , भरते
तिम ऐरवसेज सार , महाविदेह विजय परभान । म-
ध्यखंडे अषतरे जिन निधान ॥४॥

(हाल) — पुन्ये सुपनाहे देखै, मनमां हरप विशेषै ।
गजवर उच्चल सुन्दर , निरमल वृषभ मनोहर ॥१॥
निरभय केजरी सिंह , लखमी अतिहि अपीह ।
अनुपम फूलनी माला , निरमल शशी सुकुमाला
॥२॥ तेज तरणि अति दीपै, इन्द्रधजा जगजीपै । पूरण
कलस पंदूर, पद्मसरोषर पुर ॥३॥ इग्यारमें रयणापर,
देखै माताजी गुणसापर । बार में सुवन विमान, तेरमें
रत्न निधान ॥४॥ अगनि शिखा निरधुम , देखै मा-
ताजी अनोपम । हरखी राव ने भापै , राजा अरथ
प्रकासै ॥५॥ जगपति जिनवर सुखवर , होस्यै पुत्र म-
नोहर । इन्द्रादिक जसु नमसै , सकल मनोरथ कल-
सै ॥६॥ (प्रातः) पुन्य उदय ६ , उपना जिन नाह । माता
तय रयणी सभं , देखि सुपन हरमंत जागीय । सुपन
कही निज बंतने , सुपन अरथ सांभलो सोभागीय ।

त्रिभुवन तिलक महागुणां , हंस्य पुत्र निधान । इंद्रा
दिक जसु पाय नमी , करसं सिद्धिं विधाने ॥१०॥

(हाल) — चन्द्रा उद्दालान् । मोहमपनि आसन
कंपीयो, देई अंबधे मन आणं दीयो । मुजं आत्मनिरम
करण काज , भवजल तारण प्रगष्टो जिहोज ॥११॥ भव
अटवीपारम सन्धवाह , केवलनणिहै गुण अगोह ।
शिव साधन गुणअंकुर जह , कारण उलझ्यो आसोदि
मेह ॥ २ ॥ हरस्य विक्रमे, तय होमराय, चलयदिकमा
निज तनुं नमाय । सिद्धासणेगी उड्यो सुरिद , प्रण
मनो जिन आनन्द कन्द ॥३॥ स्वर्ग अडे पय महिमा
आक्रि तन्ध, करी अंजली प्रणमिअ मन्थ मन्थ । मुख
भापे ए क्षण आज सार ; निघेलीय पहु दांटा उदार
॥ ४ ॥ रे रे निसुणा सुग्लोय देव, विपयनिज तापित
तनुं समेव । तसु शान्तिरुगण जलधर संमान, मिथ्या
विष चरण गरुडवानजा । तोमे देव जगनारण सम
त्थ, प्रगष्टो तसु प्रणमो ह्यो समन्थ । इमं जयी शोक
भव करेवि , नव देव देव हरवे मुणेवि ॥५॥ गाव
तय रंभा गीतगान, सुग्लोक हुयो मंगल निधान । नर
वेथे आरज संमडामन जिनरोजे चथे सुर हरे धाम
॥६॥ पिता माता धरे उच्छेव अलेख, जिनशामेन मंगल
अनि विदोष । सुगपनि देयादिक हरेसामे , संगत

लता धरै । सुभलगनेंजी ज्योनिसचक्र ते संघर ॥ जिन
जनम्याजी तिन अवसर माता घरै । निगा अवसरजी
इंद्रासन पण धरहरे ॥ (शुटक) धरहरे आसन इंद्र चिंत
कौन अवसर ए धन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणा
अतिहि आणंद ऊपन्यो ॥ निज सिद्ध संपति हेतु जिन-
वर जाणि भगनें उमह्यो । विकसन वदन प्रमोद
-वधनै देवनायक गहगह्यो ॥ १ ॥

(ढाल) तव सुरपतिजी घंटानाद कराव ए । सुर-
लोके जी घोपणा एह दिवरावण । नरक्षेत्रेंजी जिनवर
जनम ह्यो अछे । तसु भगनें जी सुरपति मंदिर गिरि
गच्छे ॥ (शुटक) गच्छेति मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन
जिन तणो । जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो
सधि सुरगणो ॥ तुम सुद्ध समकिन धार्य निरमल देवाधि-
देव निहालनां । आपणा पानिक सर्थ जास्ये नाथ
चरण पखालतां ॥२॥

(ढाल) इम सांभलीजी सुरवर कोडि पहु मि-
ली, जिन वंदनजी मंदरगिरि साहमी चल्यो । सांभ-
पतिजी जिन जननी घर आविया, जिनमाताजी पांटी
स्यामि वधाविया ॥ (शुटक) वधाविया जिनवर हर्ष
पहल धन्य हं कृतपुन्य ए, अलोकपनायक देव दीटो
मुज समो ह्यो अन्य ए । हे जाण जननी पुत्र तुल्यो

मेरु मज्जन पर कती . उच्छ्रंभ तुल्यै धलिप भापिस
 आत्मा पुन्यं भरी ॥ ३ ॥

(हाल) सुरनायकजी जिन निज कर कमलें ठध्या,
 पांच रूपें जी अनिसप मदिमायें स्तध्या । नाटक वि-
 धिजी मय पत्तौम आगत पहें, सुर कोंडिजी जिन
 दरमणें उमहें, (बुटक) सुर कोंडाकोंडी नाचनी धलि
 नाथे नृपि गुण गावनी , अपहरा कोंडी हाथ जोडी
 हाथ भाय दिव्यावनी । जयो जयो नृ जिनराज जगगुरु
 लम दे आसीमण, अहं प्राण शरण आभार जीवन
 एक ते जगदीश ए ॥ ४॥

(हाल) सुरगिरिवर जी पांडुक वनमें सिंह दि-
 र, गिरिमिल परजी सिंहासन सासय बसै । तिहां
 आर्गाजी जभें जिन खोले प्रणा, खोसटें जी तिहां
 सुरपति आर्या रणा ॥ (बुटक) आविषा सुरपति सर्व
 भगने कलज भ्रेणि यगाय ए, सिद्धार्थपमुहा सार्थजा-
 यधि सर्व यस्तु अणाय ए । अच्युतपति तिहां हकम
 कानो देव कोंडा कोंडिनें, जिन मज्जनारथ नीर न्यायो
 सर्वे सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥

सर्वे स्नात्रिषा जनका कलश हाथमें सेकर लड़ा रहे, श्री
 जने मुक्ता मुगमें परे—

(हाल) शांतिनें कारणे इष्ट कलजा भरै, ए

'शाल' ॥ आत्म साधन रसी देव कोडी हसी, उद्धसीने
 धसी खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पमु-
 हानई तीर्थजल अमल लेया भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति
 अड कलश करि सहसअटोतरा, ह्यत्र चामर सिंहासंगे
 सुभतरा । उपगरण पुष्कचंगेरि पमुहासवे, आगमें
 भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिय करी
 कलश करि देवता, गावता भावना धर्म उन्नतिरता ।
 तिरिय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अह् सगति
 सुचि भगति इम भावना ॥ ३ ॥ ममकिन धीज निज
 आत्म आरापिना, कलश पाणीमिमें भक्तिजल सी-
 चता । मेरुसिंहरो वर सर्व आद्या वही, शक्रउच्छंग
 जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

(गाथा) हेहो देवा = अगाई काला अदिहपुष्पां,
 मिलायनारणो । तिलाययधु, मिच्छत्तमाह विद्धमणो ।
 अगाई निशा विणामणो, देवाहि देवा दिठयो =
 दिश्य कामेहि ॥ १ ॥

(हाल नेहज) एम पभंगमि यग भुवन जाइसरा,
 देव चेमागिया भमि धइमायरा । केवि कल्पटिया केवि
 मिष्ठाणुगा, केई यरमण यणणेण अइउच्छगा ॥ २ ॥

(यम्मु) मग्ग अरुपुए = इन्द्र आदेश, कग्गोई
 मग्ग देवगण । लेह कग्ग आदेशेण पार्माय, अदभुम एव

सत्य जग । कथय एह पुराणि माभीय, इंद्र कर्ह जग-
 नारणो । पायग जस्यपरमेम । नायक टायक धम्मनिदि,
 कर्णय लसु अविपेस ॥ १ ॥

(हाल ६ मी) तीर्थ कमल पर उदक भरीने, पुप
 कर मगर आर्थ. ए साल ॥ पूर्ण कलश सुवि उदकनी
 भाग, जिनवर धीम नामें । आत्म निरमल भाव
 करेता, यथेन शुभ परिणामें । अच्युतादिक सुरपनि
 मजन, लोकापाल लोकांत । सामानिक इंद्राणां समुदा
 हस अविपेक करत ॥ १ ॥ पृ० ॥ गाथा ॥ तय ईसान
 मुरिदो, मयं पभजेह करि ह् सुपमाधो । नुय अंके
 मटनाहो, मियगमिभं आत्र अप्पेह् ॥ १ ॥ माम्केदो
 पभगाहं, माहमीय वन्दुलंमि पहलाहो । आणाह् येनेण
 निणह् होउ कयन्धाभो ॥ २ ॥

इत्येव तस्य नैऋत्यादिनां नामानि इति कथयति तस्य
 ११. नाथ मुनिग मने ३२

(हाल) मोक्षम सुरपनि सुवभ रूप करि, गह्वरा
 कां प्रभु धर्मो । करिय विलक्षण पुण्य, साल उधि पर
 आभरण असेग ॥ सो० ॥ १ ॥ तय सुरयर पह
 जय जय रय वर, नाचं धरी आसेह् । मोक्ष मारग
 माग्ध पनि पाग्धो, भांजिसु हिय भयकेह् ॥ सो० ॥
 ॥ २ ॥ कोटिगर्भान् मोक्ष उथरी, याजेन धरनाहं ।

सुरपति संघ अमर श्रीप्रभुने, जननीने सुप्रसादे ॥सो०
 ॥ ३ ॥ आणी थापै एम पधंपे अह्म निसनरिया आज,
 पुत्र तुह्यारो धर्णाय हमारो, तारण तरण जहाज ।
 ॥ सो० ॥ ४ ॥ मात जनन करि राखिज्यो पढ़नें, तुह्य
 मृत अह्म आधार । मूरपति भगति सहित नंदिमर,
 कर जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कल्प
 गया सुवि निर्जर, कहितां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल
 ज्ञान कल्पणक इच्छा चित्त मकार ॥सो० ६ ॥ खरतर
 गच्छ जिन आणारंगी, राजमागर उवज्जाय । ज्ञान
 धरम दीपचंद सुपाठक, मुगुरु नयो सुप्रसाय ॥सो० ७ ॥
 देवचंद जिन भगतें गायो, जनम महोच्छव छंद । योभ
 योज अंकुरो उद्दस्यो, संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥
 (हाल)इम पूजा भगतें करो, आनम हित काज ।
 मजिय विभाव निज भावना, रमनां शिवराजां ॥ १ ॥
 काल अनंत ते जे हुआ, होम्ये जेह जिणंद । संपद
 सोमंवर प्रभु, केवल नाग दिगंद ॥ २ ॥ २ ॥ जनम म-
 होच्छव इणि वरै, आवरु रुचियंत । विरि जिन प्रतिमा
 मणो, अनुमोदन ग्यंत ॥ ३ ॥ ३ ॥ देवचंद जिन पूजना,
 करमा भवपार । जिन पटिमा जिन मारग्या, कही
 मृत्र मजार ॥ इम० ॥ ४ ॥

॥ इति इनामपना विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टप्रकारां पूजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विषण्णवेदनभावनभासकं, जगति जन्तुमहोदयका-
शनं । जिनवर बहूमानजर्णोचनः, शृनिमनः मनषामि
विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अतन्तानंतज्ञान-
दाकारे जन्म जगाम्भु निवारणाय, श्रीमद्भिनेन्द्राय
जलं यजामहे श्याहा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा में मंत्र के अनुसार बन्धु-पुत्र होने हे तथा
उपनि, अन्न, वायु, म, मकर, क, विष्णु, श्री, इत्यादि से
कल्पित जल का विराज होना है

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमाहतिमिभ्रविनाशनं, परमशीतलभावयुक्तं
जिर्भ । विनयशुंभुंमनंदनदर्शनं, सहजनन्वविकाशकृ-
तेष्ये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म
जग० निषा० श्रीमद्भिने० चंदनं यजामहे श्याहा ॥
इति चन्दन पूजा ॥ ६६ परम चन्दन चडावे ॥

इस चंदन पूजा में चंदन काष्ठ में म्बित अजान तथा माहृण्य
अंधकार का नाश होता है, इसमें ज्ञान और ममता उत्पन्न होती
है तथा देव पुत्र और धर्म में विनय और भक्ति का विकास होता
है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विरुचनिर्मलशुद्धमनोरम-विंशद्वन्द्वनभावमसु-
 द्रवैः । सुपणिगामप्रमृत्तचर्मनैर्धैः, परमनन्यमपं द्वियजा-
 म्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
 ॥ इति पुष्पपूजा ॥ एक कदम्ब पत्र चटपे ॥

इस पुष्पपूजा में मन कण्ठमें मङ्गापत्र लामुन होती है, दिन
 की म्बिधना होकर शुभ पणिगामा का उदय होता है तथा यथार्थ
 मन्त्र का ध्यान होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
 अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहृषिनः
 ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
 ॥ इति धूप पूजा ॥ एक कदम्ब पत्र मगरवनी लेंये ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मसुधूपन का दाहक नि-
 मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जल परि-
 षादन होकर कर्मसंवन छूटता जाना है तथा अंतःकरण में गमंडे-
 षादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

अधिकनिर्मलसोमधिकाराङ्गं, जिनगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरामविशुद्धममन्त्रिनं, दधतु भाषवि-
काशगृहेजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजा-
महे श्याता ॥ इति दीपपूजा ॥ मन्त्रदीपक चतुर्वे ॥

इस दीपपूजा में मन्त्रजनो के हस्त में निम्न सोमका रिकारा
लभ है, उमक, प्रभात में मन्त्रगुणो के उपाजिन में मन्त्र उपनन
होता है मन्त्र जने = मन्त्रगुणो के उपाजिन के द्वारा मन्त्रय माति-
मन्त्र का पात्र बनता है ।

॥अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

रुक्लमद्गलकेलिनिकेतनं, परममद्गलभावमयं
जिनं । अयति भयजना इति द्दीपन, दधतु नाथ
पुत्रोक्षममन्त्रिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
यजामहे श्याता ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अथोऽथानन
चतुर्वे ॥

इस अक्षत पूजा में मन्त्रय भोग्य मंगल्यो का स्थान बनता है,
उमका मन्त्रय मद्गलगाय धन जाना है, उमके सर्व पर्ये उमके मन्त्रे
मंगलकारी होते हैं तथा उमही पावित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकल्पनिर्मलशुद्धमनोरम-विजद्वेननभावसमु-
द्रवैः । सुपद्मिणामपमृत्तचर्नैर्नयैः, परमनन्दमयं हियजा-
म्यत्रं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
॥ इति पुष्पपूजा ॥ एव कर्कर पुष्प चतुर्थे ॥

इस पुष्पपूजा में मन काण्डों में सदायन कागुन होना है, चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा अर्थ-सम्बन्ध का योग होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहृदिनः
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा ॥ एव कर्कर उर मंगलवर्णो त्वेव ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मरूप धन का दाहक नि-
र्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जने परि-
शासन होकर कर्मसंवन छूटना जाना है तथा अंतःकारण में गगडे-
वादि का विनाश होकर आनन्द का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकनिर्मलसोभविकाशकं, जितगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरागविशुद्धममन्थितं, दधतु भाववि-
काशकृतेजनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजा-
महे स्यात् ॥ इति दीपपूजा ॥ मन्मथदीपक, अक्षरं ॥

इस दीपपूजा में मन्मथजनों के, दृश्य में निम्न सोपका विकाश
होगा है, उमके प्रभाव से मद्गुणों के उद्धारन में रति उत्पन्न
होती है तथा शरीर २ मद्गुणों के उद्धारन के द्वारा मन्मथ भावित
मन्मथ का पार बनता है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

रुक्मलमद्गुलकेलिनिकेतनं, परममद्गुलभावसयं
जितं । अक्षति भव्यजना इति दर्शयन्, दधतु नाथ
पुत्रोक्षतम्वम्भिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
यजामहे स्यात् ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अक्षत वाच्य
पदाय ॥

इस अक्षत पूजा में रुक्मल मंथनं मन्मथों का उद्धारन बनता है,
उमके मद्गुणमद्गुलकाय बन जाता है, उमके शरीर में उमके अक्षत
मंथनकारी होती है तथा उमके परिवर्ष की निमर्षक विभूत होती है ।

॥ अथ पुण्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विरुच्यनिर्मलशुद्धमनोरथै-विंशत्येवमनभावमनु-
 इवैः । सुपरिणामप्रवृत्तवर्तनैर्धैः, परमवचनमयं हि यज्ञा-
 म्पदं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुण्यं यजामहे स्वाहा
 ॥ इति पुण्यपूजा ॥ ॐ कुरुते ॥ १॥ अथाने ॥

इस पुण्यपूजा में अथ दशकमें मङ्गलाना प्राणुत इत्यादी है, शिव
 की स्तुतिना होकर शुभ परिणामों का उदय होना है तथा अथाने
 मन्त्र का घेन होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
 अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽस्तु सुहृषितः
 ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
 ॥ इति धूप पूजा ॥ ॐ कुरुते ॥ १॥ अथाने ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मों पर इधन का दाहक नि-
 र्मल सार भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जने परि-
 शासन होकर कर्मफल छूटना जाता है तथा अंतःकरण में रागद्वे-
 पादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

॥ अथ दीपपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकनिर्मलपोषविकाशकं, जितगृहे शुभदीप-
कदीपनं । सुगुणरागविशुद्धममन्त्रिनं, दधतु भाषवि-
काशगृहेर्जनाः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० दीपं यजा-
महे श्याहा ॥ इति दीपपूजा ॥ अथदीपक चतुस्रे ॥

इस दीपपूजा से भयजनो के हृदय में निम्न बोधका विकाश
होता है, उसके प्रभाव से मदगुणों के उद्धारन में रजि उत्पन्न
होती है तथा जने २ मदगुणों के उद्धारन के द्वारा मनुष्य शान्ति-
मय का पत्र बनता है ।

॥अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

रुक्लमदूलकैलिनियेतनं, परममदूलभाषमयं
जित । अयति भयजना इति द्शीयन्, दधतु नाथ
पुंगुभ्रतम्बम्भिकं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं
यजामहे श्याहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥ अथः वाक्य
चतुस्रे ॥

इस अक्षत पूजा से मनुष्य मंगुर्ण मंगुणों का स्थान बनता है,
उसका मडाव मद्दुलमय बन जाता है, उसके गर्व काटने उसके शिरो
मंगलकारी होते हैं तथा उसकी पवित्र धीनि सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विक्रान्निर्मलशुद्धमनोरमैर्विजह्वेननभावसमु-
द्रवैः । सुपद्मिणामप्रमृन्वन्वैभैः, परमनन्वमपं हि यजा-
म्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा
॥ इति पुष्पपूजा ॥ यह कर्कश पु० पटावे ॥

इस पुष्पपूजा में अनेक कारणों से मद्राजना जागृत होती है, चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा अर्थात् नन्व का बोन होना है ।

अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहंधनदाहनं, विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुगतोऽस्तु सुहृदिनः
॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥
॥ इति धूप पूजा ॥ यह कहलर उर अगमपत्नी खेवे ॥

इस धूप पूजा में आठ प्रकार के कर्मकर धूपन का दाहक नि-
र्मल संवर भाव उत्पन्न होता है अर्थात् कर्म पुद्गलों का जने परि-
शादन होकर कर्मचंचन छुटना जाता है तथा अंतःकरण में गमडं-
वादि का विनाश होकर आनंद का संचार होता है ।

मंत्र पञ्चपूजा ॥

। श्लोक ॥

एतन्मन्त्रविद्यया यद्गृह्यते इत्यन्वयार्थः विज्ञानरूपं यत्तन्मात्रं यत्तन्मन्त्रं
इति मन्त्रविद्यास्य यत्तन्मन्त्रविद्यया, एतन्मन्त्रविद्यया इति मन्त्रा
विद्यया ॥ ३० ॥ एतन्मन्त्रविद्यया यद्गृह्यते इत्यन्वयार्थः
इति पञ्चपूजा ॥ ३० ॥ ३० ॥

मन्त्रविद्यया यद्गृह्यते इत्यन्वयार्थः, ३० ॥

मन्त्रविद्यया यद्गृह्यते इत्यन्वयार्थः ॥ ३० ॥

मंत्र पञ्चपूजा ॥

। श्लोक ॥

सकलकर्ममद्वयनदाहन विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपहलमगयिवर्जितं, जिनपतेः पुत्रोऽन्तु सुहृदिनः
॥३१॥ ३१ ॥ एतन्मन्त्रविद्यया यद्गृह्यते इत्यन्वयार्थः ॥ ३१ ॥
॥ इति पञ्चपूजा ॥ ३१ ॥ ३१ ॥

सकलकर्ममद्वयनदाहन विमलसंवरभावसुधूपनं ।
अशुभपहलमगयिवर्जितं, जिनपतेः पुत्रोऽन्तु सुहृदिनः
शासनं ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ ३१ ॥ इत्यन्वयार्थः ॥ ३१ ॥
वादि का विनाश ॥ ३१ ॥ आनन्द का संचार होता है ।

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनपरपुन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकष्टगुण-
भानं देयवन्तं मनुष्यन्ति । प्रतिदियसमनन्तं मन्थमु-
पयन्ति, परमसहजस्यं मोक्षसौख्यं ध्रुपन्ति ॥ १ ॥

० ॥ परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे स्वाहा । चो-
० अथ शत्रु ॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

॥ अथ शत्रु पूजा ॥

॥ १७३ शंकराचार्यः, श्री १७३ श्लोकः ॥

शत्रो यथा जिनयनेः सुरशैलपुला, सिंहासनोप-
विनमनयनाचमाने । दध्यभ्रतः कुसुमचन्दनगन्ध-
धैः, गृह्यार्थेन नु विद्धानि सुषम्नपूजां ॥ १ ॥

इत्यु श्रावकस्य एव विधिनालंकारयन्त्रादिकं, पूजा
अर्थपूजां करोति सततं शय्यपाणिभक्त्यादतः । नोरा-
ग्य निरश्रुतस्य विजितारानेन्द्रिलोकापतेः, स्वर्गा-
स्य जनस्य निर्गृह्णितेः श्रेयस्रपाकाङ्क्षया ॥२॥ ॐ
० परमात्मने०, यत्रैव यजामहे स्वाहा ॥ १७३ यथा ॥

॥ इति अष्ट प्रकारि पूजा ॥

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपुद्गलसङ्गविषज्जिनं, सहजचेतनभावविना-
सकं । मरमभोजननद्यनिवेदनात्, परमनिर्गृतिभावम-
हं शृष्टे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे
श्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ नैवेद्य मिष्टाई पावान् यज्ञो ॥

इस नैवेद्यपूजा में मनुष्य का अन्तःकरण ब्रह्मज्ञान से परिपूर्ण होने के कारण स्वच्छ हृदय दर्शन के कारण यह पूजा है, उसमें मनुष्य निम्न जन्म आत्मा का मायाव दर्शन होता है तथा उसे भोजन के माया स्वरूप का ज्ञान हो जाता है ।

॥ अथ फलपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्मविपाकविनाशनं, मरमपककलवजरी-
कनं । विहितभांशकल्पय प्रभाः पूरा, कृष्ण मिष्टिका-
न्त्याग मशजनाः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजाम-
महं श्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ अथ मरमपक जीवस्य
द्वारा ॥ १ ॥

इस फलपूजा में कटुपिष्टक, लोखण्ड, अमर, अमर, कौ, मरमपक, कलव, वजरी, कन, विहितभांशकल्पय प्रभाः पूरा, कृष्ण मिष्टिका-
न्त्याग मशजनाः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजाम-
महं श्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ अथ मरमपक जीवस्य
द्वारा ॥ १ ॥

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|---------|--------------|---------------|
| ५८ | ० | निग्वागद्वाण | निग्वागणद्वाण |
| ६० | १० | दिशमिपं | द्वेशमिपं |
| ६१ | ४ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ७० | १५ | दिट्टि | दिट्ठि |
| ७२ | १ | भवम्मंति | भविम्मंति |
| ७५ | ४ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ७८ | ७ | गरित्ते | वरिभे |
| ८३ | ११ | जयणिञ्जं | जायणिञ्जं |
| ८६ | १८ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ८४ | १३ | अणुजाह | अणुजाणह |
| ८४ | १७ | जयणिञ्जं | जायणिञ्जं |
| ८६ | १० | दिट्टि | दिट्ठि |
| ९१ | ६ | जयणिञ्जं | जायणिञ्जं |
| ९१ | १६ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ९२ | १ | ऽहं | ऽहंत् |
| ९३ | १३ | अहया | अहया |
| ९४ | २ | “वनवनक” | “वशवनक” |
| ९५ | १६ | पानिच्छल | पायच्छल |
| १०० | १७ | महन्नागारेणं | महन्नागारेणं |

शुद्धाशुद्ध पत्र ॥

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|---------|--------------|--------------|
| ६ | १० | उममिणं | उममिणं |
| ७ | ७ | कृष्टिम | फुलिम |
| १० | ६ | भमलीण | भमलिण |
| १६ | १० | देशमिणं | राष्ट्रं |
| २७ | ४ | षदे | वंदे |
| ३० | १७ | दृपण | दृपण |
| ४० | १४ | सङ्ग्या | सङ्गया |
| ४० | ४ | जम्बु | जम्बु |
| ४० | १३ | श्रीपद् | श्रीपद् |
| ४७ | १ | वास | वास |
| ४८ | २१ | गणपति | गणपति |
| ४९ | १० | नाशर्ण | नाशर्ण |
| ५१ | १० | भवामंनि | भवामंनि |
| ५१ | १० | मंपद | मंपद |
| ५१ | १४ | निमित्तोपण म | निमित्तोपण म |
| ५४ | १७ | भवामंनि | भवामंनि |
| ५६ | १७ | मंपद | मंपद |

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अमृद्ध | मृद्ध |
|-------|---------|--------------|---------------|
| १६६ | ८ | निघ्राहकाय | निघ्राहकाय |
| १६७ | ११ | सम्परस्य | सम्परस्यं |
| १७० | २ | सोक्षोपायेनि | सोक्षोपाय इति |
| १७१ | १७ | सर्पिषसति | सर्पिषसित |
| १७१ | २० | अपर्पिषसति | अपर्पिषसित |
| १७६ | ३ | कथिन | कथित |

२२१से शालु—

अथ जगच्चिन्तामणि चैत्यवन्दन ॥

इन्द्राकारेण भद्रिम्भ नगवनचैत्यवन्दन क.० ॥ इच्छे ॥

जगच्चिन्तामणि जगनाह, जगगुरु, जगरकवण ।

जगर्षभश्च जगसन्धवाह, जगभावविद्यमन्त्रग ।

अट्टाश्वमेष्टविश्रुत्य, कम्मट्टविष्णारण ।

षट्वांसपि जिगया जगंतु ,



| पृष्ठ | पत्रिका | अनुच्छेद | शुद्ध |
|-------|---------|--------------|--------------|
| १०७ | ८ | योगसूत्रमि | योगिसूत्रमि |
| १०८ | ४ | दिसामोद्देशं | दिसामोद्देशं |
| १०८ | ८ | महत्तरागरेणं | महत्तरागरेणं |
| १०९ | २० | महत्तरागरेणं | महत्तरागरेणं |
| ११० | ८ | योगसूत्रमि | योगिसूत्रमि |
| १११ | २ | योगसूत्रमि | योगिसूत्रमि |
| ११५ | १ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| ११३ | १८ | देवायमाणा | देवायमाणा |
| ११८ | १३ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| ११८ | १४ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| ११९ | १ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२० | ३ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२० | ४ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२० | ५ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२१ | १ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२१ | २ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२२ | ३ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२० | ४ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |
| १२० | ५ | अज्ञानिद | अज्ञानिद |

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|---------|--------------|---------------|
| १६६ | ८ | निघाहकाय | निघाहकाय |
| १६७ | १४ | सम्परस्य | सम्परस्यं |
| १७० | २ | सोभ्रोपायेति | सोभ्रोपाय इति |
| १७१ | १० | सपर्यसति | सपर्यसति |
| १७१ | २० | अपर्यसति | अपर्यसति |
| १७६ | ३ | कथिन | कथित |

२५१वे पालु—

अथ जगच्चिन्तामणि चैत्यवन्दन ॥

अष्टावक्रं मेदिना नगवन्विभवंदन कं ॥ इच्छे ॥

जगच्चिन्तामणि जगन्नाथ, जगन्गुरु, जगत्कृष्ण ।

जगत्पथ जगत्सन्ध्या, जगत्सर्वविघ्नहर्त्रा ।

अष्टावक्रं मेदिना, कम्मट्टविष्णुमणि ।

अष्टावक्रं मेदिना जगत्पथ जगन्गुरु,



| पङ्क्तिः | अशुद्ध | शुद्ध |
|----------|--------------|---------------|
| ७ ८ | योमरामि | योमिरामि |
| ८ ४ | दिममोहेगं | दिमामोहेणं |
| ८ ८ | महत्तरागरेणं | महत्तरागारेणं |
| ९ २० | सहसागरेणं | सहसागारेणं |
| १० ८ | योमरामि | योसिरामि |
| ११ २ | योमरामि | योसिरामि |
| १४ १ | अहगिल | अणहिल |
| १५ १२ | देवामगार्सा | देमाथगार्सा |
| १६ १३ | अखंडीय | अखंडिप |
| १७ १४ | कुजररस | कुंजररस |
| १८ १ | आपाया | अपाया |
| १९ ३ | ऊस | ऊम |
| २० ४ | ऊममि० | ऊममि० |
| २१ २ | फरि | फिर |
| २४ ६ | उवाधवाय | उवाधवायाप |
| २५ ७ | सुय | सूय |
| २६ ६ | अवधप | अवन्धप |
| २७ ७ | प्राणायाम | प्राणायुः |
| २८ १० | पंचविंशत्यो | पञ्चविंशत्यु |

त्रिनानार्थ श्री त्रिनकीर्तिगुणि विगच्छिन—

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपको परमात्मिक पंचपरमेश्वि सम्स्कार रूप नवकार मंत्रका महत्व तथा इनका महान् चमत्कारिक प्रभाव जानना हो तो इसको पंगवा कर पढ़िये ।

इसमें उपासना विधि याने उम का जप या स्नान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वी गुणने की विधि, प्रस्ताव, भगसंख्या, नष्ट, उद्दिष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, अष्ट सिद्धियों का वर्णन और प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विषयों का वर्णन है । समस्त जन लाभ उठा सके इसलिये हिन्दी अनुवाद भी विस्तार पूर्वक किया गया है ।

गोपल आठ पंजी नाटके लगभग ३०० पृष्ठ हान पर मुख्य रूप ३॥ गवता है । किन्तु इसका विशेष प्रचार करने के लिए दाम नमस्कार करने रूप २) कर दिया गया है ।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मृष्टिया जैन प्रिंटिंग प्रेम

धीकाणेर (राजपुताना)

जैनानाथ श्री जिनकीर्तिश्री विगचिन—

श्री मंत्रराजगुणकल्पमहोदधि

याने

नवकारमंत्रकल्प.

यदि आपसो परमात्मलिक पंचपरमेष्ठि तस्कार कल्प नवकार मंत्रका महन्व तथा उनका महान् चमत्कारिक प्रभाव ज्ञानना हो तो उनको मंगवा कर पठिये ।

इसमें उपामना विधि याने उन का जप या ध्यान करने का समस्त प्रकार, आनुपूर्वा गुणने की विधि, प्रस्ताव, भाग्यंश्या, नष्ट, उद्विष्ट, नवकार मंत्र के १०८ अर्थ, सप्त सिद्धियों का वर्णन और प्राणायाम (योगमार्ग) आदि अनेक उपयोगी विद्वानों का वर्णन है । समस्त जैन लाभ उठा मके इमलिये हिन्दी अनुवाद भी गिन्ता प्रथक किया गया है ।

गोपल अष्ट पेशी साठके लगभग ३०० पृष्ठ हान पर मूल्य रु ३॥॥रुपया है । किंतु हमसा विशेष प्रचार करने के लिए दाम गराकर फलन रु. २) कर दिया गया है ।

मिलने का ठिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मेठिया जैन प्रिंटिंग प्रेम

रौकानेर (गजपुराना)

सर्वत्र जुष । कश्चा एह पुच्छंति सामीप, इंद्र कर्तुं जग-
 तारणो । पारग अम्हपरमेव । नायक टायक धम्मनिदि,
 कर्त्तव्य तसु अभिपेत्त ॥ १ ॥

(शाल ६ मी) सीधे कमल पर उदक भराने, पुष
 कर स्मरण आवै, ए शाल ॥ पूर्ण कलश सुनि उदकर्त्ता
 धारा, जिनघर धर्म नामें । आत्म निरमल भाव
 करंता, धर्में शुभ परिणामें । अच्युतादिक सुरपति
 मज्जन, लोकपाल लोकान्त । सामानिक इंद्राणां समुदा
 ह्य अभिपेक्ष करंत ॥ १ ॥ पृ० ॥ गाथा ॥ नच ईसान
 मुरिंदो, मर्क पभणेट करि ए सुपमाओ । तुल्य अंके
 महनाहो, ग्विजमिभं अत्त अप्पेह् ॥ १ ॥ मामकंदा
 पभणेट, माहमीय वत्तलंमि पह्लाहो । आणाह् धंभेण
 तिगत होउ कयन्थाओ ॥ २ ॥

इतना वरके न । स्तोत्रिय । मारा न इउ वत्तेश् इय

गा० नाचे गुत्ता गुत्ता ०१

(शाल) मोहम मुरपति वृषभ रूप करि, गहवण
 करे प्रभु अंके । करिष विलेखण पुष्क माल ठवि पर
 आभरण अंभेण ॥ मो० ॥ १ ॥ नच सुग्घर पह्
 जय जय ग्य करै, नाचे धर्मा आणंद । मोक्ष मारग
 माग्घ पति शम्पो, भांजिसु हिय भयकंद ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ कोत्तिपत्तंण मोवघ उयर्मा, पार्जंन वरनाह् ।

चाल ॥ आत्म साधन रसी देव कोटी हसी, उद्धसीने
 धसी क्षीरसागर दिशी । पउमद्रह् आदि दह् गंग पमु-
 हानई तीर्थजल अमल लेवा भणी ते गई ॥१॥ जाति
 अड कलश करि सहस्रअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासणे
 सुभतरा । उपकरण पुष्कचंगेरि पमुहासवे, आगमं
 भासिया तेम आणी ठवे ॥२॥ तीर्थ जल भरिप करी
 कलश करि देवता, गावना भावता धर्म उन्नतिरता ।
 निरिप नर अमरने हर्ष उपजावना, धन्य अह् सगनि
 सुचि भगति इम भावना ॥ ३ ॥ समक्किन घोज निज
 आत्म आरोपिना, कलश पाणीमिमं भक्तिजल सां-
 चता । मेरुसिहरो धर सर्व आठवा वही, जक्रउच्छंग
 जिन देखी मन गह गर्हा ॥ ४ ॥

(गाथा) हेतों देवा २ अगाई कालो अदिद्वपुष्यां,
 निश्यापनारगो । निलोपयधु, मिच्छत्तमोह विद्वमगो ।
 अगाई निशा विणाभगो, देवाहि देवो दिठव्यो २
 दिथ्यय कामेहि ॥ १ ॥

(शाल नेहज) एम पभगंनि यग भुवन जोडमरा,
 देव येमाणिया भलि भस्मापरा । केवि कल्पटिया येवि
 मिनाणुगा, येई परमगा यरणेण अहउच्छगा ॥५॥

(यानु) मग्ध अच्युप २ इन्द्र आदेश, कर्जोटी
 नर्य देवाण । ऐह कलश आदेश पामोण, अद्भुत रूप

॥ अथ अष्टप्रकारा पूजा लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

विमलश्रेयसभावनभावनं, जगति जंतुमहोदयका-
णं । तिनवरं पट्टमानजर्जीवनः, शुचिमतः स्वपशामि
श्रेष्ठुद्वये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनन्तानंतज्ञान-
राशये जन्म जगत्सु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय
लं यजामहे श्यामा ॥ १ ॥ इति जलपूजा ॥

इस जल पूजा में मंगल के फल देकर अष्टपुत्र देकर
मंगल, अन्त करण के मंगल के विहित करे, इत्यादि के
नित्य भावना के विरक्तता देना है

॥ अथ चन्दन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमोक्षनिमित्तविनाशनं, परमशीलसुभावगुण
जननं । विनयशुभ्रुंमण्डनदर्शनं, काजगत्प्रविशोद्यु-
षिणे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमा० अनन्ता० ज्ञान० जन्म
रा० निवा० श्रीमज्जिने० चन्दनं यजामहे श्यामा ॥
इति चन्दन पूजा ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

इस चन्दन पूजा में मंगल देकर मंगल देकर मंगल
देकर मंगल देकर मंगल देकर मंगल देकर मंगल देकर
मंगल देकर मंगल देकर मंगल देकर मंगल देकर मंगल देकर

सुरपति संव अमर श्रीप्रभुने, जननीं सुप्रसादे ॥सो०
 ॥ ३ ॥ आणी थाप एम पर्ये अत्त निसुतरिया आज.
 पुत्र तुम्हारो धर्णाय हमारो, तारण तरण जहाज ।
 ॥ सो० ॥ ४ ॥ मान जनन करि गलिज्यो एहनं, तुम्ह
 मृत अत्त आधार । सुरपति भगति महित नंदिमर,
 कर जिनभगति उदार ॥ सो० ॥ ५ ॥ निय निय कण
 गपा सवि निर्जर, कहिनां प्रभु गुणसार । दिक्षा केवल
 ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मकार ॥सो० ६ ॥ खरतर
 गच्छ जिन आणारंगी, राजमागर उवडकाय । ज्ञान
 धरम दीपचंद सुपाठक, सुगुरु नरो सुप्रसाय ॥सो० ७ ॥
 देवचंद जिन भगते गायां. जनम महोच्छव छद् । बोध
 प्रीज अंकुरो उल्लस्यो, संघ सकल आणंद ॥ सो० ८ ॥
 (हाल) हम पूजा भगते करो. आनम हित काज ।
 नजिय विभाव निज भावना, रमनां शिवराजा ॥ १ ॥
 काल अमंत ते जे हुआ, हांम्ये जेह जिणंद । संपई
 मीमंवर प्रभु, केवल नाग दिणंद ॥ २ ॥ ॥ जनम म-
 होच्छव इणि परै, श्रावक रुनिवेत । विरचै जिन प्रतिमा
 नणो, अनुमोदन खंत ॥ ३ ॥ ॥ देवचंद जिन पूजा.
 करसा भवपार । जिन पहिमा जिन मारग्या, कही
 मृत्र मजार ॥ इम० ॥ ४ ॥

॥ इति स्नात्रपत्ता विधि संपूर्णम् ॥

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनपरचृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकलदुष्ण-
निधानं दैत्यचन्द्रं स्तुयन्ति । प्रतिदिवसमनन्तं तस्यमु-
द्रामयन्ति, परममहाऊरुपं मोक्षसौख्यं अयन्ति ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे श्याहा । पर-
चृन्दं धारयन्ते ॥ इति अर्घ्यपूजा ॥

॥ अथ वस्त्रपूजा ॥

॥ अथ वस्त्रपूजा ॥

शक्तो यथा जिनपतेः सुरैर्गणपुत्रा, गिहासनांग
विमिश्रमनपनायसाने । दध्यर्घ्यैः कुसुमचन्दनगन्ध-
धूपैः, पूज्यार्घ्यं तु विदधाति सुवस्त्रपूजां ॥ १ ॥
तदसु श्रावकवर्ग एव विभिन्नालंकारयस्त्रादिषु, पूजा
सार्धकृतां करोति वस्त्रं चायस्यानिभसपादतः । नारा-
यण्य निरञ्जनस्य विजितारामेस्त्रिप्रोक्ष्यपतेः, स्वस्या-
न्वस्य जनस्य निवृत्तिकृते ःःगक्षपाकाङ्क्षया ॥२॥ ॐ
ह्रीं० परमात्मने० वस्त्रेण यजामहे श्याहा ॥ १११ ॥

॥ इति चाष्टप्रकार्यापूजा ॥

॥ अध नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपृष्ठलसङ्गविवर्जितं, महजचेतनभावविला-
सकं । मरुमभोजननव्यनिघेदनात्, परमनिर्घृतिभावम-
हं स्पृहे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० नैवेद्यं यजामहे
श्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥ नैवेद्य मिठाई पर्याय चदावे ॥

इस नैवेद्यनाम मन्त्राय का अर्थ अणु कर्मजमें रहित होने
का अर्थ है । अणु का अर्थ है कि समान गुण का है उसमें महज
चेतन भाव ही है । अणु का अर्थ है कि अणु ही है । अणु का अर्थ है
कि अणु ही है । अणु का अर्थ है कि अणु ही है ।

॥ अध फलपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककमधिपाकविनाशनं, गरुमपक्वफलवजरी-
कन । विष्टिभोजनकल्पस्य प्रभोः पूरः, कुरुत् सिद्धिफ-
लाय महाजना ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० फलं यजा-
महे श्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥ अथ मन्त्रो नीलाकल

इस मन्त्र का अर्थ है कि अणु कर्मजमें रहित होने का अर्थ है । अणु का अर्थ है कि समान गुण का है उसमें महज चेतन भाव ही है । अणु का अर्थ है कि अणु ही है । अणु का अर्थ है कि अणु ही है । अणु का अर्थ है कि अणु ही है ।

| शुद्ध | पद्धि | अशुद्ध | शुद्ध |
|-------|-------|--------------|--------------|
| ५६ | ० | निग्वाणद्वाण | निग्वाणद्वाण |
| ६० | १० | दिशमियं | दिशमियं |
| ६१ | ४ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ७० | १७ | दिट्ठि | दिट्ठि |
| ७० | १ | भयिमंति | भयिमंति |
| ७० | ४ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ७८ | ७ | गरिभे | गरिभे |
| ८३ | ११ | जाशणिअं | जाशणिअं |
| ८३ | १८ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ८४ | १३ | अणुजाह | अणुजाणह |
| ८४ | १० | जाशणिअं | जाशणिअं |
| ८६ | १० | दिट्ठि | दिट्ठि |
| ९१ | ६ | जाशणिअं | जाशणिअं |
| ९१ | १६ | गिरिहामि | गरिहामि |
| ९२ | १ | अहं | अहं |
| ९३ | १३ | अहंवा | अहंवा |
| ९४ | ० | "अनकलक" | "अरकलक" |
| ९४ | १६ | पापिण्ण | पापिण्ण |
| १०० | १७ | अहंवागारेणं | अहंवागारेणं |

गुन्दाशुद्ध पत्र ॥

| क्र.सं. | वर्ण | गुन्दाशुद्ध | पत्र |
|---------|------|-------------|----------|
| १ | २२ | उत्तमगुण | उत्तमगुण |
| २ | २ | दुर्लभ | दुर्लभ |
| ३ | १ | सामान्य | सामान्य |
| ४ | ३६ | कृत्रिम | कृत्रिम |
| ५ | १ | वृक्ष | वृक्ष |
| ६ | १३ | पत्र | पत्र |
| ७ | ११ | सुगुण | सुगुण |
| ८ | १ | सर्व | सर्व |
| ९ | ११ | सामान्य | सामान्य |
| १० | २ | वृक्ष | वृक्ष |
| ११ | २२ | सर्व | सर्व |
| १२ | २२ | सर्व | सर्व |
| १३ | २२ | सर्व | सर्व |
| १४ | २२ | सर्व | सर्व |
| १५ | २२ | सर्व | सर्व |
| १६ | २२ | सर्व | सर्व |
| १७ | २२ | सर्व | सर्व |
| १८ | २२ | सर्व | सर्व |
| १९ | २२ | सर्व | सर्व |
| २० | २२ | सर्व | सर्व |

| पृष्ठ | पङ्क्ति | अनुद | शुद्ध |
|-------|---------|-----------------|-----------------|
| ७६ | = | निष्प्राणद्वारा | निष्प्राणद्वारा |
| ६७ | १० | दिवसिपं | दिवसिपं |
| ६१ | १ | गिरिहामि | गिरिहामि |
| ७० | १७ | दिति | दिति |
| ७२ | १ | अथमंति | अविस्मंति |
| ७७ | ४ | गिरिहामि | गिरिहामि |
| ७८ | ७ | परिते | परिते |
| ८३ | ११ | जवणिअं | जावणि |
| ८६ | १८ | गिरिहामि | गिरिहामि |
| ८९ | १३ | अणुजाह | अणुजाह |
| ८४ | १३ | जवणिअं | जावणि |
| ८४ | १७ | दिति | दिति |
| ८६ | १२ | जवणिअं | जावणि |
| ९१ | ६ | गिरिहामि | गिरिहामि |
| ९१ | १६ | जं | जं |
| ९२ | १ | अइया | अइया |
| ९३ | १३ | "अनकनक" | "अनकनक" |
| ९४ | २ | पाच्छिन | पाच्छिन |
| ९४ | १६ | महमागारेणं | महमागारेणं |
| १०७ | १७ | | |

श्री मंत्रगणतन्त्रस्य प्रथमोऽङ्कः

५३

नवकारध्वजस्तवः,

यदि चाप्यहो महात्मा १।५५ तं इत्येवमिह ज्ञेयं तत्तु
कालः कालः कालः इत्येव इत्येव नवकारध्वजस्तवः १।५५
इत्येव मंत्रः कथं वर्तते ।

इसमें 'नवकार' शब्दों के अर्थ का उल्लेख करने के
सम्बन्ध प्रत्यय, आनुष्ठाने गुणों का (१) अर्थ, अर्थ, अर्थ, अर्थ
(२), नवकार का के १।५५ अर्थ, अर्थ (३) का (४)
प्रमाण न (५) अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ
सम्बन्ध न नान उद्यमों, इत्येव इत्येव अर्थ अर्थ का
वर्तक शब्दों का है ।

मंत्रों में से नवकारों के सम्बन्ध ३०० पृष्ठ होने पर
५३ अर्थ का है । किन्तु इसका विशेष प्रमाण करने के लिये
नवकार ध्वजस्तवः १।५५ का दिया गया है ।

मिलने का टिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मृत्तिका जैन प्रिन्टिंग प्रेस,

वीरवारण (गान्धारी)

श्री मंत्रगजगुणकल्पमहोदधि

१०१

नवकारसंज्ञकत्व.

यदि आद्यहो वारणादी, इति त्रिपदीनिवृत्तिरिति सिद्धम् -
 मंत्राणां मन्त्राणां कथा इत्यादि मन्त्रानां नवकारसंज्ञकत्वात् । अत्र
 इत्येते मन्त्राः कथं परिचितः ।

इसमें आद्यहो वारणादी, इति त्रिपदीनिवृत्तिरिति सिद्धम् -
 मन्त्राणां मन्त्राणां कथा इत्यादि मन्त्रानां नवकारसंज्ञकत्वात् । अत्र
 इत्येते मन्त्राः कथं परिचितः ।

मंत्राणां मन्त्राणां कथा इत्यादि मन्त्रानां नवकारसंज्ञकत्वात् । अत्र
 इत्येते मन्त्राः कथं परिचितः ।

मिलने का टिकाना—

पं. भगवानदास जैन

मैथिली जैन प्रिंटिंग प्रेस

पीकानेर (गंगरु)

